

यो तेनोच्यते सा देवता। इति न्यायः। अनुविधानम्। एतत् पुस्तकम् आवपेत्।

आवाप। उद्वाप। मीमांसानम् नाम निरुक्त। अहरभिमानी देवः मित्रः।
रात्र्यभिमानी वरुणः। अर्यमा तयोरन्तरालाभिमानी आदित्यः।

मित्र, वरुण - अर्यमन् = दिन, रात्रि, आदित्य। [illegible] अनुगृह्णन्तु।

त्वष्टा रूपाणि विकरोति। (ऋग्. १ मण्डल. १६२ सूक्त मन्त्र ५ में [illegible] के
ऋत्विज्। रूपस्य उत्पादयितारम् रूपाणाम् [illegible] आहुः॥ [illegible]
प्राप्यस्य फलस्य योजयन्तु। चरैवेति। चरैवेति। ऋषयः अतीन्द्रिय द्रष्टारः,
सम्यक् कृतम् इति परिवृण्वन्तु। सायणाचार्य का भाषासौष्ठव। साधुशब्द
प्रयोग। आपरितोषाद् विदुषाम् न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्। पक्वम् अपक्वम्
ईषत् पक्वम् अतिपक्वम्। यज्ञ में मांस प्रचार आने से यज्ञ दुष्ट हो गये और
आगे जा हिंसामय यज्ञ का लोप हो गया। बुद्ध अवतार।

षड्विंशं पादबन्धनम्। षड्विंशः पादबन्धनम् गोभिलगृह्यसूत्र। चावाले
बछड़ा। [illegible]। [illegible]। पुंगवः गोगवी।

अलग नामीयसूक्त अद्भुत है, आनन्दप्रद है। गो- मेघ की उपमा.
गो रश्मि। गो मेघ। गो - वाणी। गो - भूमि। गो - गौ। गो - बैल.
भूमि। रश्मि। मेघ। पयस्विनी। माता। धेनु। अदिति - [illegible]।

आदित्य } छन्दः। साम।
नाभि
अग्नि.
आदित्य. विज्ञान। वायु - विद्युत् विज्ञान। भूमिविज्ञान

यज्ञ — Abhi Science। Analysis। (Synthesis) हमारी आर्य संस्कृति
समग्र शरीर को लेकर है॥
[illegible] कोई [illegible] का दर्शन करता है। ब्रह्मा। [illegible] यज्ञपात्र
नेता। गुरु। [illegible] राजा।

प्रयाणकाले [illegible] शौनकोऽपि [illegible]। [illegible] शैलूषः। सर्वानुक्रमणी पद्धति।
एक [illegible] देखे॥

[illegible]। मनोवाणी। काल। छन्दः। राग। भूमि। अन्तरिक्ष वायु। द्यु। अग्नि वायु। आदित्य।
वृक्षों को [illegible]। पशुओं को [illegible] लोकों को [illegible]। [illegible] है।
आत्माओं में (मा. पिता। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible] जीवों के [illegible]
है। आयुर्वेद अद्भुत है॥ [illegible] है [illegible] होता है।
[illegible] बहुत अच्छा लिया है। खूब गाना चाहिए [illegible] भी
फूलती है॥ स्थूल [illegible] देखते जावें। [illegible] आवेगी। यही
ज्ञान की सोपान परम्परा है। जो [illegible] बाह्य जो [illegible]। जो [illegible]
अपने [illegible]। जो यज्ञ में जो [illegible] देवताओं में वही [illegible]
कार्य एक मंजिल में जो हो रहा है। वही दूसरी मंजिल पर वही तीसरी मंजिल पर

(१) तल पर
(२) तल पर
(३) तल पर

यज्ञ। दधि-आहुति वेदस्थ- पृथिवी वेदीय- दधि- जल दर्शन। पुष्कल।

वर्षा। वायुयान पुष्कल। गर्जनादान। बादल में मोचन।

उत्पादन। संस्थापन। जलादान- जलस्थापन। जल दर्शन।

पूरक। उत्पादक। रेचक

आगम - आवाहन। प्रवचन

वीर्यदान। स्थापन। पुरुष मोचन

आहुतिदान। दधिपुष्पस्थापन। मेघद्वारा मोचन

भोजनदान उदरे स्थापन। लोहित। मलादि

चक्र ———

अग्नि - विद्युत - आदित्य। एकम् एव ज्योतिः। त्रिधा ———

ऋतुभाव।

ग्रीष्म। वर्षा। शीत

प्रसव। प्रकोप। उपशम

होता। अध्वर्यु। उद्गाता।

आवाहक। स्थापक। विनियोजक मोचक

जायते। अस्ति। विपरिणमते। वर्धते। अपक्षीयते। विनश्यति

उत्पत्ति। स्थिति - संहार

सृष्टि - स्थिति - प्रलय

चक्र

काल।	यौवन —	वृद्धत्व.
ब्रह्मा।	विष्णु —	महेश.
ऋग्वेद	यजुर्वेद —	सामवेद.
देव —	गुण —	कर्म
	[illegible] —	[illegible]
[illegible] —	वर्षा —	हेमन्त
ग्रीष्म —		
~~[illegible]~~		
जलादान —	जलस्थापन —	जलमोचन
वायुदान —	वायुस्थापन —	वायुमोचन
धनदान —	धनस्थापन —	धनमोचन धनदान
भूमि-बीजदान —	बीजस्थापन —	बीजमोचन
		पुष्पदान
गो, माती, तृणः भोजनदान —	उदरस्थापन —	
दधिमधुजलादान —	जलस्थापन मेघ	मेघद्वारा मोचन
ज्ञानसंग्रह —	ज्ञानस्थापन।	ज्ञानदान

नाटक लिखते हुए चलो यहाँ से

शक्ति —	इच्छा —	कृति
[illegible] —	[illegible] —	[illegible]

[illegible] — शोधन.
[illegible] - शोधन.
समन्वय.
[illegible]

मूल

वेद को पद, रट आनन्द अगाधा ज्ञान हुआ अब आगे इच्छा और कर्म.

ज्ञान - जन्या भवेद् इच्छा इच्छा जन्या भवेद् कृति :

प्रेयश्चिकीर्षा. श्रवण [illegible] - दर्शनार्थ - दर्शनोत्तर-प्रतीक्षा.
पश्चिम को - पश्चिम चलेगा - पश्चिम को पहुँचे ॥
नट -

प्रिट वदेय च:

अस्ति - भाति - प्रियम्
सत् - चित् - आनन्द.

ज्ञान —	इच्छा	क्रिया
अविद्या —	काम —	कर्म —
नाम	रूप —	कर्म
द्रव्य —	गुण —	कर्म.
पुर्वात्मा —	मध्यात्मा —	उत्तमात्मा
ऋग् —	यजु: —	साम.
अ —	उ —	म

वायु । शब्द - स्पर्श - ध्वनि - कर्म ॥

ओम् भू: भुव: - स्व: = ४ वेदवादिन:

नामन् आख्यात उपसर्ग - निपात वाक्यमतानुवादिन:
याज्ञिका:

मन्त्रा: कल्पा:, ब्राह्मणा लौकिकी /
ऋग् यजु: साम - व्यावहारिकी वैयाकरणा:।

[illegible] वाग्भवानाम [illegible] चतुर्थी व्यावहारिकी - ऐतिहासिका:।

पश्यन्ती, सूर्यवेद्य - प्रोक्त - अव्यक्त न आत्मवादिन:।

परा } पश्यन्ती, मध्यमा - वैखरी -
मूलाधारोदित } हृदयगामिनी [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

मनसा, [illegible] मनीषिण: (अथर्व मनस्वा:)

वेद से प्रेरणा मिलती है, स्फूर्ति मिलती है। विधि, चोदना, नोदना, प्रवर्तना
हुक्म, कमाँड, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ॥

वेद के प्रेरणा के प्रकार : (उदाहरण के यज्ञ [illegible] में ॥

यस्य वाक्यम् स ऋषि:। या स्तूयते सा देवता।
[illegible] विधानम्।

मण्डल १, सूक्त १६.५ इन्द्र - मरुत, (प्राण - जीवात्मा
इन्द्र

प्रातिपदिकम् इन्द्र ...... । वशीकरण । वशीकरण । वशीकरोति ।

इन्द्र | आत्मा । विद्युत, देवता, परमेश्वर, राजा, सूर्य ॥ अभ्यर्हितम् पूर्वम्
अर्थे अग्रे प्राधान्येन ः । पंजाब में एक जंगल भूम- ताल भी आयाप्रत
निर्दिष्टम् / इदम् । अवमबोधः । तात्पर्यम् ।। । लक्षण प्रमाणाभ्याम्
वस्तुसिद्धिः ॥ जीवित रहने में इन वाक्यांशों में विदानाम् उत्पादित्वात् ।
ऋग्वेद - भाष्यभूमिका भाष्य में पृष्ठ ३

आगनते	वायु ते ।	आदित्य ते
ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद

न खलु केवल निघुत्वादि लक्षणं मायोदम् प्रवर्तितम् । शङ्कोति । प्रकाश
जनदेवः । शब्दः । श्रमः । प्रमुत इव ॥ ईश्वरः ॥ सार्वजनीना / लोकप्रसि
नीलेनः । पतनम् । सार्वजनिक नगर । पूर्व । प्रथम । उभत । पक्ष ॥
स्व - प्रकाशात । गर्वित लोगों की कोई सेवा करनी चाहिए ॥
स्थाणुर्वा पुरुषो वा । दर्भः । कुशम् । दूरोदितम् । अचेतनानाम्
चेतन - वत् संबोधनं श्रूयते । यावज्जीवमहम् मौनी । मम अपि जिह्वा
नास्ति ।

निरुक्त निगमन प्रवित करते (ऋग्वेदभाष्य (१०३७) पृष्ठ)

// निरुक्तम्
महाभिधान
निरुक्तनिगम
निरुक्तनाम (कोई गमकार)
निरपेक्ष: / द्वि/ सापेक्षः ॥ अप्रसिद्ध मरुतादयः

मरुत । प्राणवायु । जीव का प्राण : (अवर्गक)
मरुतम् इन्द्र ताड़ित्वम् इन्द्रस्य मरुतत्वाहत्वम्

भूमि - जन्मभूमि | उत्पत्ति |
प्रजा - प्रजा | क्षा |
वर्ग | साति |
जन | धृत्य धातु |
जनपद | अर्थ (अनदमास) |
(जन - जन संस्कृती) | जदा, जनोद, जनोति |
विद् - धातु - ज्ञानार्थम | दश भावे |
सिद् धातु - जनन | धातु, दश, |
वध धातु | द्वि - पार्श्वजय - उदकवान द्वीप: ॥ |
पृत | रयि |
पृतना | रा - दान |
इन्दु | वाज |
मरुत | वाजी |
अर्क | वाजिनीवती |
वर्क | पञ्जनीशा |
मित्र | पर्वेदशः ॥ |
नरब | |
अश्विनौ | |

{ उत्पत्ति / प्रवृत्ति }

हिंसादि खवर्ग (द्वन्द्व प्रयोग) वनुष्य प्रथा वशीकृ लिवि
आपापति
धायी आपायी वद्रौ
ओ ध्यायी वद्रौ (२८८) धातु
ध्या - आ - धेय
ध्यायी, आपायी इ द्रौ
पञ्जमान ।
यजते ।
देव
मीढुष
मधु
मधव
मृळयाति सुखयाति ।
देवा: द्योतनशीला: ॥

अध्यात्म }
अर्थ }
कर्म-विनियोग

{ मृत्यु - जन्म
{ विकीर्ण - मूल
राज - बीबी

सायणभाष्य वैदिक तत्वों और तांत्रिक भाष्यों का कोश है व शोध है। आध्यात्मिक
स्रोत है॥ कर्मा आम्नाय। कर्म-जन्म / कर्मयोग। सुनिश्चित
निःश्रेयसकर॥ आह्वान। द्रव्य। निर्द्वन्द्व। न निर्णय। तत्ववित्।
तत्ववेत्ता। उन्मेष - निमेष। आँख खोलना - आँख मीचना॥ कामवेत्।
कामनाट॥ मुक्ति। आदित्यवत्॥ ब्रह्मनिष्ठ। आत्मनिष्ठ।
तत्वदर्शन। स्थित-बुद्धि। न लेप लेते बुधः।
कोई आकर ग्रन्थ पढ़लें अनुभवों के नीचे, ऊपर, टेक मिल जाती है, टेक
शरण, आलम्ब, आश्रय, आजन॥
वाचस्पति मिश्र देवी भागवत से उद्धरण देते हैं। }
गति-शैली। जन-रुचि। शैली गम्भीर। थका-मांदा। ...
सेना की उमंग और उत्साह के साथ-साथ जाति की उमंगें बढ़ती हैं
सेना की उमंग के कम होजाने पर जाति का जोश भी ठंडा पड़ने लगता है।
युवाओं को अपनी जाति के युवकों युवतियों को ... दूध देरहे हैं।
अंग्रेजी राज्य मिट रहा है? किसी ने यह प्रचार भी किया है कि दूध की मात्रा
हमारे यहाँ युवकों को बहुत थोड़ी मिलती है। दूध- कम मात्रा में मिलने लगा है
और उस दूध की कोटि भी अच्छी नहीं, स्वाद नहीं। बढ़ावा।
क्रीड़ा-प्रतियोगिता। क्रिकेट। मैदा। कड़वा। हिन्दोस्तान।
हमारे अन्दर प्रोटीन की मात्रा कितनी है? प्रोटीन वृद्धि के साधन।
जनता मेम्बर
विनय- नमस्कार। बड़ों का लिहाज। जनता-वन्दन। जातीय वन्दना। छोटी ...
अभिवादन। बड़ों की मर्यादा का पालन। आत्म-की बोल। स्त्रियों का ... शिष्टाचार
स्त्रियों के प्रति शिष्टाचार। स्त्रियों का ... के साथ। अल्प-भाषण। गम्भीरता।
बहुवाद। शुरुआत। गोलन्दाज। ... । बल्लेबाजी - गेंदबाजी। फिजौलता।
"देर आयद दुरुस्त आयद" 'गुदड़ी का लाल'। गाल-मिट्टी। पनपना, पनपाना।
आयोजन। ढोल-धाम का। भीमकाय (Huge) स्वागत-सत्कार। ठाठ-बाट।
तमाशा-बीन। लीलादर्शक। सिलेक्ट Skill. ... लगाना। खिलाड़ी। हुलिया।
नाक-नक्शा। ... , ...
यस्य वाक्यं स ऋषिः॥ यस्य वाक्यं स ऋषिः। या तेनोच्यते सा देवता।
ऋषिः देवता छन्दः विनियोग॥ ऋषि- गुरु- महागुरु का स्मरण
हिन्दू जाति की अद्भुत गुरु-पूजा की भावना.

पुरानी आर्ष मुनियों की भाषा मितार्थक अर्थपूर्ण सरल सप्रयोजन।

२ अगात: इडाया हविर्निरूप्य मनुष्या जघ्नुरिदं तंगो चकार। स इन्दु एव

यदि देवयानस्य। अश्वो वा लभ्यते इत्याशान कार्या।

वात: किम् तात: किम् आयातम्। लुप्तोपमा। लुप्त: दृष्टान्त:।

हविप्रदान - वरप्रदान। वेधा: अलंकरणम्। यौवनाजिन परिधानाि:

परिधानम्। पत्नी यजमानौ। नमस् नमस्कारेण हविषा वा।

दृष्टा तथ: वेद में मन्त्र रचना में तथ्य धातु का प्रयोग।

कारु की तरह तक्षण॥ श्रमेण तपस्या से॥ यथावत्

मनन-ध्यान॥ चिन्तन प्रकरण में ही धर्म की, अर्थ की, वेदतत्वार्थ की

करनी चाहिए॥ चित्र:, पूज्य: आश्चर्यभूतो वा। ऊति। अव धातु

के अर्थ हैं। अव रक्षण गति कान्ति प्रीति तृप्ति अवगम प्रवेश श्रवण स्वाम्यर्थ

याचन क्रियेच्छा दीप्त्यवाप्त्यालिङ्गन हिंसा दान भाग वृद्धिषु।

ब्रते - आरात् दूरे - समीपे च वर्तते। अत्र समीप वचनम्।

तस्मात् मन्त्रा: कर्मानुष्ठाने उपकुर्वन्ति। अर्थ-प्रत्यायनम्। अनुक्रम

पाठ:॥ पाठक्रम: उत्क्रम:। व्युत्क्रम:। अपपाठ:। प्रैषमन्त्र। विधि-

आशी- प्रवर्तक मन्त्र:। " नहि सोपानत्के पादे पुनरप्युपानहम् प्रतिमुञ्चति

प्रतिमुञ्च - पहनना। " आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च " इत्यत्र

यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज:। लोक सेवा की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए।

प्रामाणिकम् विश्वास्यम्। स्तव्यम् स्तोतव्यम्। श्रवणम् श्रावणम्। पठनम्

पाठनम्। वारयति, निषेधति; अपाकरोति, दूरीकरोति, वर्जयति, अपनुदति

क्षिपति,

वासते - विनयपूर्वक आसन पर बैठना। होता - अध्वर्यु - उद्गाता - ब्रह्मा -

चत्वार: ऋत्विज:॥ प्रमाद - आलस्य - असूया, अशक्ति॥ अग्निर्देवता

यस्या: सा। सा ऋग् आग्नेयी। बाल्य, पूर्व, कुमार, बालक, यौवन, कौमार

काठक मन्त्रस्य प्रतीकम् इदम्। "अपशवो वा अन्ये गो अश्वेभ्य:" (तै. सं. ५, २,

४) असत् शब्द: न शून्यपर: अपितु अप्रशस्तवस्तुपर:॥ एतेन मन्त्रा:

ऋत भाषिणी वाक्। शोभते। स्म प्रतनम् पर एवं वेद॥ शिक्षते वर्धते।

वत्स गुडूचीं भक्षय पिब।

अपनी भाषा, मनन, मुहावरे, उपकरण, लोकोक्तियाँ, कविता, जीवित भाषा मन्त्र, गाथा

उपाख्यान यज्ञ, साम, कथा-वार्ता: गौ, दुग्ध, घृत, मधु, यव, खजूर,

अकालभवम् आकालिकम्॥ कैमुतिक न्यायेन॥ किं न सिद्धिनाम् कामो

हानि:॥

जरद्गव: कम्बल पादुकाभ्यां द्वारिस्थितो गायति मद्रकाणि।

तं ब्राह्मणी पृच्छति पुत्रकामा: राजन् रुमायां लशुनस्य कोऽर्घ:॥

अखण्ड वा खण्ड बोध या वाणी व्यवहार चलावेगा।

वाणी बैठी पीढ़ेगी वाणी बैठ जावेगा॥ उनकी बोल चाल ...

मनन, लोरियाँ, शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि संसारमायापरिवर्जितोऽसि

विश्व मदालसा के पुत्रों को वाक्य (मार्कण्डेय पुराण में? पं. पाण्डे जी से पूछना॥ मान - ज्ञान - इतिकर्तव्यता. किम्, केन, कथम्

नहि अदृष्टं आदेशेन दृष्टेन दीक्ष्यतामाचरणेषु ... "यत्परो हि शब्द: स शब्दार्थ:" शाब्दीभावना की आवश्यकता है॥ पुनरेव भावना आदि ...

संगीत जन्मकी शिक्षा - (मनुष्य - पशु - वृक्ष) प्रभावित हैं।

शायद आयुओं में (अनुमान) का यह लाभ भी होता है॥

व्याकरण रचना में मुख्य तत्त्व॥

अंकुरित" समाज की उपयोगिता की वृद्धि के लिए, कहानी, श्लोक, गाथा, कविता, दोहे, चुटकुले - कथा - खेल, अन्य और पहेली॥ इनमें " पद्यपाठ रचना। मूल आदि पुण्य संग्रह॥ चतुर्थी का पुण्य-गुण संग्रह अलग ही है॥

"वाचा विरूप नित्यया" ऋग्वेद ८.७५.६॥

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयंभुवा॥

वर्णों के प्रकार भेद॥ (१) अनुष्ठानात्मक (२) स्तुतिरूप (३) त्वा-अहम् (४) आत्मनिवेदनता॥ (५) प्रेमरूप (६) विवाहरूप (७) परिदेवनरूप (८) प्रश्नरूप (९) उपदेश.

विनियोगविवादपात्रगाथा: स्तुति प्रेम प्रवह्लिका। प्रश्नो व्याकरणं तर्क: पूर्ववृत्तानुकीर्तनम्॥

अवस्थापरिणामो परिवदवाक्यार्था: स्वस्त्ययनादय:। प्रत्येषु च दृश्यन्ते व्याख्यान श्रुतिचोदिता॥

लक्षणेऽपि पदार्थानाम् नानात्वं यान्ति पृथक्त्वश:। लक्षणेन तु सिद्धानामन्तं यान्ति विपश्चित:॥

हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधि:। परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण कल्पना॥

पतन। पतति। पातित्यम्। अग्ने वैश्वानरादि [illegible] सायुज्यं गच्छति॥

अपनी आत्मा को वैश्वानर अग्नि के घेरे के बाहर आदित्य तक पहुँचना —

वेदके अनुसार पिता ——— अग्निहोत्र - [illegible]. ——— वायु. विद्युत -

आपवित्र(...) ॥ "ब्रह्मचर्य - ब्राह्मण फलम्"

सकल देवतानाम् धर्मस्य परब्रह्मतत्त्वस्य च प्रतिपादक: वेद:॥

प्रतिकारार्थ कलह हेतु: लौकिकी वार्ता.

नानुध्यायाद् बहूञ्छब्दान् वाचो विग्लापनं हि तत्॥ सुतरां अनुशंसति इति न्यायात्॥ भुक्तपिपासार्दित: क्षुधा, तृषा, क्षुधा, तृषा (पंजाबी तरह)

इष्टानि भुञ्जीत। इष्टानि शिक्षेत। इष्टं प्रत्युपेत। कर्म निर्वाहक।

विदेशी संस्कृत के विद्वान्

कोलब्रुक
कीलहॉर्न
बोलिंक
ग्रिफिथ
ह्विटमैन
मैक्समूलर
पाल डायसन,
मैकडव
व्याख्याती विलियम व्हिटनी के
ग्रिफिथ
रुकार्ट
आफ्रेक्ट
पोलिन
एलेण्ड
मर्फी
रूथ
अमेरिका के संस्कृत
हिटनेविस्क
वेबर।

भारत का पुस्तक:

मनुविधान (निर्णयसागर)

तैत्तिरीयसंहिता
तैत्तिरीय ब्राह्मणम्
तैत्तिरीय उपनिषद्

✓ . पातञ्जल महाभाष्य (कीलहॉर्न
पिङ्गलसूत्र (कलकत्ता)
बृहद्देवता (मैकडॉनल
ऋग्वेदकर्णान् आपो मीमांसा।
शाबरभाष्यम् (आनन्दाश्रम)

ननु आम्नायतो चोर्त विशेषतो व्युत्पत्ति संभवति।
" ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदो ऽध्येयो ज्ञेयश्चेति"
चतुर्दश- विद्या- स्थान- कुशलः।
॥ तदधीते - तद्वेद ॥ छिन्नशाखं शुष्कं वृक्षमूलं स्थाणुरित्युच्यते)
प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते। एतं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।
धर्म + ब्रह्म = वेदः धर्मस्य ज्ञानम् प्रथमम्। ब्रह्मणो ज्ञानम् फलम्॥
यज्ञस्तुते - तद्विद्यमिति इति न्यायात् ॥
" यदेव विद्यया करोति श्रद्धयोपनिषदा तदेव वीर्यवत्तरं भवति।" (छान्दो.उ. १.१.१०)
(तं विद्याकर्मणी समन्वारभेते पूर्वप्रज्ञा च। बृहदा. ४.४.२॥
(तैत्तिरीय आरण्यक। (१०.६३)
धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति धर्मेण पापमपनुदति
धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद् धर्मं परमं वदन्ति।"
वेद धर्म का सम्बन्ध। प्रतिपाद्य- प्रतिपादकभावः।
वेद x ज्ञान — जन्य जनक भावः
निर्वाह + वेद उपकार्य उपकारक भावः
आथर्वणिकाः आमनन्ति।

न उभयम्

स्थानं निमित्तं वक्ता च श्रोता श्रोतृ प्रयोजनम्। सम्बन्धश्चापि धर्मं च उपोद्घातः।
तत्रत्यः संजयः साक्षी: तज्ज्ञानं साक्षिवैदुषी। यतो नैव निपातः स्यात् अन्तः संसार सागरे।
श्रेयोधर्मार्थिभिः केन कर्मणा यज्ञ प्रयातम् निर्मितो भवतादिति
विना यस्य न जायते स्थितौ कथं स धर्म प्रवणो भविष्यति।

पुनर्दाहः समुत्पन्नः पुनर्जातश्च वेपथुः। बाधते च पुनर्हिक्का श्वासश्च पुनरागतः॥

यानि कानि च मूलानि येन केन च पेषयेत्। यस्मै कस्मै च दातव्यं यद्वा तद्वा भविष्यति॥

वैद्य वैद्य नमस्तुभ्यं क्षपिताशेषमानव। त्वयि विन्यस्तभारोऽयम् कृतान्तः सुखमेधते॥

// नागेश भट्ट के बाद के भारत के महापण्डित //

एतावानेव पुरुषो यावानिन्द्रियगोचरः॥

मधुकोऽम्बष्ठी कामुक मत्स्यामृतं यथा। एकत्वेऽपि पृथग्भावस्तथा क्षेत्रात्मनोरिव।
जैसे माता बच्चे को गौ, भैंस का दूध को हलका और सुपच बनाने के लिए उस गाढ़े उष्ण दूध में कुछ पानी डाल देती है ऐसे ही मैं आप के लिए अपने विचारों को कभी कभी हलका करूंगा।

- गायत्री.
- योगेश्वर
- ओ३म् प्रथा
- पञ्चक्लेशा पुरुषः
- ज्ञान सूक्त.
- पृथिवी सूक्त.
- पुरुष सूक्त.
- शिवसंकल्प सूक्त
- तेजोऽसि तेजो मयि
- अग्ने व्रतपते . . .
- अध्यात्म सूक्त.
- ब्रह्मचर्य सूक्त.
- अस्य वामीय
- सांख्य दर्शन
- संस्कृत शिक्षण
- न्याय का स्वरूप
- जल की महिमा
- स्वामी दयानन्द जी
- स्वामी विरजानन्द जी
- आर्य समाज के उत्तम प्रचारक
- आर्य समाज का इतिहास.
- धर्म अर्थ काम मोक्ष.
- (ब्राह्मण, वैश्य, वैशेषिकदर्शन, ...
- हिन्दू सोच की बुनियाद.
- संस्कृत का धातु पाठ.
- संस्कृत की वर्तमान दशा.
- हमारी वैज्ञानिक दृष्टि.

28. हमारी भारतीय वैज्ञानिक दृष्टि.
29. भारत की नवीन जागृति.
30. नवीन साम्राज्य का अनुशीलन
31. हिन्दू - अहिन्दू समस्या.
32. हमारे मुख्य मुख्य गुण दोष.
33. भारत के पिछले 2500 वर्षों की बड़ी समस्याएँ
34. चरित्रनिर्माण.
35. आर्ष ग्रन्थों की रक्षा.
36. प्रमेयप्रधान शैली न कि वाद जल्प- वितण्डा शैली.
37. वाल्मीकि रामायण
38. हमारे व्याख्यान-उपाख्यान.
39. अन्न की समस्या.
40. सामाजिक दृष्टि.
41. स्त्री जाति का दीर्घ अपमान
42. भारत में एकत्व और नानात्व की प्रवृत्तियाँ
43. मानवता.
44. देहात दर्शन.
45. पञ्च महायज्ञ.
46. गुरुकुल प्रणाली का सर्वाङ्ग विवेचन
47. नीतियाँ — दादा भाई, श्री दयानन्द जी, रामकृष्ण परमहंस, अरविन्द, स्वामी श्रद्धानन्द

- महात्मा हंसराज
- ला. लाजपतराय
- नारायण स्वामी.
- पंडित गुरुदत्त (आनन्दबोध)
- पंडित जन (आर्यसमाज)
- रामकृष्ण मिशन का इतिहास.
- आर्य समाज का इतिहास.
- तिलक
- गोखले.
- ला. देवराज.
- स्वामी दर्शनानन्द
- ~~स्वामी सत्यानन्द~~
- स्वामी सर्वदानन्द
- आर्य समाज के आन्दोलन और सत्याग्रह.
- आर्य समाज का हिन्दी कार्य.

48. प्रवृत्तिमार्ग की प्रामाणिकता
49. हिन्दी में भारतीय संस्कृति के तत्त्व.
50. व्यष्टि- समष्टि..
51. जितनी अन्तर्मुखता उतनी बहिर्मुखता.
52. संसार में बहुत अन्तर है.
53. जो भी कहा है जो भी सुना है मात्रा भेद है, ज्ञान भेद है अवस्था भेद है।
54.

पञ्चविंशति तत्त्वज्ञो यत्र तत्राश्रमे रतः। जटी मुण्डी शिखी वापि मुच्यते नात्र संशयः॥

धारणार्थो धर्मित्येष धातुः शब्दैः प्रकीर्तितः। दुर्गतिप्रपतत्प्राणिधारणात् धर्म उच्यते॥

अभक्ष्य परिहारस्तु संसर्गश्चाप्यनिन्दितैः। स्वधर्मे च व्यवस्थानं शौचमेतत् प्रकीर्तितम्॥

अद्भुतं शिष्यं ब्रूते मैनं पुत्रं प्रबोधय। प्रबुद्धे परमानन्दे न त्वं नाहं न तज्जगत्।

मयि तिष्ठत्यगारे पुरुषः पञ्चविंशकः। तत्त्ववन्तं परित्यज्य स कथं मोक्षमिच्छति।

योऽसौ सर्वेश्वरो देवः सर्वव्यापी जगद्गुरुः। देहीति पदमुच्चार्य हा मयात्मा लघूकृतः।

देहे मोहाश्रये भग्ने युक्तः स परमात्मनि। कुम्भाकाश इवाकाशे लभते चैकरूपताम्।

एवं आत्मचिन्तनात् मात्रा सर्वेन्द्रिया विभुः भवतिन्धु प्लवो दृष्टो यदात्मा धीनुवर्तिनम्॥

येन शुक्लीकृता हंसाः शुकाश्च हरितीकृताः। मयूराश्चित्रिता येन स ते (नो) वृत्तिं विधास्यति

न ह्याप्तवादान्नभसो निपतन्ति महासुराः। युक्तिमद्वचनं ग्राह्यम् मयान्यैश्च भवद्विधैः।

// घरमें मूलभूत द्रव्य-वस्तुएँ जुटाई जाती थीं - क्रय या जीविका पालन विभाग करते थे जबकि रोजगार और आपस में लेन-देन कर लिया करें ॥

तथा साक्षात्प्रभावस्य समस्त्वम् एव सम्मतम्। छायायाः कार्ष्ण्यमित्येवं पुराणेषु गुणश्रुतेः।

दूरासन्नप्रदीपादि महदल्पा चलाचला। देहानुवर्तिनी छाया न वस्तुत्वाद्विना भवेत्॥

तमः खलु चलन्नीलं परापरविभागवत्। प्रसिद्धद्रव्यवैधर्म्यान्नवभ्यो भेत्तुमर्हति॥

{ सत्ता हि द्रव्यमात्राऽपि प्रत्यक्षत्वं न बाध्यते। संहितः सा तस्या हि न रूपाच्छादनक्षमा।
ततः परं पुनर्वस्तु धर्मो ... निरपेक्षया। बुद्ध्यावसीयते सापि प्रत्यक्षत्वेन सम्मता॥

श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यो मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः। मत्वा च सततं ध्येयः एते दर्शनहेतवः।

{ द्रव्य-गुण-कर्म- वैशेषिक.
द्रव्यशब्द, गुणशब्द. क्रियाशब्द। वैयाकरण.
द्रव्य- अनेक गुण-औषध } वैद्यक. } प्रक्रियाकरण वाक्यार्थ सांख्यीय, तद्धर्म, तत्स्वरूप॥ वर्गीकरण.

सामान्य- विशेष। उत्सर्गापवाद। आवाप-उद्वाप। अन्वय-व्यतिरेक। गुण-दोष। लाभालाभ।
धर्माधर्म। भावाभाव। विधि-निषेध। व्यष्टि-समष्टि। द्रव्य-जाति (आकृति) अन्तः बाह्य।
स्थूल-सूक्ष्म। नियम-सूत्र-उदाहरण। दृष्टान्त दार्ष्टान्तिक। उपमान-उपमेय। दूर-समीप
शुक्ल-कृष्ण। मृदु-अमृदु। उत्कर्षापकर्ष। तारतम्य। अधम मध्यमोत्तम। सत्त्वः रजस्तमः
शारीर-मानस। आध्यात्मिक, आधिदैविक। आधिभौतिक। अध्यात्म। अधिदैव। अधियज्ञ।
धर्म-वृक्ष। पुष्प-फल। प्रवृत्ति-निवृत्ति। आरोह-अवरोह। आदि-अन्त। आदि-मध्य-अन्त।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय। जायते-अस्ति-विपरिणमते-वर्धते अपक्षीयते विनश्यति। देव-असुर।
दैवी सम्पत्- आसुरी सम्पद्। षड्भाव॥ स्वस्थ आतुर। निद्रा-जागरण। जागरण, स्वप्न, सुषुप्ति।
रात्रि अहः। ऋतु। अश्व-रथ। आभ्यन्तर-स्वस्थ। कार्यकारण॥

यथात्मा मलिनोऽस्वच्छो विकारी स्यात् स्वभावतः। न हि तस्य भवेन्मुक्तिर्जन्मान्तरशतैरपि।

आत्मानञ्चेद् विजानीयादयमस्मीति पूरुषः। किमिच्छन् कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत्।

गुणकर्म स्वभाव। अग्नि - वायु - आदित्य। वात - पित्त - कफ। विधि - परिसंख्या -
समाधि - सुषुप्ति - मूर्छा - मोक्ष॥

इक्षु-क्षीर-गुडादीनाम् माधुर्यस्यान्तरं महत्। तथापि न तदाख्यातुम् सरस्वत्याऽपि शक्यते
कर्ण-शष्कुली। कर्णपुट। करपुट। पत्रपुट। पीलुपाक। पिठरपाक॥

संस्कृतपाठशालाओं में प्रथम आठ वर्षों का पाठ्यक्रम।

(१) मातृभाषा।
(२) गणित
(३) पहाड़े
(४) पाणिनीयाष्टक सूत्र।
(५) पदच्छेद - अर्थ, उदाहरण
(६) उदाहरणसिद्धि।
(७) मध्य कौमुदी।
(८) अमरकोश सचित्र। सपरिश्रम
(९) आयुर्वेद - सूत्र।
(१०) उच्चारण प्रकरण
(११) आयुर्वेद हितोपदेश।
(१२) इतिहास भूगोल।
(१३) प्रकृति - निरीक्षण
(१४) पशु, पक्षी, कीट - पतङ्ग
(१५) कृषि विमर्श
(१६) वैशेषिक
(१७) नीतिमूल टीका
(१८) हितोपदेश पञ्चतन्त्र
(१९) आख्यान उपाख्यान
(२०) उपदेशों की वैज्ञानिक दृष्टि
(२१) संस्कृत व्याकरण
(२२) महापुरुषों के जीवनचरित्र
(२३) पञ्च महायज्ञ।
(२४) मुख्य-मुख्य - वेद ब्राह्मण, शाखा उपनिषद् वेदाङ्ग दर्शनादि के नाम-रूप
(२५) ऋषियों मुनियों
(२६) पारस्पर शास्त्रार्थ
(२७) दूध।
(२८) व्यायाम
(२९) खेल
(३०) गोपालन
(३१) कुटीर निर्माण
(३२) मूल ग्रन्थों का सिखाना।
(३३) साइकिल चलाना
(३३) तैरना।
(३४) वृक्ष पर चढ़ना।
(३५) रोगी सेवा।
(३६) घुड़सवारी।
(३७) लोकनीति।
(३८) दही जमाना।
(३९) जो पढ़ना जो पढ़ाना भी।
(४०)

अनिर्दिष्टार्था: प्रत्यया: स्वार्थे भवन्ति। आख्यात, अवमूर्ति, टीका, टिप्पणी, भाष्य,
विवरण। उद्घयति। स्फुरति। द्योतयति। स्पष्टयति। विवृणोति। द्योतयति।

वचन् वैविध्यते। बालवश। अज्ञानवश। मोहवश। क्रोधवश। दयावश।
आविर्भाव - तिरोभाव। प्रादुर्भाव। प्रकृति: नियामिका। बालवत्। उन्मत्तवत्
जडवत्। "गलांजलिर्दत्त:)। अथवा प्रयोगोऽयं नेह प्रतन्यते।
संधि ~~विग्रह~~ विभाग - दक्षिणविभागयो: प्रयागदजनक। "आज्ञाक् भवदिदम्"
पण्डित शैली। प्रवचन। निगम। आगम। उभयत: पाशा रज्जु:।।
अधिक्रिया कार्त्स्न्य॥ "पाण्डित्य का वातावरण (वायुमण्डल)
नामो नाशानाशचिन्ता। को हि स्वस्याभाभावाय यतेत। निष्क्रमो -
निष्कमा। नूनो, मेह। निष्कार निष्कार - लेकार। निराकार - निरंकार
अनिष्टेन व्याप्नोति इष्टमनीप्सन्। नानिष्टार्थो शास्त्रप्रवृत्ति:। प्रकृति
प्रकृतिवद् अनुकरणं भवति। दुर्घटि इति शब्दानुकरणम् (हमउगाउम) प्रकार:
अनुक्रम अनुप्रयोग: ॥ उदात्त[1], उदात्ततर[2], अनुदात्त[3] अनुदात्ततर[4] (सन्नतर), स्वरित[5], स्वरितोदात्त,
(6) एकश्रुति। गुरुवत् गुरुपुत्रेऽपि वर्तितव्यम्॥

भूरिभारभराक्रान्तः स्कन्धः किन्तु बाधति। न तथा बाधते स्कन्धो यथा बाधति बाधते।
उष्णेन बाध्यते शीतम् शीतेनोष्णं प्रबाध्यते। रजता वह नश्यते मन्त्र बाधा।
स्थान - करण - प्रयत्नाभ्यां वर्णा जायन्ते
आभ्यन्तरप्रयत्न. अनुप्रदान बाह्यप्रयत्न {श्वासानुप्रदान / नादानुप्रदान}

स्थान
करण - (आभ्यन्तरप्रयत्न
प्रयत्न } बाह्यप्रयत्न / अनुप्रदान {श्वासानुप्रदान / नादानुप्रदान} } बाह्यप्रयत्न } विवार- संवार- घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित.

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप् (बृ), बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप्, जगती
२४ २८ ३२ ३६ ४० ४४ ४८

ब्राह्मण राजन्य वैश्य | उपयुज्यते।
आर्षेय, छन्द: देवता, ब्राह्मण॥
चतुर्भि: प्रकारैर्विधा उपयुक्ता भवति।
वसन्ते ब्राह्मणोऽग्निमादधीत। ग्रीष्मे राजन्य: आदधीत। शरदि वैश्य: आदधीत
वसन्ते ब्राह्मणमुपनयेत्। ग्रीष्मे राजन्यम् शरदि वैश्यम्। सर्वकालमेके।
। शतपथ ब्राह्मण।

कालिदास के मालविकाग्निमित्र में ब्राह्मण और नीतिज्ञ - मालविका के विवाह वर्णन में
अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अभिषेक विधि में
"विक्रमोर्वशीयम् में पुत्रदान का वर्णन में ?
~~[illegible]~~
पुराण न्याय मीमांसा धर्मशास्त्राङ्ग मिश्रिता:। वेदा: स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश।

इतिहासपुराणाभ्याम् वेदं समुपबृंहयेत्। बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति।
इतिहास, नासिकेतादयुपाख्यानानि धर्म-ब्रह्मावबोधकानि।
सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चेति पुराणं पञ्चलक्षणम्।
सन्ध्यावन्दनविधिः।
विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि।
असूयकायानृजवेऽयताय न मा ब्रूया वीर्यवती तथा स्याम्।
य आतृणत्त्यवितथेन कर्णावदुःखं कुर्वन्नमृतं संप्रयच्छन्।
तं मन्येत पितरं मातरं च तस्मै न द्रुह्येत् कतमच्चनाह॥
अध्यापिता ये गुरुं नाद्रियन्ते विप्रा वाचा मनसा कर्मणा वा।
यथैव ते न गुरोर्भोजनीयास्तथैव तान्न भुनक्ति श्रुतं तत्।
यमेव विद्याः शुचिमप्रमत्तं मेधाविनम् ब्रह्मचर्योपपन्नम्।
यस्ते न द्रुह्येत् कतमच्चनाह तस्मै मा ब्रूया निधिपाय ब्रह्मन्॥

भोजनीयाः
अथवा - रक्षणीयाः पालनीयाः। सामान्यविनियोगः ब्रह्मयज्ञ-जपादौ।
सिद्धवृत्त् सौविष्टकृती।
विश्वामित्रपुत्रः मधुच्छन्दः।
युगान्तेऽन्तर्हितान् वेदान् सेतिहासान् महर्षयः। लेभिरे तपसा पूर्वम् अनुज्ञाताः स्वयंभुवा।
इति स्मृतेः॥
अत्र मध्यच्छन्दसाम्ना ऋक्तां बह्वृचाः जगुः। अत्र मध्यच्छन्दसाम्ना ऋक्तां वै यथाक्रमम्।
यज्ञस्य पुरोहितम्। देवम्। होतारम् ऋत्विजम्। रत्नधातमम्।
रत्नानां अतिशयेन धातारम्। अग्निः अग्रणीः। न क्नोपयति न स्नेहयति स्नेहयति।

- अयन से अ अङ्गू अनक्ति, जो हमारा कामना करते है ग इति - दह - से - ग नी - इच्छ करके नि	अ ग नि	अग्निः।

पुरः एनं दधति इति पुरोहितः।
प्रेषणा-अवेषणानुज्ञा त्रिविधा ज्ञात प्रवर्तना। अथः च्छेद्योर्ध्वस्य ऊर्ध्व... जनक से जन्म क्रमात्।
शालीषु तण्डुला, तिलेषु तैलम्, गविपयः, धान्ये तण्डुलाः॥ कुण्डे बदरम्। घटे घृतम्।
अन्य पदार्थ प्रधानो बहुव्रीहिः। अयं घृतघटः अयं तैलघटः।
महर्त्ताः संक्षेपाः यदेत एतत् प्रयोजनम् अस्त्वयि अंशो यथा विचायेत।
अल्पवर्णाः मात्रायामं विधयतता। न चक्षुष्मान् प्रपद्येत मासो...
संस्कारहीनो ह्यध्ये गौतमिशिष्य भुधिष्व। तमपश्यत्यारे भ्रान्ति विशिष्टानिकेतनम्॥

फल प्राप्तौ सत्याम् क्रिया समाप्तिः अपवर्गः। } अपोद्धार - विश्लेषण।
पुनरुक्तता, अविस्पष्टार्थता, कष्टशब्दता। } अभिधानम् पुनः स्वाभाविकम्

denotation अभिधान अभिधा }
Connotation. लक्षणा }

वृक्षः प्रचलन् सहावयवैः प्रचलति।

काशिनाथ वासुदेव अभ्यंकर (१८८० ——

} महाभाष्यप्रस्तावना खण्ड
} मैत्रेय परिभाषावृत्ति
} A Dictionary of Sanskrit grammar
} परिभाषा संग्रह.

प्रभुदयाल अग्निहोत्री (पातञ्जल महाभाष्यकालीन भारत विहार राष्ट्रभाषा परिषद् ?)

अर्थाभिधानम् पुनः स्वाभाविकम्। पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः

अपेक्षमसमर्थकं भवति। कृदभिहितो भावो द्रव्यवद् भवति। अव्ययकृतः भावे

भवन्ति। इक्श्तिपौ धातुनिर्देशे। वर्णात् कारः। रादिफः

अन्यत्र विद्यमानस्तु यो वर्णः श्रूयतेऽधिकः। आगम्यमानतुल्यत्वात् स आगम इति

मतः।

निरुक्त्य यद्गिरं प्राहा अविभर्षैव तल्लक्षणम्। संभावयन्ति शिलो तमाचार्येण प्रचक्षते

मनु- निरुक्त- चरक, सुश्रुत, उपनिषद्- अथर्ववेद॥ आचार्य शब्द की व्युत्पत्ति।

प्रवृत्ति।

पद-क्रमविभागज्ञो वर्णक्रमविचक्षणः। स्वरमात्रा विशेषज्ञो गच्छेदाचार्य सम्पदम्॥

प्राघुणः (पाहुना। प्रोटिन)

आगमोऽनुपघातेन विकारश्चोपमर्दनात्। आदेशास्तु प्रसङ्गेन लोपः सर्वापकर्षणात्।

परिभोगात् स्त्रैणम् तत्परायणम्, आदरणो कामचार:॥ गुणवचनानां शब्दानाम्

आश्रयतो लिङ्गवचनानि भवन्ति।

पुराने आचार्यों की वचन शैली सरल और अच्छी है।

पुरातनानाम् आचार्याणाम् सरला रीतिः वर्णने, शब्दप्रयोगे च।

शुक्लम् वासः। शुक्लशाटी (शुक्लः कम्बलः॥

ऋक्प्रातिशाख्य - उवटभाष्य। म. मंगलदेव द्वारा सम्पादित।

भुवनेश लौकिक न्यायसाहस्री (पंडित मधुसूदनशर्मविलिखित वेंकटेश्वर प्रेस)

ग्रन्थि कौटिल्य (गाँठ। ओ.जैन,)

ग्रन्थ सन्दर्भे (कालिदास ग्रथ्नाति सन्दर्भम्

ग्रन्थ बध्नाति, सन्दर्भ, गुम्फति ग्रथ्नाति (सन्दर्भ, बध्नाति न.

उदात्तः, उदात्ततः अनुदात्तः॥
 ष उदात्तः

चितीसंज्ञाने चेतति
 चिती (चुरा.) चेतयते

मन्थ (भ्वा) मन्थति
मन्थ. (मथ्नाति.
मथि हिंसासंक्लेशनयोः
मथे विलोडने.

६२. मन्थ (भ्वा. मन्थति
१५२२ मन्थ. (क्र्यादि. मथ्नाति
४४, मथि - हिंसा. संक्लेशनयोः मन्थति
५७८ मथे - मथति

सुखदुःखे च: उत्पत्त्यर्थः सुखार्थः।

निष्कृतः संस्कृतः (निष्कार - तिरस्कार) ऋग्वेद (मं. १. २. ६) निष्कृत

१) गत्यर्थेष्वेव कर्मेत्यक्रिया, अतः न दर्शनं ... (माधवीयधातुवृत्तिः)

षिध गत्याम् (भ्वा)
षिधु - संराद्धौ (दि.)
षिधू - शास्त्रे माङ्गल्ये च (भ्वा)
षिधू - संराद्धौ . दि

प्लुङ् आप्लवने, उत्प्लुत्य गमनम्॥

प्रु - गतौ प्रवण कूदना
प्लु गतौ बहना, कूदना.

कर्म - भाव - अधिकरणेषु क्तः।
स्वादकः (ताच्छील्ये णिनि) (निन्दहिंसक्लिश-खाद ------)
(३. २. १४६)

तृन् आदि प्रत्यय (ताच्छील्य, तद्धर्म, तत्साधुकारिषु)
३.२.१३४ आक्वेस्तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिषु॥

// अनेक धातुएँ रेफ युक्त, और रेफ हीन दो रूपों में अर्थ रखते हैं

नद - नर्द } गर्जन - शब्द ... निर्गत शब्द. | मन्थ | मथ | जिन्वति जि अभिभवे
गद - गर्द }

// इतने पद, इन धातुओं का प्रयोग क्यों नहीं करते ——
(स्वच्छीया वसुमती)

नर्द
गर्द.

इस अध्याय में तत्सम हैं
के {नकार} लगाने
{रेफ} ग्रहण करते हैं॥

इरावान् ... इरावती ... । इरा ... इराम् ...॥
अन्तिमात्, अन्तिमम् - अन्तिकेन, अन्तिके।

इदि परमैश्वर्ये । इन्द्रः (आका) राजा, विभव, देव+राज ......
पाणिनीय व्याकरण (५.२. ९३) इन्द्रः आत्मा. महत् प्राण
पाणिनि सूत्रों में दीर्घ तत्त्व॥

उन की आपसमें नहीं पटती । कड़वी । जेष्ठा का रहना । पूजनी । पूजेना

विद्यामिश्रं वृजिनं भीरदानुम् . विद्याम - इषम् ऊनाम, बलम्, बलशीलदा

ननान्दुः अपत्यम् नानान्दुः

मुलावात हो, अभिमर्यादा रो रखते हो, हमें भी आश्वासन और उत्साहित

१. महतादि रते रहते हैं उनमें रूप-पूर्ण अनुकूल बाध बाध होता रहता है।
२. भी प्रकृति का रूप और आविर्भाव भी पता रहता है
३. ~~भी विशेष अवसर भोगते~~

चक्षोर्यथात् प्रभुरूप्सुखमानम्

प्रभावे नाथवादः। प्राक्काल - व्यवच्छित्ति ——

प्रमाणरूपले और प्रत्यक्ष को नहीं मानते हैं

प्रकृति जड़।

अत एव हि विद्वत्सु मुच्यमानेषु सन्ततम् । ब्रह्माण्ड जीवलोकानाम् अनन्तत्वाद् अशून्यता ॥

पौरुषादो वीप्सा - द्विः वचनम् ।
नित्य - वीप्सा

सर्वाङ्गीणः
कल्याणानि अङ्गानि अस्याः इति अङ्गना।

पञ्चाङ्गुल एरण्डः।

धातुपाठमें सबसे अधिक धातु गत्यर्थक हैं क्या इससे यह अनुमान निकालना चाहिए कि जगत् में गति और गति के प्रकार अनुरूप रहते हैं कि अर्थ

उच्यते । अ-वि-नि- पूर्वः।। वियोग, नियोग, विनियोग

गम्, वच्, या, हृ, नी, वह, कृ, भू, युज्, इत्, दिश्, श्रु, गृ, धृ उपसर्गवशात्

वचनम्।

उपाय, विकल्प, आश्रय, सांख्य, ॥ उपनिषद्, गीता, भागवत (वा वेदान्त)

लोक- वृद्धि- सिद्ध । कर्मसु- अधिकृतो अधिकार - सिद्ध ।

अधिकारी, अनिर्वाय(विषय) प्रयोजन, सम्बन्ध । अनुबन्ध - चतुष्टय

चन्दन, अगुरु । नाम - रूप - कर्म (द्रव्य - गुण - कर्म) ज्ञान, निष्ठा, कर्मनि

ब्रह्मनिष्ठ, कर्मनिष्ठ, आत्मनिष्ठ, (वे मैदान में बैठे)

द्वाविमावथ पन्थानौ यत्र वेदाः प्रतिष्ठिताः। प्रवृत्तिलक्षणो धर्मो निवृत्तिश्च विभाषितः

महा. शान्ति २४१। ६ श्लोक

क्रियापद :
संन्यासपद :
धर्मपद :
वेदपद :

विचार्य निश्चित्य मुक्तम् (कृतार्थ) ब्राह्मण वेदार्थ -
भगवता। नामशब्दो ऽनर्थको निपात:।
संन्यासन्ति। एज् कम्पने। एजते।

ईश्, वस आच्छादने, गम्, हन्, भुज्, गृध्, कृ, जीव

अश्, लिप्। आङ् - अभि-गम्, हन्!

आप् ३। प्रोतनाद् देवा: चक्षुरादीनि इन्द्रियाणि।

यानि अन्यानि स्वयन्ति, गच्छन्ति इति मातरिश्वा। ज्वलनं, दहनं,

प्रकाश, अभिवर्षण। न मत्याप्याम् जानिता जीता॥

प्रशान यन। जनानन्द। ज्ञान के पण्डित

रा - वर्ग - धर्मग्रन्थ (वेद उपनिषद्

उपनिषद् - वेद के अन्त हैं

आने को आगे वेद की इस उपनिषद् के हैं वे कहते हैं

मुख्य रूप से हिन्दू धर्म के पढ़ने वालों की बातें हैं

लिये

उपनिषद् - आत्मा ब्राह्मणों के अर्थ हैं

मनुष्य शरीर में मन है वाग

आत्मा - जिसका एक ही

ध्यान पाते हैं एक रूप से वह प्रत्युत्पन्न करते हैं

मनुष्य की बहुत प्रश्न करता है

प्रेरणा - प्रयोजना - अनुष्ठा
छोटे बड़े, बालबालों से

(प्रवर्तनी सब में जाता है)

1) गाँव में रहने वाली सामान्य जनता
2) इस ग्राम वाली जनता से बंधे शिल्पी
3) व्यापारी, वैश्य वर्ग और
4) बड़े शहरों में बड़े व्यापारी
5) शहरों के शिल्पी.
6) अछूत लोग
7) आदिम जातियाँ
8) ब्राह्मण लोग
9) विद्वान् ब्राह्मण
10) अर्धशिक्षित ब्राह्मण
11) विदेश में लोग धार्मिक लोग
12) संन्यासी
13) विधवा
14) अनाथ
15) लंगड़े अपाहिज, लूले लंगड़े अंधे
16) मुसलमान
17) मुल्ला फकीर आदि
18) राज्याधिकारी, शासक
19) अंग्रेज़ गौरवर्ण
20) सेना
21) सेना से बंधे व्यापारी,
शिल्पी, ठेकेदार आदि
22) मजदूर
23) बड़े धनी

(24) पुरानी रियासत
(25) छोटे बड़े लोगों जनता
(26) सरकारी नौकर
(27) सेठ - महाजन
(28) आधुनिक बड़े धनी उद्योगपति
(29) राजनीतिक नेता
(30) शिक्षा
(31) पतित लोग
(32) [illegible] जगत
(33) सिनेमा
(34) जेल के कैदी
(35) ईसाई
(36) पारसियों का संगठन
(37) विदेशी सिपाही
(38) पर्यटक
(39) विदेश देशवासियों के आंदोलन
(40) Press
(41) [illegible]
(42) देशविदेश के व्यापारी, कम्पनियाँ आदि
(44) [illegible] जनता

(४५) मलेरिया

(४६) हिन्दू - अहिन्दू समस्या

(४७) नवीन सभ्यता

(४८) दो महायुद्ध

(४९) विज्ञान की उन्नति

(५०) ब्रिटिश शासन,

(५१) बुद्ध एवं आयुर्वेद

(५२) प्रोहिबिशन समस्या का प्रभाव

(५३) ईसाई

(५४) ईसाइयों की कूटें

(५५) अंग्रेजों की नीति

(५६) आधुनिक व्यापार

(५७) डाक्टर

(५८) धर्म परिवर्तन द्वारा बने ईसाई, मुसलमान

(५९) ईसाइयों का, मुसलमानों का आयुर्वेद प्रभाव

(६०)

६१. नर्सिंग

६२. आलस्य प्रमाद

६३. बाल विवाह आदि कुरीतियाँ

६४. भीरुता

६५. अल्पायु

६६. अश्रद्धा

६७. धनासक्ति, महालाभ

६८. अनुत्साह

६९. पुरुषार्थ की बहुत कमी

७०. चिरकालीन दासता का प्रभाव

७१. अपने को ऊँचे उठाने का दृढ़ संकल्प

७२. राष्ट्रीय महा प्राचीनता

७३. राष्ट्रीय प्रताप, डाक्टर

इस तरह के तत्वों को सामने रखकर पिछले दो सौ वर्षों का सिंहावलोकन या विहङ्गमावलोकन किया जा सकता है ॥

याव्रत्: प्राणिनामग्निः काय इत्यभिधीयते। यस्तं चिकित्सेत् सीदन्तम् स वै कायचिकित्सकः

शान्तेऽग्नौ म्रियते, युक्ते चिरं जीवत्यनामयः।

रोगी स्याद् विकृते मूलम् अग्निस्तस्मान्निरुच्यते ॥

शुक्रस्रुतिकरं किञ्चित् किञ्चित् शुक्रविवर्धनम्।

स्रुतिवृद्धिकरं किञ्चित् त्रिविधं वृष्यमुच्यते।

स्रुतिकरम् स्त्र्यादि। वृद्धिकरं क्षीरादि। स्रुतिवृद्धिकरं माषादि

एवमन्यत्। आधि-व्याधि-परिमोक्षणम् - स्वस्थस्य रक्षणम्।

जरा - रुजा - मृत्यु ॥

शरीर - पञ्चमहाभूत

स्थावर - जङ्गम

आग्नेय - सौम्य

जरायुज, अण्डज, उद्भिज्ज, संस्वेदज.

सौम्यम् शुक्रम् आर्तवम् आग्नेयम्।

रोग | आगन्तुक, शारीर, मानस, स्वाभाविक

शारीर | अन्नपानमूलक

मानस | क्रोध, शोक, भय, हर्ष विषाद, ईर्ष्या अभ्यसूया, दैन्य, मात्सर्य, काम लोभ

स्वाभाविक / क्षुधा पिपासा, जरा - मृत्यु - निद्रा

राग द्वेष / इष्टलाभ अनिष्टलाभ ।

योग / अयोग, अतियोग, मिथ्यायोग

कर्म, अकर्म, अन्यथा कर्म ।

आहार । (भक्ष्य, भोज्य) लेह्य, पेय लेह्य चूष्य

आहार / मूल है । बल, वर्ण, ओजस् का

स्थावर जङ्गम / औषधि / द्रव्य

जड़ रस

पञ्चभूत

पञ्चभूत / जड़ रस / औषधि - स्थावर - जङ्गम ।

स्थावर - { वनस्पतय: - अपुष्पा: फलवन्त:
वृक्षा: - पुष्प फलवन्त:
वीरुध: - प्रतानवत्य: गुल्मिन्य:
औषधय: - फल-पाकनिष्ठा: फलपाकान्ता: ॥ }
जङ्गम, जरायुज, अण्डज, उद्भिज्ज, स्वेदज:

द्रव्य - गुण - कर्म ।

द्रव्य - स्थावर-जङ्गम - जड़ रस, (पञ्चभूतों का मिश्रण

स्थावर द्रव्यों का लेना (त्वक्, पत्र, पुष्प, फल, मूल, कन्द, निर्यास, स्वरस ।

जङ्गमों से (चर्म, नख, रोम, रुधिर, स्वेद ....

पार्थिव औषधियाँ । सोना, रजत, मणि, मुक्ता, मनःशिला (मैनसिल) मृत्, कपाल (ठिकरी)

कालकृत औषध । प्रवातस्थान, अवातस्थान, आतप, छाया, ज्योत्स्ना, अन्धकार, शीत, उष्ण, वर्षा, अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु - अयन ।

दोषों का संचय, प्रकोप, प्रशमन, प्रतीकार

पूरक कुम्भक, रेचक ॥

{ स्थावर, जङ्गम, पार्थिव, कालकृत } वस्तु आहार | प्रकोप अथवा प्रशमन

पुरुष / व्याधि / औषध / क्रियाकाल

औषध / द्रव्य रस, गुण, वीर्य, विपाक

१२० अध्याय / पञ्चस्थान / सूत्रस्थान, निदानस्थान, शारीरस्थान, चिकित्सितस्थान, कल्पस्थान —

समिधा: खदिर - पलाश, देवदारु बिल्व
उदुम्बर, न्यग्रोध, अश्वत्थ, मधूक

दधि - मधु - घृत

यथा खरश्चन्दन भारवाही भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य।
एवं हि शास्त्राणि बहून्यधीत्य चार्थेषु मूढाः खरवद् वहन्ति।

द्रव्य - रस - गुण - वीर्य - विपाक - दोष, धातु - मल - आशय
मर्म - सिरा स्नायु - सन्धि - अस्थि - गर्भावक्रान्ति रोग (शुक्र-
शोणित)

साध्य, याप्य, असाध्य।

विमल-विपुल बुद्धि [illegible] बुद्धि [illegible]। [illegible]

(१५) (२६) अर्थ मूल से [illegible]

अथ इति

[illegible]

। जैसे, मुलतानी पंजाबी भाषाओं में संस्कृत शब्दों के [illegible] [illegible]
इतने आक्रमणों के बावजूद भी भाषाने अपना [illegible]
नहीं किया।

[illegible] विद्वान [illegible] के [illegible] के पूर्व
का [illegible]

धातु पाठ विमर्श। धातु शब्द का अर्थ [illegible] प्रकृति, प्रकृति

नामधातु।
सौत्रधातु।
[illegible] शब्दों के मूल में [illegible]
अंग्रेजी - लैटिन [illegible]
[illegible]
([illegible]) [illegible] ([illegible])
[illegible] (डा. [illegible])
माधवीय धातुवृत्ति।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] विनियोग

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत का शरीरशास्त्र और रोगलक्षण में उपयोग.

{ लोकभाषा. अग्नि
{ वन्हनी
{ भारतीय [illegible] आग [illegible],

इन
[illegible] ([illegible] आग [illegible].
[illegible] (पंजाबी)
[illegible] (नष्ट) [illegible]

भट्टि - से हृदय - हृदय से [illegible] पावक
(शान्तिशाली सर्वविध्या इत्यादिकानि [illegible])

मानस क्रियाएँ अन्तः मन की क्रियाएँ और [illegible] और उनके लिए संस्कृत में [illegible]
वल - वलि - अग्निमार्ग. (सांख्य-योग) (वेदान्त) (आयुर्वेद) बौद्ध - जैन दर्शन (लोक [illegible])
(मनु आदि धर्म शास्त्र)

{ जाठराग्नि का केन्द्र (नाभि) बना कर शरीर को [illegible]
{ वैश्वानर अग्नि } इनकी अवहेलना किया आयुर्वेद में किन रोगों
पाचकाग्नि.

इस अग्नि की केन्द्रता (जन्म में - मरण में)

इस अग्नि की रक्षा से जीवन
" क्षय से क्षय
वृद्धि से वृद्धि.

स्थान और भावाभाव के क्षय वृद्धि के लक्षण दे करके प्रमुख ऐलोपैथी में किसी प्रकार से पूछना.

आयुर्वर्णो बलं स्वास्थ्यमुत्साहोपचयौ प्रभा। ओजस्तेजोऽग्नयः प्राणाश्चोक्ता देहाग्निहेतुकाः॥

नर में नारी में
बाल
युवा
वृद्ध में

लाघवं कर्मसामर्थ्यं विस्पष्टघनगात्रता। दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते
ब्रह्मचर्य से.
[illegible]:
[illegible].
श्रमी - मजदूर.

प्रायेण श्रीमतां लोके भोक्तुं शक्तिर्न विद्यते। काष्ठान्यपि हि जीर्यन्ते दरिद्राणां च सर्वशः॥

[illegible] हजम.

[illegible] } रोग [illegible].
[illegible]
मजदूर

अग्निवृद्धि के उपाय
शरीर में किस
सदा गीत है
[illegible] में,
व्यक्ति में [illegible] किति योग
परिवार में
पेड़ों में
[illegible] में.
[illegible] में
[illegible] में.
[illegible] में
[illegible] में
यूरोपियन
जर्मन जापानी

जाठराग्नि } का जातियों के जीवन पर
वैश्वानराग्नि } प्रभाव.

यथा हि क्षुधिता बाला मातरं पर्युपासते
तथा सर्वाणि भूतानि अग्निहोत्रमुपासते॥

अतः अग्निहोत्र जाठराग्नि.
इसमें जलो अन्न [illegible] पचता है
अतः होम होता है
वहां होम करना चाहिए }

सानुस्वार रूप निरनुस्वार रूप मधु मधु
सरेफ रूप नीरेफ रूप. नि त्रि
वर्गों के वर्णों से आगम हुए रूप च्यम् चतुर्थ, अश्रु अदने
स्वादि रूप पुरादि रूप.
हुआ आगमरहित दीर्घता वर्णोन् रूप.

(कोट, कराटे भेद है भिन्न रूप मानवस्वभाव है कोई अध्ययन वश लगाटे हैं। भिन्न भाव आदिम हैं।)

(क्या देवेन्द्र नित्य भेद है। गल बिल बे स्व बिल के॥
शीतऋतु - उष्णऋतु भेद से
स्वीय जनाबये दूर से आह्वान के प्रयोजन से'
अल्पमात्र — प्लुत बहुत मात्रा, आवश्यक है॥
पूर्व आदि दि भिन्न भिन्न दिशाओं में होने से भेद से
मूलतः कल के आदि में जगत लिङ्ग आदि जो निश्चित हो गए
वे कल्पान्त तक रहेंगे। विशेषणमोत्पत्ता: इत्यर्थ
महा भाष्य कार.
शब्द, अर्थ, सम्बन्ध के नित्यत्व स्थापनपरक विचार।
वैदिक व लौकिक संस्कृत नित्य - इसी अर्थ में नित्य'
पाणिनीय व्याकरण चिरजीवी। इसका अनित्य, परिणामी
आत्मा-रूप तत्त्व (चित् अपरिणामिनी
इसके भोई रूप-तत्त्व (परिणामिनी)
नार-जेरन - उत्थे: हरेन
जैनियों में केश लुंचन'
मतिबुद्धि पूजार्थेभ्यश्च। मति: इच्छा, बुद्धि: ज्ञानम्, पूजा सत्कार'
ज्ञान मया भवति इच्छा इच्छा जनक भवेत् कृति:॥
//धातुपाठ का (आगमकाल) (स्वाध्यायकाल) (प्रवचनकाल) (व्यवहारकाल)
अर्थ के प्रमादी में न रहने लोपाभाव के भिन्न रूप हो जाते हैं (नाम्ने: पूजाया
अंग्रेजी भाषा में ह्ल को हृष्ट्व ह्लाद glad
// इतनी अधिक धातुएँ मन्दर्थक हैं तो क्या लेखक जगत में गत्यर्थक धातुएँ
और गतिक्रिया बहुत अधिक है और बहुत प्रकार की हैं। वैशेषिक दर्शन में
// भी कर्म में गति ही प्रधान है इसके तो उसके भिन्न भिन्न रूप हैं
प्राय: धातुएँ सेट् (अनिट्, वेट् का परिगणन
प्राय: धातुएँ परस्मैपद,
प्राय: धातुएँ भ्वादिगण
अतः धातु प्रकृति पूर्णतया भी भ्वादि गण के समान
इसलिए बहुलता, अपवाद, और नियम के बारे में अतिशयोक्ति और अर्थ
का प्रदर्शन न करना चाहिए.
(भाषा) व्याकरण के न होने से भी वस्तु इतनी अद्भुत, अपरिचित प्रतीत होती
पक्ष = उन्नति'
// नियम ढंग। अविच्छेद ... मानवस्वभाव / अर्थ कि के निरंतर लोग
// लौकिक ... धन प्रयत्न से ही उन्मत्ततःकाल ही अविच्छेद रहते अनुभव करते हैं

पाणिनि – ~~[illegible]~~ कात्यायन पतञ्जलि विषयक, व्याडि.

(१) वासुदेवशरण अग्रवाल. { Pandit N. Bhattacharya
(२) युधिष्ठिर मीमांसक. { Age of Patanjali.
(३) प्रभुदयाल अग्निहोत्री. Puri " पतञ्जलि.
(४) हरचरितचिन्तामणि.

पाणिनि की जन्मभूमि - प्रदेश में शैवमत -
व्याकरण में ~~माहेश्वराणि~~ माहेश्वराणि सूत्राणि.
वासुदेवार्जुनाभ्याम् अभ्यर्हितं वा पूर्वनिपात.

वाक्य व्याकरण ईश्वर ।।(कुर्वन्दयां भवितव्यता) समावो दृष्टिकुर्या।
कौशाम्बी में सोमदत्त की पत्नी वसुदत्ता में (वही पुत्र (वा) वररुचि नाम से उत्पन्न हुआ। वसुदत्ता ने विन्ध्यवाहिरा वररुचि को पाला पोसा।
॥ कात्यायन = श्रुतधर = वररुचि) महापद्म यात:॥
राजा नन्द के पाटलिपुत्र नगर में "वर्ष" नाम का विद्वान् रहता है। उपवर्ष।
वर्ष - उपवर्ष ॥ (मूर्ख - दरिद्र) X (बुध - धनवान)
तूष्णीम् बभूव। तूष्णीम् भवति। सकृद् ग्राही, श्रुतधर:।
॥ सकृच्छ्रुतं वररुचिर्व्याडिश्च द्वि: श्रुतं च। त्रि: श्रुतं चेन्द्रदत्तो ~~[illegible]~~ स गृह्णाति गुरूणोदितम्
(वर्ष-गुरु) (गुरु-वर्ष) । पाणिनि । जड़बुद्धि।
पाणिनि ने हिमाचल पर जाकर शिव जी से विद्या पढ़ी।
स सर्वान् वादाय आह्वयेत। उपहासान् जनान्। अनातपस्व परीक्ष्यम:॥
व्याडि कुमार से वर्ष ने। वर्ष से व्याडि-इन्द्रदत्त ने।
विन्ध्यवासिनी देवी। गाधहुंकार। किंपतावमेधेन त अभ्यार्थ उपैमि
सवृत्तान्तं जगाद्याहि बाल्यात प्रभृति मे प्रभो। जन्मन: प्रभृति
वर्षाति कथम। प्रतिष्ठित। सातवाहन। शर्ववर्मा मन्त्री।
मोदकै ताड्य मां जल: प्रदेहीति कृतीक्षिता। । संस्कृत - प्राकृत देशभाषा
पैशाची - पिशाच भाषा ॥ जयद्रथविरचित हर-चरित-चिन्तामणि में
शब्दशास्त्रावतार नाम षड्विंश-प्रकाश.
गुणाढ्य की बृहत्कथा
सोमदेव का कथासरित्सागर
क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामञ्जरी
जयद्रथकृत हरचरितचिन्तामणि (षड्विंश: प्रकाश)
"सर्ववेद पारिषदम् हीदं शास्त्रम्" (१.१.५८ महाभाष्य)
पाणिनीयम् महाशास्त्रं पदसाधुत्वलक्षणम्। सर्वोपकारकं ग्राह्यं कृत्स्नं त्याज्यं न किञ्चन (इति पतञ्जलि...)
नन्द राजा की राजधानी पाटलिपुत्र वासी वर्ष उपाध्याय के पुत्र उपवर्ष हैं
भाई
वर्ष से पाणिनि ने पढ़ा॥

२१

सलातुर - ग्रामाभिजनः शलङ्कु तनयः दाक्षीपुत्रः, पाणिनि गोत्रः आहिक नामा उपवर्षशिष्यः।

उपवर्षशिष्यः कौशाम्बी वास्तव्यः सोमदत्तपुत्रः वसुदत्ताज-पुष्पदन्तगणावतार,

श्रीमत् कात्यायन - श्रुतधर - वररुचि - वार्तिककार

सलातुर - हलातुर हलाहुर लाहुर।

कोश निघण्टु शेषः। पाणिनिस्त्वाहिको दाक्षीपुत्रः शालङ्कि पाणिनौ शालातुरीय

पाणिनेः आचार्यस्य

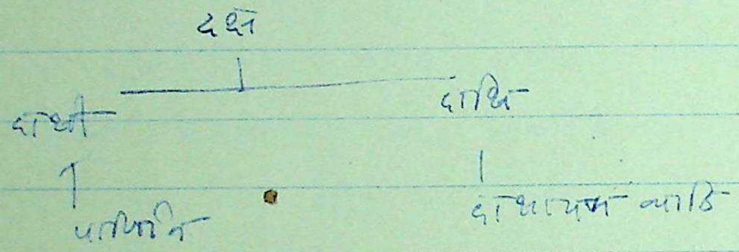
शंकराचार्यस्य । कौशाम्बी वत्सपत्तनम्

वररुचि

इन्द्रदत्त

व्याडि = मत्स्ये वाडवबन्धन - नन्दिनीतनयः व्याडिगोत्रः

व्याडिः मित्र प्रियशिष्यः : पाणिनि



श्री महीदास जीने भी 'संग्रह' व्याडि के संग्रह ग्रन्थ के लोप में शिष्यों की अशक्ति को दोष दिया है। (वाक्यपदीय द्वितीय काण्ड ४८४ कारिका॥ चरक, माधव धर्मशास्त्र तथा में बालविवाहादि कुरीतियों से जाति ह्रास होता है इस ओर और इन की कारणता की ओर कुछ ध्यान नहीं दिया जाता॥"

// जातियों के धर्मशास्त्र, सामाजिक रीतिरिवाज भी जातियों का इतिहास बनाते हैं।

सार्वजनीन : सिद्धान्त :

1 वैदिक लोग सूत्रपाठ में वार्तिककार के योगविभाग को मानते हैं परन्तु पतञ्जलि के योग विभाग को पाठ के लिए स्वीकृत नहीं करते॥

/ रोचितो स्थानम् । उणादि: शीतकाल तैत्तरीय में हैं। ठञ् प्रत्ययः

लक्ष्यलक्षणे व्याकरणम्॥ सूत्र - उदाहरण

सूत्रशैलिका। सूत्रनिरीक्षण परीक्षा॥ उद्देश, लक्षण - परीक्षा

उद्दिशति, लक्षयति, परीक्षते॥ भुवनकोश। चरणव्यूह।

पामकोटि उपशिक्षापरा अन्तरङ्ग परिशीलन, बहिरङ्ग परिशीलन

प्रत्ययवृत्तयः, कृद्वृत्ति, तद्धितवृत्ति, समासवृत्ति, नामधातुवृत्ति, एकशेषवृत्ति

भाव, वृत्ति, प्रमाण, लक्षण, उपदेश = क्रिया शब्दों के अपने ही अर्थ हैं और अनेक हैं। अनुवृत्ति गहरे हैं। रूपसाधनिका।

आज अविच्छिन्न। २४०० वर्षों से - ४२०० ... ... , ... , ... से वैदिक बौद्ध जैन सभी पाणिनि व्याकरणको पढ़ते आए हैं।

(२) व्याकरणविषयक अध्ययन अध्यापनकी विविध पद्धतियाँ॥ ... , गोत्र, जनपद। शब्दशास्त्र। शब्दानुशासन। शलातुर। ह्युआन चुआङ् (ह्वेन सांग) निवास। अभिजन॥ ... लेजाना। ... । मेधावी

कम्बोज —— ... (अफग में) यूनानी भूगोलके भारतके अपने समयके ४०० ग्राम नगर गिनाए हैं। वे पाणिनि व्याकरण में प्रसिद्ध हैं।

काशिका, चन्द्र, जैनेन्द्र शाकटायन, भारत, वर्धमान, भोज, हेमचन्द्र।

इनके यहाँ गणपाठ। आहतमुद्रा। पुराण ४००० से बढ़कर ४ लाख हो गये हैं, संज्ञा-प्रमाण २ लोकप्रमाण।

सर्वविधानाम व्याकरणाद् वैयाकरण उच्यते। प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः। आचार्य दिवाकरैः। संस्कृत भाषा की नित्यता और उसका पाणिनीय व्याकरण ने रखी।

" पुरोहित वेबर" (संस्कृत भाषा का इतिहास) (गोल्डस्टूकर)। सर्वोपरि (supreme)

शिष्टभाषा। जो लोकजीवन में होता है उसकी भाषा बन जाती है इसलिए इस शब्द भण्डार में लोकजीवन प्रतिबिम्बित है इसलिए यदि व्याकरण और कोश वैशेषिक दर्शन मिलाकर पढ़लें और लोगोंसे प्रश्न पूछें तो मनुष्यके अंदर महाभाष्य बनने का स्थिर आधार बन जाता है।

(द्रव्य) पदार्थ है, आकृति जाति पदार्थ है
(द्रव्य, गुण-कर्म) अर्थ (सामान्य-विशेष समवाय)
अर्थ (आदि लक्षण)

व्याडि - वाजप्यायनः

काणादं पाणिनीयम् च सर्वशास्त्रोपकारकम् "

(४ बर्नेल) (ऐन्द्र व्याकरणपद्धति) छन्दोवत् सूत्राणि भवन्ति। (लोगोंने व्याकरण की रचना छन्दोवत् की है)

हॉन-फिलिट्ज - ... । पाणिनि: सूत्रकारस्य। पाणिने: आचार्यस्य। वर्ष-गुरु। शब्दकार, शब्दिकार

(४२६३) पाणिने: प्रत्याहार। पाणिनेः आचार्यस्य। वर्ष-गुरु। भगवत: पाणिनेः सिद्धम्
(४२६३) वार्तिक हैं। चूर्णिकाएँ ४ ॥ भगवत: पाणिने: सिद्धम्

ओम् नमः सिद्धम्। ओनामासीधम्"

भगवतः पाणिने: आचार्यस्य सिद्धम्"

पतञ्जलि भगवान् वृत्तिः॥ " पुरातन भूगोल जानने के लिए "

- नन्दलालदे
- कनिंघम
- विमलचरण लाहा
  - वसन्तकुमार विद्यालंकार - भारतभूमि और उसके निवासी। "कल्पना" हैदराबाद से
  - वासुदेवशरण अग्रवाल भारतकी मौलिक एकता यहीं ५५, ५६ में लेख
  - भुवनकोश
  - कल्याण का तीर्थ अंक॥

भूगोल लोगों की पुस्तक का हिन्दी द्वारा अनुवाद"

" अष्टाध्यायी"

(अगस्त्यविधानम्) शौनक

ऋग्. मण्डल १, सूक्त १८९ (अग्निदेवताकसूक्तम्)

~~श्वित्रं कुष्ठं श्वित्रं पतितेक्षित नित्यं मन्त्रमुपस्थितम्। पुनीतम्~~

श्वित्रं श्वित्रं पतिकेक्षित निःश्वसन् मुपस्थितम्। पूजयेद्धयानं नित्यं भुञ्जीत च विकुसुमम्।

नास्य स्याद्रुजो ~~के~~ व्याधिर्विष्मय्यमन्ते मैव च। विषं च पीतं तत्पूर्वं जपेद् विषविनाशनम्।

नावाग्यतस्तु भुञ्जीत नाशुचिर्न कुशासितम्। यथाश्च पूजयेच्चैव जुहुयाच्च हविस्सदा।

क्षुद्रमन्त्रं नास्य किञ्चित् स्यात् नान्यजं व्याधिमाप्नुयात्। (अगस्त्यविधान (१.१४८-१५१)

// विकल्पभेदे फलम् (२५) मेलच्छ धातु (माधवीया धातुवृत्तिः)

एवं श्रीहरिनामलेश्यामयोरधातूनां विकल्पभेदे फलत्रयम्।)

म्लेच्छ (अविस्पष्टे म्लेच्छम्) (अपशब्दे म्लेच्छितम्) शाकपार्थिव, शप्य शब्दोऽनि

म्लेच्छती - १. पर म्लेच्छ अपशब्दे। शपित्वाद् अनुदात्तौ सुप्पितौ इति अनु

धातु प्रत्ययस्वरेण आद्युदात्तः॥

// ~~आर्दि~~ आयामे
आर्दि लम्बा करना (ऐसी धातुओं का प्रयोग नहीं होते (धातु पाठ में)

मुर्छ मोहसमुच्छ्राययोः (च्वौ मूर्च्छ (न व्याख्या पृ मूर्च्छि मतम्)
(से हट निषेध)

ध्यातव्य अथवा पिश्चत्रसहित धातुओं के दोनों रूप
प्रत्ययों के अथवा भिन्न भिन्न प्रकृतिवालों के लिए: भुज भुजि, भञ्ज भ
भ्रश्च वृश्च, जि, ज्रि, समुच्छ्र, जृ, जृम्भ अहते॥

यदत्र सौष्ठवं किञ्चित् तद्गुरोरेव मे नहि। यदत्रासौष्ठवं किञ्चित्तन्ममैव गुरोर्नहि

कौमुदी यदि कण्ठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः। कौमुदी यद्य~~क~~कण्ठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः।

गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः। रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव॥

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः। वसन्ते समये प्राप्ते काकः काकः

// कैयटः प्रदीप (ज्ञान-लोचन संलश्नम्। प्रज्ञाचक्षुः, अन्दर की आँख।

पद-वाक्य-प्रमाण // कैयटः जैयटात्मजः।

धातूनाम् उपदायत्वम् धात्वादि विधुनालनाम्।

तथापि हीवहेन स्रोतेणगम्यसेतुना। क्रममाणः शनैः पारम् लब्ध्य प्राप्नोऽस्मि पङ्गुवत्

(पद- व्याकरण) (वाक्य- मीमांसा) (प्रमाण- तर्क)

भाष्यम् - अन्वाख्यात् } (अथ शब्दानुशासनम्।

शास्त्रप्रयोजनादि रूपम्॥ }

घटं भिन्द्यात् पटं छिन्द्यात् कुर्यात् गर्दभरोहणम्। येन ~~केन~~ केन प्रकारेण प्रसिद्धः पु

ज्ञाताणां च विलोनाक्ल पदव्याप्तताक्षिम्। अभिप्रायः न छिद्यन्ति तेनेदं च दीर्घ

प्रयोजन । - प्रयोजन - प्रयोजन

अथेति - इति शब्द: अथ शब्दस्य स्वरूपेऽवस्थापनाय प्रयुक्त: ॥

व्याख्येः (वि+आ)

निपातानां द्योतकत्वं वाक्यपदीये निर्णीतम् ।

शास्त्र पूर्वके प्रयोगे धर्म: ॥ वाचकत्वम् - द्योतकत्वम् च

अध्येयभाष्यम् | ब्राह्मणा: आगता: , वसिष्ठो ऽप्यागत: ।
व्याख्यानभाष्यम् | आनुपूर्वी ।

फल लक्षण (सास्ना लाङ्गूल ककुद खुर विषाण्यर्थ द्रव्यम् = स शब्द: = द्रव्यम्

इङ्गितम् चेष्टितम् निमिषितम् - क्रिया

शुक्ल: नील: कपिल: कपोत: = गुण:

भिन्नेष्वभिन्नं छिन्नेष्वच्छिन्नं च = आकृति: (जाति:)

सास्नालाङ्गूल ककुद-खुर विषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति - स शब्द: ॥

[illegible] उपलब्धि [illegible] । सम्प्रत्यय: । [illegible]

आकृति: [illegible] । स्फोट: नादाभिव्यङ्ग्यो वाचक:

ध्वनि पदेन वैखरी लोप - आगम - वर्णविकार
अक्रम क्रम [illegible]

प्रदीपालोकवत् शीघ्रं तत्र कुर्यात् प्रतिक्रियाम् ।

संदीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यम: कीदृश: ।

प्रस्तुत अध्याय । अनुवर्ष । आदि - मध्य - निधन (अन्त)

रसों के संबंध - व्यापद है । जीवित मरण । रस - [illegible] - गुण - विपाक -

प्रभाव । संकलन - विकलन

निमेष - काष्ठा - कला, मुहूर्त, अहोरात्र, पक्ष - मास ऋतु, अयन, संवत्सर,

लघ्वक्षरोच्चारणमात्र: = अक्षिनिमेष

व्यावहारिक दृष्टान्त
१५ अक्षिनिमेषा: = १ काष्ठा:
३० काष्ठा: = १ कला
२० कला = १ मुहूर्त
३० मुहूर्त = अहोरात्र
१५ अहोरात्र = १ पक्ष (शुक्ल - कृष्ण)
२ पक्ष = १ मास
२ मास = ऋतु
६ ऋतु संवत्सर

दक्षिणायन - वर्षा - शरद् हेमन्त
[illegible] वर्षा ही बलि होती है
अम्ल - लवण - मधुर रस बलवान होते हैं
उत्तरोत्तर सब प्राणियों का बल बढ़ता है।

उत्तरायण शिशिर वसन्त - ग्रीष्म
मानवों [illegible] आप्यायित होते हैं
तिक्त, कषाय कटुरस
बलवान होते हैं
उत्तरोत्तर सर्व प्राणियों का बल क्षीण होते।

दक्षिणायन - विसर्ग
उत्तरायण - आदान

[illegible] वसन्त - ग्रीष्म, वर्षा, शरद् हेमन्त
[illegible]: मधु शुचि नभ: इष सह:
[illegible] माधवौ शुक्र नभस्य ऊर्ज सहस्य

शीतांशु: क्लेदयत्युर्वी विवस्वान् शोषयत्यपि ।
तावुभावपि संश्रित्य वायु: पालयति प्रजा: ॥

चक्रवत् परिवर्तमान - कालचक्र कहलाता है ।

अन्न जल प्रकृति विज्ञान, जनपद आधारित

	औषधि	अप्-जल	आकाश	भूमि
वर्षा	तरुण-अल्पवीर्य	अप्रशान्त क्षितिमल-प्राय	मेघाच्छन्न	जल क्लिन्न

क्लिन्नदेह शीत-वात से मन्द अग्नि वाले लोगों के ये वनस्पतियाँ और जल विदग्ध (अम्ल) होजाते, विदाह से पित्त सञ्चय हो जाता।

शरद — प्रविरल मेघ आकाश में, पङ्कमें सूख जाने पर — यह पित्तसञ्चय, सूर्य किरणों से पिघलकर पैत्तिक रोगों को जन्म देता है।

हेमन्त में — कालपरिणाम से परिणतवीर्य बलवती; प्रशान्त स्निग्ध गुरु।

सूर्य के मन्द किरण होने से, तुषार मिश्रित पवन से व्याप्त वन प्रदेशों में, स्नेह वनस्पति और जल के उपयोग से मधुर पाक होने के कारण, स्निग्ध होने के कारण, शीतल, और गौरव से, श्लेष्मा का सञ्चय हो जाता है।

वसन्त में — यह कफसञ्चय, सूर्य किरणों से पिघलकर, स्निग्ध देहवाले लोगों के श्लैष्मिक रोगों को पैदा करता है।

	अन्न	जल
ग्रीष्म में	निस्सार रूक्ष अतिलघु	निस्सार रूक्ष अतिलघु

सूर्य प्रताप से शोषित देही लोगों के रूक्षता और लघुत्व के कारण वायु सञ्चय होता है।

प्रावृट् में — भूमि, अप्-जल, जलक्लिन्न — यह वायुसञ्चय, क्लिन्नदेह शरीर वाले लोगों के शीत वात वर्षा से उदीरित होकर वातिक व्याधियों को पैदा करता है।

विषम ऋतु में — जैसे अन्न, जैसे औषधि, जल — विकृति में जैसे शरीर वालों के दिन दिन हेतुओं से प्रेरित हुए पित्त, श्लेष्मा, और वात अपने रोगों को पैदा करते हैं।

बारह वेदनाकर पर्यालोचन करके साध्यासाध्यता और आचार्य का विवेचन करना चाहिए।

काल - कारण - पर्यालोचन, प्रकोप, अल्प साधन साध्य, स्वभावतः बोध प्रक्रिया आदि जानने के विचार भी हैं॥

वर्षा-हेमन्त-ग्रीष्म में सञ्चित। शरद् वसन्त प्रावृट् में प्रकुपित दोषों का निर्हरण (निकालना)

पैत्तिक व्याधियों का उपशम हेमन्त में
श्लैष्मिक व्याधियों का उपशम निदाघ में
वातिक व्याधियों का उपशम शरद् में

दिन के पूर्वाह्न में वसन्त लिङ्ग, मध्याह्न में ग्रीष्म लिङ्ग, अपराह्न में प्रावृट्, प्रदोष में शालि आदि में वर्षा, अर्धरात्रि में शरद, प्रभात में हेमन्त — दिन रात्रि में भी दोषों का सञ्चय, प्रकोप

सञ्चय -	प्रकोप -	उपशम
प्रसर	प्रसर -	~~विकोप~~
आश्रय	मनन व्याख्यान	प्रवचन

जायते - अस्ति - विपरिणमते - वर्धते - अपक्षीयते - विनश्यति

संचय | प्रकोप | उपशम।

उत्पत्ति | स्थिति ———— | प्रलय।

आगम | व्याख्यान। | प्रवचन

ब्रह्मा- | विष्णु ———— | महेश।

बाल्य ———— | यौवन | वृद्धत्व।

पुरुष

स्त्री।

प्रकृति

राज्य।

अदूषित ऋतुओं में   औषधि- अन्न - जल | प्राण- आयु- बल, वीर्य, ओज:

साद्गुण्यातीत/दूषित   "   "   "   "

। शीत, उष्ण, वायु, वर्षा के
हीनयोग, मिथ्यायोग, अतियोग से
अन्नजल भी विपरीत हो जाते हैं

इसलिए आयुर्वेद के औषधि अन्न- जल का विचार करके   अपनी
वायु जगत्,
जल जगत्,
वन जगत्
सबकी देखभाल
करनी चाहिए।

यह भी विज्ञान है ॥

देखते रहें कि औषधि अन्न, जल, वायु की क्या प्रकृति हो गई है।

दूषित वायु से कास, श्वास, वमन, प्रतिश्याय, शिरोवेदना, ज्वर होते हैं।

सामाजिक प्रार्थना- सामाजिक होकर के प्रार्थना करें।

जपतां जुह्वतां चैव विनिपातो न विद्यते।

इसकी बातों को साथ लेकर ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त १८७ अन्नदेवता

पर व्याख्यान दिया जा सकता है ————

व्याख्यान// अन्न- [illegible] ————

ओम् अन्नपते अन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिण: — — — —

धर्मभीरु हिन्दू जाति किसी का शासन ले
परन्तु क्षात्रधर्म का लोप न करे।

कुटके श. रामजी पांडुजी कानोलकर. १७वां वंश.
गोपालराव हरि देशमुखका वंश.
रानडे का वंश
ज्ञानदेव कानोलकर.

वाचस्पति मिश्र की भामती व्याख्या।

मूला- अविद्या - मूला अविद्या।
जैसे चित्तोपमर्दनाविना परिणाम: निर्बन्ध।

आत्मा में न संदेह है न विपर्यास है।
नाड - चेतन: चेतन, चित्, चेतना, चैतन्य।
इदंकार: अहंकार- त्वंकार. एते वयम् आस्महे। इमे वयम्
आस्महे। शब्द-गन्ध-रसानाम् च कीदृशी प्रतिबिम्बता॥
ऋग्वेद मण्डल १. मन्त्र सूक्त १२८ में ९ मन्त्रमें व्याप्ति (निहित) है जो तीन नहीं॥
व्याप्य: व्यो निव्याप्य। कहा है॥
(ऋग्वेद. मण्डल १ छन्द. १२२. मन्त्र संख्या ८। (ऋग्विधान शौनक १.२४१-

उत्पथप्रतिपन्नो यो मूढो नापि पथ: कुचित्। पश्यान्तं प्रतिपद्येत कुत्र वा मार्गगो
अतो नयोगे एकेन प्रयुतं गुरु मार्गपूतम्। जयेप्सु प्रयतो नित्यमुपतिष्ठेत वानल

आपः स्वस्तु: प्रावप्याम् पौर्णमास्याम्॥
ऋतं नयस्व नयामः (मण्डल.१. छन्द १२८. मन्त्र-९)
ऋग्वेद मण्डल १ छन्द १२२. मन्त्रसंख्या- १६। ~~[illegible]~~ शौनक विधान
~~कटुतः श्रोत्रोपनिषद्~~
कटुतो नेति कस्तु विपर्तत: प्रयतो जयेत्। विषं न कुर्वन्तव्याख्य यदि दृष्टिविषा
पत् कीदृशताप्रविषं दृष्ट्वा [illegible] मूलं च कुर्वन्तवस्यै न जायते जविमयो
(ब्रह्मविद्या निरुक्ती उपनिषद्)

महाभाष्य

वेद अनुपाठ महाभाष्य व्याकरणकी प्रकृत पाणिनीय व्याकरणकी =

अनुहारी। अध्यव-स्यति। अध्यवसाय:
प्रत्याति प्रयोजनयति प्रदर्शय अनुमति कार्य प्रदर्शयति
बृंध. प्रत: ब्रूय:, ब्रूय: बार बार
तवै = तुमुन् = भाव. Infinitive और तुमुन् [illegible] अर्थे

to go = गन्तुम् ॥ के लिये अथवा जाना अर्थ।
to और तुमुन् दोनों के दो दो प्रयोग अर्थ to go जाना, to go जाने
गम् जाना = गन्तुम् जाने के लिए।

		अंग्रेज़ी के
गम् =	जाना	to go
गन्तुम् =	के लिए	to go.
सर्प,	साँप	serpent.
	दैत्य	giant.
	अवि	squirrel.
	उपरि	up.
	अन्तः	inter.
	गो	cow
पंजाबी.	उक्षन्	ox

ऊँठ	ऊँट	उष्ट्र.
	पतोहू —	पुत्रवधू
ननाण	ननद	ननान्दृ
पराहुना	पाहुना	प्राघुण प्राघुणक ~~[illegible]~~ प्राघुणिक. प्राघूर्ण प्राघूर्णक प्राघूर्णिक
श्लेखमा		श्लेष्मन्

स्थान — stjen
स्था — sit; seat,
सद

~~ईंधन~~ ईंधन. — इन्धन
राँधना. — राध (धातु)
लक्खन — लक्षण
गाभें — गर्भ
ऊधस् — udder
मुँह — मुँह — मुख — mouth
अभितः — about
लिश् (धातु) — lessen
लिसलोहना. — अलीक — Right.
ऋत
अक्षि — latin (octo)
कड़ा (मोटा कड़ी) — कड़ाह — कटाह
~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ कोसना — कुत्सा — curse
स्तृ — star
कृती (काटना) — cut
तनु — Thin

इसके सम्बन्धी अनुसंधान आवश्यक के लिए परिषद् आवृत्ति 1/28 पे जानकारी 34
latin में इन पदों के नाम हैं संस्कृत के अनुवाद हैं।
पूरा का प्रयोग are you do 4.
प्रान्त विभाग के पुस्तकालय में Mr. Park से या श्री भगवती से पूछिए।
यह साम्य की प्रभाव है।
इस प्रवृत्ति को भी देशीय भाषाओं पर प्रभाव है॥

पंजाबी — मुलतानी. हिन्दी.	संस्कृत	इंग्लिश.
	क्रमेलक	Camel
	मध्य	mid, middle,
	दुहितृ	Daughter.
	स्विद	sweat
	प्लु	flow
	परि	Peri,
	{ तृष्	Thirst
	{ तृषित	Thirsty
	भ्रू	Brow
	गण	count
गालाँह, गाल,	गल्ह (कुत्सायाम्)	
	{ गृध्, गर्धित	greed
	गु (पुरीषोत्सर्गे)	
गुंदकला		
गुज्जी	गुह्य, गूढ	
	क्रूर	cruel
निगलना	निगरण	
	गृज	crush
	ह्लाद	gladden
	सीव	(sew) सीना
चेरा	छल	
खेरा	खिद	
	{ हृदय	heart
	{ हृद्	
~~आलिंगन~~, (आलना)	(अ)कांक्षा (चाह.	
कँहदा	(इच्छ)	
	चर्व	chew
मट्ठा	मथित	
	बिंध	Bound
	{ वम (वमिति)	vomit
	{ वमन	
	छर्दि	(Purge)
	ज्ञा	Know, [illegible]
	नामन् —	Name (संज्ञा [illegible])
	मारयति	mar (verb)
	लोकृ दर्शने	Look
	द्यु —	Day
	दैवी	Divine
	देवता	Deity.

मूर्धन्य ध्वनियों में परिवर्तन

ह ग्ल ध्व, ग में परिवर्तन ह्लाद glad

पंजाबी - मुलतानी - हिन्दी - संस्कृत - इंग्लिश. लैटिन, ग्रीक

वदन (बात) (Din)
नासा nose
नक्तं. nocturnal)
पथिन् Path,
त्रिपाद (Tripod
द्वि two
त्रि. Three
पञ्च Penta
सप्त Hepta
सप्त Septa
अष्टन् octa
नवन् Nova
दशन् Deca
पू (
पुरस् (Fore)
~~पुरस्~~

पुचना
पुनना

अफीम- अहिफेन opium.
(भूक) भषते Bark
बन्ध Bind
to be भू (Bhu) (to be)
to अस् भ्राज (दीप्ति) Bright)
मद mad
मज्ज merge
मिश्र (मिश्रण) mix.
स्तेय steal
युज join.
युग, युगो yoke
राजन् Regal
{ रोह / रोचति } Rose.
स्तम्ब stem

लगना लोग (लगे)
लगाना लगजीवी
लब्ध करना / पाना लुड, लभ्
लभ्
पढ़ाई आली लब्धवान
लिखना / पढ़ना लिख
पठ
लिखावनी लिक्ष less / lesson
लघु ~~to let~~ which.

पंजाबी	गुजराती	हिन्दी	संस्कृत	इंग्लिश, लैटिन, ग्री[illegible]
			लुट विलोडने	w roll down w loll
		लुंटना, लूटना	लुण्ठित्वे	loot
			लुण्ठक	
			लुञ्च	wrench
			लुप्तछेदन	lop
			वाडि विभाजने	
वंडना			वटि विभजने	
वटना				
		बीजना		
बीजना				
		बटना	वट निवाडे	
बटना			वट	bran[illegible]
			वृट	Hero
			वे (तन्तु सन्ताने)	weav[illegible]
	सीख	सीखना	शिक्ष (विद्योपादाने)	
	सिखवा		शिक्षआपयते	
		सोंठ	शुण्ठी	
		सुहाना	शोभते	
			शोभन	
			स्वे-लादन	Swi[illegible]
			जड़	
		फूटना	स्फुट विकसने	
फुटना				
		भभका	स्फोट	
			स्फोर	
फैंना				
हगना		हगना	हद पुरीषोत्सर्गे	
			ओज	
			ऊर्ज	en[illegible]
			अक्ष	(a[illegible]
		मूतना	मूत्रयति	
मुँदरी		अंगूठी ?	अंगारश्करी	
			मुद्रा	
		अंगूठा	अंगुष्ठ	
		चिकना	चिक्कण	
		अजवाइन ?	अजमोदिका	
			अजमोदिक[illegible]	

//

संस्कृतात्पार्यभाषाणां प्रथमा श्रेणि:

पंजाबी	मुलतानी	हिन्दी	संस्कृत	इंगलिश	लेटिन	फारसी
		अठी	अह			
अत्त			अति			
पतों			पतत्			
धात्			पताति			
बलद			बलीवर्द			
थाँव			स्थान	stay stand		
	ओझा	ओझा	उपाध्याय			
निंकार			निकार			
नाथ			नाथ			
		सांभ	सायक			
			अन्ना	Cud		
फक्ख		पख, पक्ख	पक्षिन्			
		भी	अपि			
		पियासा	प्रास			
पोह		पाव, पोह	पार्व			
		पती	अपरत			
अपाणा			अप्रात			
		सलौ	सर्पिष			
धु		मोत	मूत्र			
ठहर		अठहर	अधष्ठ			
		रीत	अरिष्ट			
कुक्कड			कुक्कुट			
अड्ड		अड्ड	अर्द्ध			
		अजब (जीवी)	अंजिद			
			धारन			
बेबनो			अवेक्षण			
किरपाण			कृपाण			
हंकार			अहंकार			
पाखंड			पाखंड			
परकंड			पाखण्ड			
अभ्यास			अभ्यस्त			
आख			आशर			
अजीर्ण			आशीर्ष			
		अनाज	आश्रय			

पंजाबी   मुलतानी, हिन्दी   संस्कृत   इंग्लिश,   लेटिन,   फ़ा...
उर्दू
च (अंग्रेज़ी में) वा
कुल्हाड़ा   कुठार

// पंजाबी.   हिन्दी.   भाषाओं के नाम   तद्भव.
तिथियों के नाम.
नक्षत्रों के नाम.
शरीर के अंगों के नाम.

// स्त्रियों और   हिन्दुओं के, औरतों के नाम   संस्कृत के परिवर्तित नाम.

पंजाबी	हिन्दी	संस्कृत
	ईख	ईक्षु
	पौंडा	पौण्ड्र
अज्ज	आज	अद्य
ईर्खा		ईर्ष्या
इट्ट	ईंट	इष्टका
डण्डा	{डण्डा डंडा}	दण्ड
वेखना		{वीक्षण अवेक्षण}
ऊन्न	ऊन	ऊर्णा
उड्डना	उड़ना	उड्डयन
पलंग पीढ़		पर्यङ्क, पीठ (पादपीठ)
वेला		वेला
	उजला	उज्ज्वल
	उल्लू	उलूक
	पटरानी	पट्टराज्ञी
	छाता	छत्र
उपाअ		उपाय
उबाल्ला	{उबलना उफनना}	उद्वालना
इष्टपष्ट		हृष्टपुष्ट
		पत्र
		पात्र Pot
धन-पदार्थ		धन-पदार्थ.
		पार्श्व
पासा		
उताण		उत्तान
कुञ्जी		कुञ्चिका
	तोंद.	तुन्द, तुन्दि
पीड़		पीडा
चेल	(चैला)	चेल

अग्निपाटवे सति शरीरं बलं भवति इति प्रसिद्धम्।
अग्नि - ज्योति। दीप्यते। मन्थते प्रज्वालयन्ति। स्वीच इति

अग्निनाश नाम। होमाय। उषः काले हि हवनाय प्रज्वालयन्ते।
वा शब्दस्यार्थः। ।स्थित्वा भूमिम् प्रकाशेन अन्तरिक्षम् हविष्पाकेन
दिवम् समन्तु - अन्तरिक्षेषु - तपेयुः इत्यर्थः। आवह आकाश
अहोरात्राभ्याम् हि यज्ञा इन्यन्ते। उपस्थान, अवदान, अभिधान।
शवादि विसर्जने (श्मशा.) मुक्ताभि वेष्टनी।
मुण्डितमुण्डः नक्षत्राणि पश्यति। दशदिनानि अशौचं भवति।
पितृपुत्रानुक्रमम् ("पितृ पुत्रान् अनुवर्तते" - अभिप्रायः।

करणेषु आभ्यन्तरप्रयत्नः। अनुप्रदानम् - नादादि बाह्यप्रयत्नः।
शब्द। स्वरूप। प्रयोजनानि।
विषय - प्रयोजन - अधिकारी -
शास्त्रनिर्माण रीति। अत्यत भवतः शब्दौ अनुत्पत्तौ स्वभावाद्
हि बहुविधे निर्माणे वर्तेत। यः पूर्वमासीत् जीवति स नवीन शब्दः
जीवति। बाल्य यौवन वार्धक्यानि। उत्पल शतपत्रभेदवत्।

योनिवासके: सर्प कुण्डलवत् जल बुद्बुदवत् जल तरङ्गवत् शुक्ति रजतवत् शुक पक्षवत् रीत	जपाकुसुमसंयोगात् स्फटिके लौहित्यम्। स्फटिक: सूक्ष्मशरीर (अन्तःकरणत्रय, पञ्चसूक्ष्मभूत - दशेन्द्रिय=१८ लिङ्गम् सूक्ष्मदेहः

मनः चन्द्र। ओषधि - अन्न। अन्नमयं हि सौम्य मनः।"

पूरक - कुम्भक ———— रेचक
आगम स्वाध्याय ———— प्रवचन
बीजदान - गर्भाधान ———— गर्भवर्धन
बीजादानं ———— गर्भधारण ———— गर्भ मोचन
धनसंग्रह ———— कोशरक्षण-वृद्धि ———— प्रयोजन - निक्षेपः विनियोगः
जायते - अस्ति विपरिणमते वर्धते अपक्षीयते विनश्यति।
नाटक प्रस्तावना विलविलनी - कार्यमेन।
उत्पत्ति स्थिति प्रलय
ब्रह्मा विष्णु महेश
रजः सत्त्व तमः
बाल्य यौवन ———— वार्धक्य

अविद्या तमः ८ पञ्च तन्मात्र अन्तःकरणत्रयमें आत्मबुद्धिः
अस्मिता मोहः ८ देवाः अणिमादिषु अभिमन्यन्ते (अष्ट)
रागः महामोहः १० शब्दादिषु पञ्चतन्मात्रेषु दिव्यादिव्यादयो
द्वेषः तामिस्रः १८ शब्दादयः दश - अणिमादि अष्ट वशीभूताः
जहिताः अत्यन्तं उपहन्यमानाः
अभिनिवेशः (भयः) अन्धतामिस्रः १८ देवाः असुरैः उपहन्यन्ते इति भयः
इति विपर्ययभेदाः।

हरि- चलचक्र, हि अंतरात्म चक्र, जनन- मरण-चक्र, स्वप्न जागर चक्र, कवि धर्मचक्र
गमनागमन-चक्र, ऋतुपर्याय: * ऋतु-चक्र ॥
अन्ताराष्ट्रीय प्रामाणीकृत। महाकविता। जीवनमेंहो भगवती पुनमोदनीयम् ॥

द्वि-चक्र + दिन रात, अलातचक्रं, गन्धर्वनगर, वेश-उदय ॥ शक्ति-रजत,
पीत शंख, रज्जु-सर्प।

यादृश: ग्रन्थकर्ता तादृश: तस्य ग्रन्थ: तस्य भावनया भावित:
तस्य ग्रन्थकर्तु: वृत्त्यां श्रोता प्रोतश्च यदि तथा एवं वेद
पाठक: श्रोताच पुनः तदैव श्रोतृणा तद्ग्रन्थ- अन्तर्निविश्य
तमर्थं बोद्धुम् शक्य: नान्यथा। यथा वाचस्पति मिश्र
भामती टीका शाङ्करभाष्ये - अनेन हि मया प्रोक्तेन महापण्डित
गृहस्थेनापि ब्रह्मचर्येव स्थित्वा संयमात् स्वपत्नीं
अनुमत्य सहवा उपासितेनयम् भामती टीका ग्रथिता इमाम्
टीकाम् स एव तस्यार्थं बोद्धुम् शक्त: य: खलु एतादृश्या
उक्तया वृत्त्या युक्त: स्यात् ॥ ग्रन्थकर्तृत्वं नाम भूयांसम् पुण्यम्
अपेक्षते।

तस्मात् ग्राम उद्ध्वंसात् प्राकृत भूमे: विदेशीभावात् उदाहरणम् मैंने
कितनी ऋण दर्शिता और दुर्व्यवस्थिता है ॥

हरेद् वसन्ते श्लेष्माणं पित्तं शरदि निर्हरेत्। वर्षासु शमयेद् वायुम् प्राग्विकारसमुद्भवम्
वसन्तमें कफको नष्ट करना। शरद् ऋतु में पित्तको निकालना। वर्षामें वात को
शान्त करना चाहिए। इत्यावश्यकम् अशक्यम्।
शोक मोहौ, जरामृत्यू क्षुत्पिपासे षडूर्मय: ॥
मनुष्य प्रभृति ———— देव पर्यन्त।
मध्याह्नमें १२ बजे अचानक भूख- प्यास उठी।

<u>अन्न - लाओ, जल लाओ।</u>

(१) कहाँसे लाएँ
(२) माँ रोटी दे, पानी।
(३) कहाँ से लाऊँ
(४) पिताजी लाएँ
(५) पिताजी ले आएँ
(६) खा लाएँ
(७) अन्न, घी, शाक-भाजी, दाल, नमक मसाला।
(८) कितनी बार खाएँ
(९) कम से कम तीन बार तो खाना चाहिए।
(१०) अधिक से अधिक पाँच बार।
(११) घरमें ५ बन्दे जमा कीजिए।
(१२) बच्चों, पढ़ने जाओ, पिताजी कमाने जाओ
माँ घरको संभाल ले।
(१३) स्कूलसे बच्चे आ गए। कुछ लाओ
प्रत्येक बच्चे को अपना रोजका पढ़ौ वस्त्रादि भी कपड़े लाओ
भी स्कूल बच्चे को
कपड़े मिलकर १५-१६ ।
फ्रीज लाओ
सिनेमा कार्य ले लाओ।
जेमारूत्ली लाओ।

जिनके पिताजी नहीं हैं
माँ कहीं मिलती नहीं है
मजदूरी करे।
मजदूरी कौन करवाए
जो जरूरतमन्द हो और
जिनके पास देनेवे उनके
दिल्लीमें देनेको पैसे मिल
जाते हैं जो कमसे कम ४०००
कमाए मिलनेमें, घरके
जीवन हो

उपदेशक के बस की बात नहीं और नाहि धर्मोपदेशक। कुछ मजेदार नहीं तो आगे चलता बन। धनक्षेपे वर्धते जाठराग्नि:॥

अपनी बुद्धि शक्ति पर आश्रित यह बात है कि हम कितने बड़े ब्रह्मा का अनुभव करते हैं। आयुर्वेद।

(१) अहोरात्र (२) सप्ताह (३) पक्ष (४) मास (५) वर्ष (६) शती।
युग वर्ष नहीं। अब हम चल गए
आगे ज्ञानियों से पूछना चाहिए।

{ वृद्ध - अवस्था से
{ वृद्ध - बुद्धि से। } वृद्ध न वृद्ध पास मिलते रहिए।

गुरु, मित्र, हितैषी } अवश्य बना करते रहिए॥

कुटिल: वक्रगामि:। कुटिल: बहुभाषी।
(अ) वि तण्ड । वधि मनुष्टि लोपमवाप्यो उपसर्गयो:।
वितण्डस्य गोत्रापत्यम् वातण्ड्य:॥ वि- तण्ड।
गोष्ठे एव पण्डित: न अन्यत्र इति क्षेप-अवमति:॥

(१) ऋग्वेद - प्रातिशाख्य।
(२) धातुपाठ, प्राचीन भाषा की अनुवृत्ति।
(३) भावप्रकाश निघण्टु
(४) अमरकोश।
(५) सुश्रुत।

{ सिन्धी - मुलतानी - पंजाबी जननाम - ग्रामों, स्थानों, ग्रन्थों, स्थितानाम।
पिछले २५०० वर्षों से आश्रित। सिन्धी महाप्राण है अल्पप्राण नहीं।

भाषा की स्थिरता।	संस्कृत साम्य।
जननाम, ग्रामनाम।	

अनुस्वार, वर्ग में परिवर्तन - अनुस्वार नहीं
दुर्गेशचन्द्रजी।

जीवन भर का रहस्य

(१) संस्कृत सभाओं के लिए विषय।
(२) संस्कृत की रक्षा
(३) संस्कृत व्याकरणों की रक्षा और भविष्य।
(४) धातुओं की उपयोगिता।
(५) शास्त्र और काव्य का पारस्परिक वैशिष्ट्य।
(६) सिन्धी, मुलतानी, पंजाबी का संस्कृत साम्य।
(७) शास्त्र रक्षा
(८) संस्कृत व्याकरणों की स्थान की संस्कृत शिक्षा में प्रवेश
(९) शास्त्र का मूल पाठ।
(१०) महापण्डित सम्मान - अभिनन्दन॥
(११) भाषा गोष्ठी।
(१२) संस्कृत मेला।
(१३) संस्कृत के पत्र साहित्य, मासिक आदि
(१४)

पूर्वपद - उत्तरपद। पूर्वार्ध - उत्तरार्ध। उत्तरार्धम्। | उत्सर्गापवाद:

उत्पल। लिङ्गानुशासन का टीकाकार।

उत्सर्गापवादयो अपवादो बलीयान्। बाध्य बाधक भाव।

न्याय: उत्सर्गा महाविषया विषय:, अपवादा अल्पविषया: विषय:।

तान् उत्सर्गेण विधान् एकीकृतान् जानीयात्। अपवादविषयं मुक्त्वा उत्सर्गे प्रवर्तन्ते ह्यर्था:।

{ आयाम:, दारुण्यं खस्य अणुता
गात्रनिग्रह:, रूक्षता, कण्ठस्य संवृतता. } उदात्त:

उद्देशोपदेशयोर्भेद:। प्रत्यक्षमाख्यानमुपदेश:। गुणै: प्रापणम् उद्देश:।

यथोद्देशं संज्ञा-परिभाषम्।

उद्देश्य - विधेय:

तदेतदेकं मङ्गलार्थमाचार्येण मृष्यताम्। माङ्गलिक आचार्य: महत: शास्त्रौघस्य मङ्गलार्थं वृद्धिशब्दमादित: प्रयुङ्क्ते।

(वा.नि.) उद्देश्यवचनं पूर्वं विधेयत्वं तत: परम्॥

पद्य-वाक्य (श्लोक:)। || नागेश — महापण्डित

अप्पय्यदीक्षित - भट्टोजीदीक्षित - (भानुदीक्षित) - जगन्नाथ (पण्डितराज), नागेश

अष्टाध्यायी की टीका काशिका   पाणिनि - जयादित्य वामन - जिनेन्द्रबुद्धि - मैत्रेयरक्षित

काशिका की टीका। न्यास

न्यास की टीका तन्त्रप्रदीप (मैत्रेयरक्षित। प्रयोग: जायते बहु [illegible]

उपनीत: (उपनीय [illegible]

genitive sense षष्ठी || उपजन: आगम:

(वर्णविपर्यय, अपाय - उपजन), लोप: आगम   उपजनो [illegible]

~~अन्यथा कर्तुम्~~ अकर्तुम् कर्तुम्

क की जगह परिवर्तित होने का अभाव (कटे)(चटे) ~~अंग्रेजी में~~।

लड्डू (पक्षी)

सामान्य विशेष	आकृति = जाति
उत्सर्ग / अपवाद.	द्रव्यं = व्यक्ति

उत्पत्ति प्रभृति - आविनाशात्
केवल — तर्क

लिङ्ग: = कर्म.

(पाणिनि - कात्यायन - पतञ्जलि - व्याडि) (एक सम्प्रदाय) वैयाकरणों का गढ़॥

शालायाम् — पाठ्यपुस्तकालय । संस्कृताध्ययनस्य प्रथमा भूमिका.

अर्थ (वस्तु) संग्रहः। शब्दसंग्रहः। नामसंग्रहः। प्रत्यक्षमवलोकनम्। शब्दसंग्रहः। शब्दशुद्धिः
वस्तुशुद्धि। कोश। आयुर्वेद। व्याकरण। वैशेषिक। तर्कशास्त्र। पदार्थ

संस्कृतविद्यालयकी प्राथमिक प्रयोगशाला - वस्तुसंग्रहः।

सन्ध्या-वन्दन। व्याकरण। मूलनियम। तर्कसंग्रह। अष्टाध्यायी। ज्योतिष। अमरकोश।
वैशेषिकदर्शन - प्रशस्तपादभाष्य। गोपालन - उद्यानकर्म - <u>कुटीरशिल्प</u>।

गुरु - गुरुकुटुम्ब - गुरुकुल — <u>सेवा</u>.

एतस्य भागस्य अवलम्बने के सिद्धान्ताः:
दृढा भूमिः। मूलभूता विचाराः। नीतिः प्रकृतिः। ब्रह्मचर्यम्।
वरणाः छात्राः। न तत्र बहिर्मुखाः। पात्रता। [illegible]
प्रथमा।

// यदि स्त्रियों को संस्कृत न पढ़ाई जाएगी और उसके महत्त्व से अवगत न होगी तो वे व्यावहारिक प्रत्यक्ष विज्ञान, धन, और धनोत्पादक रीतियों की ओर सुन्दर पति, पुत्रों, पुत्रियों को संस्कृत ज्ञान और आधुनिक वस्तुओं की ओर ही प्रेरित करती रहेंगी। इसलिए उन्हें संस्कृत अवश्य पढ़नी चाहिए।

// जितना त्याग और उच्च भावना भारत की ग्रामीणों में वर्णित रही है कि उन्होंने अपनी इच्छा और पतियों को संस्कृत के बिना विमुख नहीं किया — कहाँ आज की दशा और कहाँ इन ग्रामों के कुओं, पक्षियों, वृक्षों, गौओं की दशा

भाषा प्रचलित न होने से उपयोगी वस्तुएँ भी अब बहुत होकर उपेक्षित होकर नष्ट हो जाएँगी। क्योंकि, आलस्य, प्रमाद से संकोच ह्रास तो पहले ही हो रहा है॥ (वस्तु ह्रास) संस्कृत ज्ञान के साथ प्रतिबन्ध का और अपने देश के वैज्ञानिकों का कितना उपकार है। विदेशी हम वैज्ञानिकों का उपहास करते हैं। व्याकरण की रक्षा अवश्य होनी चाहिए। "रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्"

// जो आत्मनिष्ठ नहीं संसार में भटकता है जैसे बिना बेटे को

// भारत की यात्रा करते समय एक विश्वास पात्र साथी ज़रूर साथ ले लेना चाहिए — अब व्यक्ति अकेले सफर करने की इजाज़त नहीं देते

// प्रथमा भूमिका। पञ्चपात्र-चिह्न। पाठशालापात्र, पाठशालावस्तुसंग्रह.
अन्नसन्तान [illegible] - संग्रह

(स्ना.पट.) अभ्यासे द्विर्भूयमानेऽभवति। यथा अहो दर्शनीया हो दर्शनीया इति

. तितं तितोऽभवति। वाज - वेग, अन्न, , । पाकं पचतीति वत एव

॥ आतुः अनुवादः। । अमुपुम्वन् - अमुपासनम्। वर्णोति आशा श्रमः इति

वृत्रो मेघः। दानुः नाम वृत्रमाता। ।॥ आदरार्थ एव वीप्सा।

वन जया तेऽभवन्। अवक्षु। ईक्षीयेरक्षु। कर्मेति करण्वविध

मरुतः देवविशः। ॥ वायुर्हि सोमस्य अग्रपाता। आर्य: कर्मणाम् अनुष्ठाता

दासः। तद्विपरीतः। दस्यु: कर्मणाम् उपक्षयिता। नि - नितराम्।

यथा सूर्यः चक्रम् भ्रामयति। द्विचक्रं हि पूर्वं सूर्यस्य रथः। तस्यैकं चक्रम्

इन्द्रेण अपहृतम्। एकचक्रेणतानेन मेलति इति दक्षिणा। उपयमम् अवयमम्

दत्वा तेऽन्योन्योदीयताम्। बृहद्देवतायाम् इतिहास उक्तः।

> इतिहासः बृहद्देवता
>
> संयुज्य तपसात्मानमैन्द्रं बिभ्रन्महद्वपुः। अदृश्यत मुहूर्तेन दिविचाथाग्नियो
> तामिन्द्रमिति भत्वा तु दैवौ भीम पाकवौ। अनिश्च युयुटिश्चामौ नायुष्यावभिपेतः
> विदित्वा ततयो भाववृत्तिः पापं चिकीर्षितैः या जाता इति सूक्तेन कर्मोद्युज्य
>
> (बृहद्देवता ४. ६६-६७)

लोम्युतेऽयेन इति तौत्रा आतुः।

मण्डल २ का २२ सूक्त (अनागतवृष्टिः) १५ मन्त्र

"वराहवः, स्वतपसो विद्युन्महसो धूपयः श्वापयो गृहमेधाश्चेत्येते ये चेमे अशिमिविद्विषः पर्जन्यः" "सम् पृथिवी ममिव्विधिम्वि रुद्धेभिः (तै. आ १-१. ४-५)

• वज्रहस्त (Iron-hand)

॥ भारतवर्ष में र, अथवा ल ~~में से~~ में से एक को पुनरा और व्यवहृत करता है। रप, लप, रपु, लपु, नाथ नाध / केवल र, ल

द्रविड़	ह्राद, ह्लाद	नाथ नाध	थ, ध
थ/ध		अद, अर्द	सोरफ्राहित हैप्पहित
अद/अर्द		मध मन्थ	लनकाट मिनिकाट
य/ज	युच, जुच भाषते		
त/द		अति, अदि	त, द
			लक्ष्मोट
स श		शक्ति, श्लक्ति, शक्ति	जलकाट
			निलिवाट

✓

पिछले दो सौ वर्षों में संस्कृत की दशा

भारत में	संस्कृतज्ञ	संस्थाएँ
भारत से बाहर	ग्रन्थ	देश
	प्रकाशन	
	संग्रह	
	विद्यालय	

मुलतानी
~~सिन्धिस~~ ग्रहण (स्वा. आ. सं.)
लहँदा

वैयाकरणों के छोटे छोटे उपाख्यान

अर्धं न प्रयुञ्जीत। एकतिङ् वाक्यम्। च त्वा टि पद जातिनि।

अतमाधिः ध्यातव्यः। निपातनात् ध्यातव्यः। [illegible]। मातव्यः।

वैयाकरणों के जीवन में हर्ष संचार। विनोद संचार।

// वैनि न्याधिम्। उपन्याधिम्।

एकधर्म का होना जातियों के परस्पर हेल और पुष्टि में बहुत बाधक नहीं है। हाँ दूसरों के विरुद्ध इकट्ठा होने में सहायक तत्त्व अवश्य है॥

दीप से दीप जलाते रहना चाहिए। अग्नि से अग्नि। स्फुलिङ्ग।

शब्दों के उच्चारण में और अनुरूपता के साथ। विशेषतः धातुओं में (रकारसहित - रेफरहित। नकारसहित - नकाररहित,) ऐसे ही वर्णों के उच्चारण [illegible] तृतीय चतुर्थ वर्णों में परिवर्तन (घम् धम्, नम्, मम् अर्दन) (प - त) (त - श में) न - ण में, (ह - घ) में (अन्त के : के अनेक भेद (:, उपध्मानीय) जिह्वामूलीय, लोप, स, श, ष, र॥ आर (?) । चर्बी - कर्बी में, तर्वी - टर्वी में। व्याधि में भिन्न व्याधि में भिन्न होते हुए भी भिन्न का प्रयोग करना। अन्त में विपर्यय॥

दिवादिगण की ~~[illegible]~~ धातुएं हृष्, मद्, कुप्, दिव्, क्षुभ्, द्रुह्, बुध्, (प - फैलाव का सूचक) (व संकोच का सूचक) पृथिवी और व आयेगा (प्रयाग से पश्चिम की ओर प (विकल्प)

प्रयाग से पूर्व की ओर ———— बंगाल तक ब वृत्ति ————

अव गतौ। अय गतौ। गत्यर्थक धातुएँ बहुत अधिक - जगत् गतिशील संसार - में सृ, जगत् में गति - जो प्रधान, अति प्रधान, स्थिति वाली हों वधो की जातियाँ दो ~~हम~~ सहज होंगे

शालम मल है, ~~[illegible]~~ [illegible] है, (तालरा - तालन है)

२१. १. ६५
गुरुवार.

संकल्प । फाल्गुनी. कृष्णपक्ष । संवत् २० २१. शक १८८६. फाल्गुन

संकल्प.

ओं तत्सदद्येति
अद्य ... प्रवर्तमानस्य ...
अद्य ... प्रवर्तमानस्य ...
अद्य ...

आत्मन: ... तिथि
... तिथि

मादिक
वारिक
तात्विक
लौकिक

गृह्य अग्नि. ... कर्मणि

... राजकीय | ... | दोनों का ... गृह्यसूत्र।

2021
1965 | 1886
56

कर्मणि { औंतदय ... ... | विवाह
शाकल
वाष्कल

अनुक्रम अविरोधि- अन्यतो ग्राह्यम्।
परमतमप्रतिषिद्धम् अनुमतं भवति।

... { विवाह
... संस्कार
उपनयन
केशान्त
... | ... | ...

शिवा वर्जित प्रकृतय।

2021
1965
1886

1965
1886
79

2021
1886
135

2021
1965
56

181

ब्रह्मचर्या. ब्रह्मसूत्रकार कन्यादान
पाणिग्रहण
जीवनसम्पादन

(१) अन्तर्भाव.
(२) अद्वि.भाव.
(४) व्यापक दृष्टि.
(५) उदात्तता
(६) कुलधर्म.
(७) कुलसम्प्रदाय.
(८) स्वाध्याय
(९) ब्रह्मचर्य.
(१०) गो- ब्राह्मणसेवा
(११) दान
(१२) प्राणायाम
(१३) व्यायाम.
(१२) आयुर्वेद
शरीररक्षा.
(१३) उदात्तवृत्ति.
(१४) उत्तम वंशसंवर्धन.
(१५) ऋषि प्रतिनिधित्व.
(१६) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
(१७) यज्ञोपवीत.
(१८) नारिफल.
(१९) यज्ञ
(२०) गायत्री-जप.
(२१) कुलरक्षा.

पञ्चमहाभूत के रस
पञ्चमहाभूतों के द्रव्य
पञ्चमहाभूतों के कर्म औषधि

व्याख्या - वर्ग

रोग प्रतिकार

स्वास्थ्य, आतुर.

अनुपान [illegible] / [illegible]

द्रव्य - गुण - संग्रह ॥

वैशेषिक

द्रव्य - गुण कर्म सामान्य विशेष [illegible]

पठन - पाठन - पर्यालोचना.

रस - वीर्य - विपाक, प्रभाव.

१ धान्य
२ मांस
३ शाक
४ लवण
५ फल
६ पानीय
७ क्षीर
८ तैल
९ इक्षुविकृति
१० मद्य
११ कृतान्न
१२ [illegible]
१३ आहार-विधि
१४ अनुपान
१५ [illegible]

द्रव्य - गुण - कर्म.
आहार द्रव्य - गुण - कर्म विज्ञान. | रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव,

[illegible]

पृथिवी + जल = मधुरः
जल + अग्नि = अम्ल
पृथिवी + अग्नि = लवण
वायु + अग्नि = कटु (चरपरा)
वायु + आकाश = तिक्त (तीता कडुआ)
पृथिवी + अनिल = कषाय (कसैला)

आकाश - शब्द
वायु - शब्द - स्पर्श
अग्नि - शब्द - स्पर्श, तेज (रूप)
जल = शब्द, स्पर्श, तेज, रस.
पृथिवी = शब्द - स्पर्श, तेज, रस, गन्ध

रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द

रसाः परस्परसंयोगात ५६ // षड् प्रकार भोजन

पृथिवी + जल = मधुर (धातुविवर्धन, आयुःकृत, बलकृत, वर्णकृत, [illegible], [illegible], सन्धानकृत, [illegible],
स्निग्ध, गुरु शीत)

जल + अग्नि = अम्ल (रुचिकर, दीपक, मनोबोधन, [illegible], हृदयतर्पी, वातानुलोमन, बल्य, [illegible])
(स्निग्ध, लघु, उष्ण)

अपूर्वाः [illegible] क्रियते। [illegible] द्रव्याणि // [illegible] ।
([illegible]) // [illegible] भवन्ति // [illegible]

न [illegible] - [illegible] भवति ।

[illegible] भवति | [illegible] वहति [illegible] वहति।
[illegible] वहति [illegible]
[illegible] गुणाः। | [illegible] ।

[illegible] | [illegible]
[illegible] | [illegible] ।

लक्षणतः, कालतः, संख्यातः॥ [illegible] किं लक्षणं, किं [illegible] वा संख्या॥

विस्तरः परीक्षितः।

// लक्षणं हि नाम व्यञ्जनानि प्रभृति मूर्धन्यादि नावतिष्ठते।

अत्यन्त बहुमूल्य व्यक्ति अध्यापक और व्याकरण भी पढ़ाना

इसलिए वैयाकरण का [illegible] नितान्त आवश्यक होता है तपस्वी भी

हो वैयाकरणों का परस्पर संघर्ष संभाल करते रहना चाहिए नहीं

तो कुछ प्राप्त नहीं होगा और इतर शास्त्रों को देखते रहना चाहिए

अधिक काव्यानुशीलन से वे विलासी और बहुप्रिय हो जायेंगे।

नेमि
आरे
नाभि

// व्याकरण विषय को रोचक बनाना चाहिए

1 कविताओं के ओर दृष्टान्तों को प्रस्तुत करना

2. [illegible] (नामलिङ्गानुशासन) अमरकोश के शब्दों का प्रयोग करना

(3) [illegible] - [illegible] - [illegible] के मुख्य मुख्य पर्यायों का प्रयोग करना

(4) [illegible] करना

(5) पद्य शैली के वाक्यों का प्रयोग करना

स्पष्टता अध्यापन की आमभूमिका

1) व्यवहार
2) बोध
3) व्याकरण
4) वैयाकरण
5) वैद्यक
6) नाना लोक व्यवहार
7) [illegible] लोगों के साथ और उपक्रिया
8) एकाग्रता
9) किसी बात में [illegible] अध्यापक

नहीं तो वस्तुविशेष।
पदविशेष
धातुविशेष से
अध्यापक [illegible]

व्याकरण अध्यापक को
छोटे अध्यापकों का बहुत सहयोग
प्राप्त करना चाहिए॥
([illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible])

पढ़ाना चाहिए।

(10) व्याकरण कई भाषाओं में [illegible]

(11) [illegible] पढ़ाना चाहिए

(12) केवल [illegible] द्वारा वस्तु के [illegible] [illegible] नहीं [illegible] बहुमूल्य जायेगा इतना [illegible] जायगा॥ // अध्यापन आवश्यक और [illegible]

महाराष्ट्र की Social Reform in the British Period.

R.C. Majumdar.

भारत का स्वतन्त्रता संग्राम.

C. Y. Chintamani.

एनी बेसेंट.

काँग्रेस का आरंभ इतिहास। पट्टाभि सीतारमैया

पट्टाभि - सीतारमैया.

क्रान्तिकारियों के संघर्ष का इतिहास.

आर्य समाज

ब्रह्म समाज

लोकमान्य तिलक

विवेकानन्द की [illegible]

गांधी

विनोबा

अरविन्द

विपिनचन्द्र पाल

लाजपतराय

विनय कुमार सरकार

मदनमोहन मालवीय मुस्लिम लीग का इतिहास

आत्मा हि परमात्मा ऽ श्रुतिते। विशेषता से सामान्य का बोध। नदी। अग्नि प्रकीर्तितम्। रवि, इन्दु, कवि, अग्नि॥ कुमारसम्भव में आचार्य हैमचन्द्र, [illegible] में भी [illegible] के ग्रन्थों में दिए गए हैं जो अर्थ [illegible] दिए हुए होंगे॥
[illegible] और आचरण के [illegible] (सत्य का [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]) [illegible] - [illegible] लोग [illegible] जमीन में भी [illegible] के [illegible] प्राप्त किए [illegible]

// शासन कार्य शील वर्ग चित्तों को दबाकर मानव विकास की ओर ले जाता है शासकों को नमस्कार है। नहीं तो काम क्रोध, ईर्ष्यादि विकार अन्दर ही अन्दर मनुष्य को खा जाएँ॥ //

// भारत का ब्राह्मण जो तपस्या करता है। वह राष्ट्र उठाता है॥

अनार्य - विवाह - [illegible]

अनादि - आचार

अनादि शास्त्र मध्ये दृष्टव्य.

अधिमात्रा कालोऽवग्रह इष्यते॥

पाश्चात्य जगत के पंडितों ने विद्या के लिए महान् परिश्रम और तपस्या की है। हमारे उन से जो [illegible] अभी [illegible] हैं उन का आदर मान करना चाहिए ऐसी ही एक उन्होंने की है॥

१ परम्परागत चिकित्सक – आदिवासी – ग्रामीण समाज का प्रभाव
2. इन लोगों की निन्दा, उपेक्षा, संशय, कौतूहल रखनेवाली वृत्ति
3. की प्रवृत्ति बदल देना चाहिए
४. योजना पूर्वक इन विद्या की रक्षा करनी चाहिए
५. आदिवासीओं ने यह काम बहुत अच्छा किया है
६. उनमें भी आदिवासी समाज आगे रह पाये हैं
७. आयुर्वेदियों में अब भी परम्परागत विद्याओं के लिए आदर है
८. इनके साथ सहयोग और सहृदयता से ही काम लेना चाहिए.
९. इनके साथ मुलाकात करके दस्तावेज करनी चाहिए
१०. अनुभव पर अधिक बल देना चाहिए भेद पर थोड़ा.
११. हाँ अपनी पृथक् सत्ता खोनी नहीं चाहिए.

कैयट, नागेश विना महाभाष्य, वार्तिक विना अष्टाध्यायी समझ में नहीं आ सकती ॥

अर्थान् संगच्छन्ते । ठीक नहीं बैठता ॥ संगति नहीं बैठती।

// बाधकानि च निपातनानि भवन्ति । (सर्वादि सूत्रे पठितानि)

विकार – उपजन —— लोप.

अन्यथाकृत्वा   कृत्वा   अकृत्वा

कटुतिक्तकषायाणाम् विपाकः प्रायशः कटु, अम्लोऽम्लं पच्यते स्वादुर्मधुरं लवणस्तथा। | कटुतिक्तकषाय का कटु, अम्ल का अम्ल, मधुर और लवण का मधुर

द्रव्य, कर्म, रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव

॥ चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः
श्रुति प्रतिपादित धर्म
स्मृति प्रतिपादित धर्म

मनसा - वाचा - कर्मणा.
सात्त्विक — राजस — तामस
शारीरिक - मानसिक - उपासनात्मक.
दर्श-पौर्णमासादि ——— अश्वमेध पर्यन्त

पुमान्
स्त्री
समाज
राजा
प्रजा
गुरु
शिष्य
ब्राह्मण
क्षत्रिय
वैश्य
शूद्र
ब्रह्मचारी
गृहस्थ
वानप्रस्थ
संन्यासी.

पञ्च - महा - यज्ञ.
इष्टापूर्त.
इष्ट - पूर्त.
दान - तपः यज्ञ.
तपः शान्ति - धर्म. दान
मेधा-ह्रास
आयु क्षय.
वीतराग - सर्वोत्तम
सर्व कर्म - त्यागात्मी.
"संन्यास मार्ग" — "मीमांसा"
"ज्ञानमार्ग" प्रत्यवायमित्
रुद्र कल्प-द्रुम. नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त, काम्य
अधिकारी (शुचित्व, कामनायाः। प्रत्यवायः।
नित्यादि दैवकर्म
पितृकर्म

(अधिकारी)
(१) शुचित्व (२) शक्ति
(३) उपवास
(४) स्नान
(५) प्रातः सन्ध्योपा
(६) अहत - अधौत उत्तरीय

धौतिवस्त्रपूर्वं उक्तियुक्तं आचम्यायात।
आधिदैविक | शिरः स्नात.
आधिदैविक. | प्राङ्मुख.
निषिद्धोदित. | उदङ्मुख
मलः परिमृज्यते | श्मश्रु वर्ज.

कुस्नातः समयागमात् घृतजल्यादि कक्रियः। काम क्रोध विहीनश्च पाखण्ड स्पर्शवर्जितः।
जितेन्द्रियः सत्यवादी सर्वकर्मसु शस्यते॥
सक्षारं तैलवाचकम् नाचितो ... तथा
पञ्चमः धर्मशास्त्र ... शिल्पिभिः मताः।

तिल | कम्पित
आमलक | शोचित
उद्वर्तन (उबटन) | ज्वालित
अभ्यङ्गपूर्वक | परिधानम्
कृष्णतिल | धौत (धातुमति ...)
औषधि-गन्ध-चूर्ण | अधौत
काषा (पत्नकृत) ...

नित्यं शुद्धः कारुहस्तः.
अधौत - अजल.
ईषद्धौतम्

सर्वगन्धाः (कुङ्कुमागुरु कर्पूर कस्तूरीचन्दनं तथा। जातीफलमिति प्रोक्ताः सर्वगन्धाः सदा बुधैः॥
मध्याह्नोत्तर ... (स्नानमिष्यते)
सकृद्धौतम् (स्वयं धौतं कर्तव्यं क्रियाधर्मविपश्चिता। न तु नैजकधौतेन नापि सुधौतेन वा
नैजकः रजकः | ईषद्धौतं शिल्पिधौतं दूषितं धौतमेव च।
निर्णेजकः। | अधौतं वस्त्रं संस्पृष्टं पुनः प्रक्षालनात् शुचि।
शयनीय
स्नान
देवार्ची
लघवाशी
... मलिन ...

~~अध्यक्ष~~
शाप
क्षौम
आविक
कुतप
योगपट्ट

नैपाल कम्बल:

जपताम् जुह्वताम् चैव विनिपातो न विद्यते।

नीवी

कक्ष.
कक्षा - पश्चाद् अञ्चलम्

शरीरत्व
शरीर
उपवास
ज्ञान
व्रत, नक्तोपवास
अहत अपरीय
उत्तरीय
{ उपवीतित्वम्
{ बद्धशिखित्वम्
सन्ध्यापरिकर्मोपासन
आचमनम्
भूत प्राणायाम.
नारायणनीति
व्रत संकल्प.

द्विवासस्
आर्द्रवासस्
जप
होम
प्रतिग्रह
शुष्कवस्त्र
आर्द्रवासस्
बहिर्जानु
अग्निहोत्र
जप
सूर्य
योगक्षेम
पवित्र
हव्य (अग्नि से देवों को)
कव्य (पितृगण को अर्पित वस्तु)
उत्सव (अन्नदान, दिवाली, मेला, तैल —

यत्करोति न तत्फलम्।
वैगुण्यं भवति
अपवित्रत्वं भवति उपासना:
प्रतिनिधानम् (आलय
यथाविधानम् प्रतिमन्त्रं उपादद्यात्।
अध्यवसान
मुख्यस्य अभावे - प्रतिनिधि:
मुख्य है :

~~आचमन~~ अनुकल्प

उपगृह्य
वेदपाठित
अथ स्मृतीभिर्भवति
गृहीत्वा वादतम्.
आचमन
दान
यज्ञ
तप
स्वाध्याय
जप
ध्यान
संध्योपासन
प्राणायाम
होम
देव
पितृ
मनुष्य
ब्राह्मण
भक्ति
छन्द
देवता
विनियोग
सूत्र
कल्प

निष्कल
आवीत
प्रकृति =
नम्र

प्रावरण
अवगुण्ठन
अवगुण्ठन
अप स्पर्श.
आचमन.
पञ्चमाचमन.
मूत्रशुद्धि:
उच्छिष्ट
अथात आचमनम्, कुलालचक्र सम्पन्न।
(ना आचमनम्।)
माहेश्वर
उपस्पर्शनम्
= आचमनम्
बि, ऋ, मिश्र.
प्रतिनिधि:
प्रतिपादनम्
उपवीत
आवीत
प्रतिता
परिमुखक
= योजना अनजापि.
अनोपान - अनुज्ञ
(वाच्येत लोकौ मित्र)

अम्बर.
पीताम्बर
चित्राम्बर
श्वेताम्बर
प्रतिलम्बवे
विवर्णानि वस्त्राणि
पीतवर्णानि वस्त्राणि
धारयति वस्त्राणि
अलम्भूत नासिका
अहोरात्र. (दिन-रात)
नीली रङ्ग.
कौशिक कर्माणि.
एकवस्त्र
देव
पितृ
हव्य
कव्य
जल
उपवीत
अग्नि
जलपात्र परिवेष्टन
परिमित.

अधिवर्ष: कृष्णभूमि: ऋतवन्
मध्यं वित्रयापमालयो: ऋताभिषेक
विप्राणामग्रे पुनर्भवि:
विप्रोऽभ्यो वृणानि
कालतत्त्वविवेचन
ऐन्द्री पूर्वा
सौम्या उदीची
अपराजिता ऐशानी

परिमुख
उपवीत
अनुलेप
अनुगत
अनुयुक्त.

(१ भारतवर्ष के महत्वपूर्ण ... कैसे बनते हैं ॥ उनके बनने बनाने के स्थान —
कौन कौन हैं, होलिका कैसे बनते हैं ॥ मठ। शाङ्करमठ मथुरा
काशी, नवद्वीप, कुम्भकोणम्, पूना, वाई ॥
अयोध्या। नासिक। मीमांसाविद्यालय ॥

इध्मः

पलाशखदिराश्वत्थप्लक्ष वैकङ्कतोद्भवाः। वेतसोदुम्बरौ बिल्वश्चन्दनं सरलस्तथा।
शालश्च देवदारुश्च खदिरश्चेति याज्ञिकाः।

अरत्निमात्र। अङ्गुष्ठपर्ववृत्त। आज्यश्च प्रतिनिधि गव्यम्।

घृतं वा यदि वा तैलं पयो दधि च यावकम्। तत्संयोगादेतेषु आज्य शब्दो विधीयते।

पूर्णपात्र - पात्रम्, अष्टपञ्चाशदधिक मुष्टि शत ~~द्व~~ द्वय परिमितम् (२५६ मुष्टि)

अष्टमुष्टि = किञ्चित — ८ × ८ × ४ = <u>२५६</u> मुष्टि

किञ्चिद्द्वे = पुष्कल

४ ~~पुष्कल~~ पुष्कल = पूर्णपात्र

<u>उत्पवन</u> (उत्पुनाति।

प्रक्षिपति।
पर्यावर्तयति

वेदः। ग्रथित कुशमुष्टि विशेषः।

प्रोक्षणं प्रोक्षण्या

उद्वासनम् उल्लेखनम्
अवतारणम्

अवलोकनम् <u>अपद्रव्य</u> निरसनार्थम्

अपराद्धः:
अपपात्र:
अपद्रव्य.

चुलुक

संस्रवस्थापन

होमद्रव्यः

स्रुवाहुतिः

हस्ताहुतिः

किञ्चित् परिशेषणीयम्

प्राशनान्ते आचमनम्

परिसमूहनादि पर्युक्षणान्तः

पूर्वाघारः प्रजापतये स्वाहा (मनसा)

उत्तराघारः इन्द्राय स्वाहा

आज्यभागौ { अग्नये स्वाहा (उत्तरपूर्वार्धे)
सोमाय स्वाहा (दक्षिणपूर्वार्धे)

स्वाहाकारप्रदाना जुहोतयः॥

संहितायां ~~स्वाहान्तत्व~~ स्वाहान्तत्वेन पठिते
मन्त्रे तु द्वितीयं स्वाहान्तं न कुर्यात्।

सर्वे होमाः जुहोतिना कर्तव्याः॥

परिसमूहनम्,	अग्न्युपसमाधानम्, पवित्रकरणम्,
अनु उपलेपनम्,	अग्निदाधानम् आज्यनिर्वापः,
उल्लेखनम्,	अतः संप्रोक्षणम्, स्रुवप्रतपनम्,
उद्धरणम्,	ब्रह्मासनम्, उत्पवनम्,
अभ्युक्षणम्	प्रणीता प्रणयनम्, पर्युक्षणम्
	प्रणीता पूरणम्

मण्डल २ सूक्त २७ मन्त्र.

सूर्यदेवतम् (मित्र अर्यमा, भगः, (तुविजातः वरुण) (दक्ष अंशः)

मित्र, अर्यमा, भगः, वरुण-, अंशः

तैत्तिरीय आ. १.१३.३) मित्रश्च वरुणश्च धाताचार्यमा च अंशश्च भगश्च इन्द्रश्च विवस्वांश्चेते । अदःप्रभृतिः = आदित्याः स्थावर-जंगम, पयोमु - कुदेवम्पावयेत् । वजी वजीते ॥ [illegible] ॥

भू, भुवर्, स्वर्, महर्, जनर्, तपर्, सत्यम्

रसादान	व्याप्य	विसर्जन
भूतक	कुम्भक	रेचक
विद्या + आगम	विद्या-व्याख्यान	विद्या-प्रवचन.
वीर्यधान	वीर्य-व्याप्य	गर्भ-मोचन.

नाम इति प्रसिद्धि ख्यायते ॥ पेश प्रपेते।

धातुपाठ विनोद:

// रकार और लकार का विकल्प / जातियों की प्रवृत्ति व्यक्तियों की प्रवृत्ति

गृज, गञ्ज, गर्ह, गल्ह ॥

// क्या धातुएँ आन्तर क्रिया की अनुकरण, अनुध्वनि भी होते हैं । या आन्तरक्रिया या और उसकी बाह्यक्रिया का [illegible] अथवा यह संकेत मात्र ही है ॥

चेट्, अतिट्, चेट् धातुएँ

सकर्मक अथवा अकर्मक अर्थ हैं

लकारादि अथवा शकारादि

बकारादि - अथवा वकारादि

कारप्रश्न अथवा लकारप्रश्न.

आत्मने पद अथवा परस्मैपद.

(अ) प्रान्तीय भाषाओं के साथ साम्य, [illegible]

(आ) तत्सम शब्दों के मात्रा में समानता

(इ) फारसी, लैटिन आदि भाषाओं से साम्य

(ई) उनमें परस्पर साम्य नहीं रहता. संस्कृत से साम्य है - भारत में संस्कृत ही है - इन सब की और संस्कृत की भी मातृभूत कोई इतर भाषा होगी है इन्हीं के इतर लक्षण, सुलभता गौरव हैं।

(उ) पंजाबी, मुलतानी, पंजाबी से साम्य.

(ऊ) पश्तो और बलोची से साम्य ढूँढना चाहिए

धा.पा.वि. (धातुपाठविनोद)

// निरुक्त व्याकरण, भाषाशास्त्र की व्याकरण के बिना व्याकरण ब्राह्मणों के बिना - जब शास्त्र आकुलीभूत हो जायगा ।।

(अ) उच्चारण न अति विवृत (पंजाबीका)

(आ) उच्चारण न अति संवृत (बंगालीका)

(इ) मुख निरुक्त आदि दोष.

(ए) धातु पाठ चर्चा.

धातु-पाठ-विचार

धातु-पाठ-विनोद

धातु-पाठ-विनोदामोद.

धातु-पाठ-विमर्श.

॥ व्याकरणे वदे वचन. "जहत्स्वार्था तु तत्रैव यत्र रूढिर्विरोधिनी"

जहत्स्वार्था वृत्तिः। अजहत्स्वार्था वृत्तिः॥

आदेश उपदेशे भवितिति।॥ दो - देङ् - घेट्॥ "प्रकृतिवदनुकरणं भवति।

सर्व पदेभ्यो मध्ये दीयो न तमेक श्लोकः॥

वर्ण-समुदायः पदम्. पदसमुदायः वाक्यम्. वाक्य समुदायः सूक्तम्।

प्रातिशाख्ये सूक्ते काण्ड.

॥ वाक्वाग्बुद्धि-विषयाः ये मलाः समवस्थिताः। चिकित्सा-लक्षणाध्यात्मशास्त्रैस्तेषां विशुद्धयः।
वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड. ॥ १७४

मनुस्मृति - व्याकरण - आयुर्वेद.

अध्यात्म विशुद्धि, वाक् विशुद्धि, काय विशुद्धि.

(योगदर्शन - महाभाष्य - चरक) पतञ्जलि.

प्रथमं आठवर्षीतक

ग्रन्थ - प्रकरण -

(१) मूलाष्टाध्यायी
(२) पदच्छेद अर्थवृत्ति
(३) अष्टाध्यायी लघुकौमुदी.
(४) सुभाषित
(५) रीडर
(६) हितोपदेश - पञ्चतन्त्र.
(७) द्रव्यगुण संग्रहः (नवनीत)
(८) पाणिनीय शिक्षा.
(९) इंग्लिश संस्कृत प्रबन्ध
(१०) रीडर
(११) प्रतिसंहिता
(१२) तर्क संग्रह
(१३) न्यायदर्शन.
(१४) परीक्षा पर्यालोचन.
(१५) ऋतु परिवर्तन
(१६) ऋतु प्रभाव.
(१७) सुभाषितानां ज्ञान संग्रहः
(१८) लोकनीति (चाणक्यनीति
(१९) विदुरनीति
(२०) आयुर्वेद हितोपदेश (भोजनप्रथम)
(२१) गृहलेपन.
(२२) कृषिकर्म
(२३) यज्ञपात्र.
(२४) द्रव्यगुण - पदार्थ मञ्जूषा.
(२५) आचार्यविषयनिदर्शन
(२६) तन्तुवयन
(२७) कुटीनिर्माण
(२८) वैद्य परीक्षा-शाला-दर्शन
(२९) जलोत्पादन, आत्मप्रयोगार्थ.
(३०) मनुस्मृति
(३१) गोपालन.
(३२) यज्ञोपवीत निर्माण
(३३) शब्दरूपावलि
(३४) धातुरूपावलि.
(३५) गणित, भूगोल, इतिहास.
(३६) स्वास्थ्य चर्चा.
(३७) Hygiene Physiology
(३८) देश - दशा.
(३९) भाषण पाटव
(४०) व्यायाम,
(४१) मल्लविद्या.
(४२) आधुनिक N.C.C.
(४३) गुरुसेवा
(४४) वस्त्रप्रक्षालन.
(४५) शिक्षा - पद्धति तुलना.
(४६) आर्ष - मौलिक
(४७) पत्रिका पाठन
(४८) बोर्ड का उपयोग
(४९) सम्मार्जन
(५०) मेलाहरण
(५१) पुस्तकालय
(५२) उपनिषद् स्थान सूची.
(५३) आयुध
(५४) महायज्ञ
(५५) सम्प्रदाय
(५६) पुराणपाठ.
(५७) पाकविद्या.
(५८) उपवनविनोद.
(५९) जलक्रीडा,

(१) भारत की नवीन जागृति
(२) संस्कृत की प्रथम भूमिका
(३) धातुपाठ चर्चा
(४) श्री कृष्णार्जुन नीतिम्
(५) कः देशभक्तः
(६) देशभक्तेः अङ्गानि तत्त्वानि.
(७) (भारतस्य हृदयम् [illegible] नामि. [illegible])
(८) ~~अहं~~ तव लोकमान्यः किम् दर्शनम्
(९) त्वं किं लिखसि. (कः लोटः ?)
तव विनोदो [illegible]:
लाट:
(१०) [illegible] गुरुं मन्येत ॥
(११) यूरोपियन लोगों को हिंदी पढ़ाने के अनुभव।
(१) सहृदयता
(२) समयपालन
(३) नियमानुसार
(४) स्त्री मान.
(५) प्रारम्भिक प्रश्नोत्तर
सूत्र ✓
दक्षिण हिंदी प्रचार सभा की पुस्तकें
बम्बई वाली Sharma
छोटी मोटी.
अहिंदी भाषियों को :
व्याख्यान
विज्ञान भाव
हलका भोजन.
समाचार पत्र
साप्ताहिक हिंदुस्तान
समोदी [illegible]
बाहर का बोध.
हैजा पेचल
कहानी
फल क्या किया
वनौषधि शब्द
बाहर ले आना.
डिक्टेशन
गीता प्रेस की पीडी
कुछ दोहे
आलोप
समसामयिक बातें
उनके देश का हाल
शिक्षा-पद्धति
उत्तम विद्यार्थी का जीवन चरित.
अमेरिकन [illegible].
अभ्यास.
[illegible] पाठ.
पाठ पढ़ना
पुनरावृत्ति.

क्रिकेट की बातचीत लेनदेन.
विश्वविद्यालय
सेवा. मण्डी.
सिनेमा ले जाना
सरल हिंदी
हिंदुस्तानी
व्यावहारिक उर्दू शब्द
धातुएँ ~~बातचीत~~
Infinitive
सकर्मक
अकर्मक
सकर्मक में अपवाद
लीजिए, दीजिए पीजिए कीजिए.
भूलना (मैं भूला)
लाना (मैं लाया)
Tense & moods,
यूरोप में भी ... प्रचलित है
शील वर्ग की grammar
माँ-बाप [illegible] गुरु.
[illegible] नमस्ते माँ
विद्यार्थी का जीवनचरित
[illegible]
पेशा.
पेशा, शिक्षा [illegible]
शिक्षा पद्धति
साधु साधु पूर्ण रचना.
[illegible]
रेडियो सुनना
[illegible]
कि [illegible] चाहते मिलना
चाहते हैं
नाना महाल [illegible]
[illegible] देश में घूमे.

Hobby क्या है
[illegible] क्या है
[illegible] प्रेम.
छुट्टी [illegible]
स्वयं नियमपालन
पाठ का [illegible]
Recapitulation.
भारत के भक्त में
पुनः [illegible],
दूसरे अध्यापकों से
[illegible].
उत्तम बोध (शब्द)
[illegible]
[illegible]
भले हो जाए.
Wood
[illegible]
Grey
Mr. Makepeace
Mrs. Makepeace
Mrs. Guy
Mr. Steelwell
Mrs. Steelwell
Major [illegible]
Mr. Todd Trott [illegible]
Duffy. [illegible]
[illegible].
Mr. Stepanek
Mr. Stock Mr. Green
Johnson Mrs. Green
Lewis Mrs. Park
Dr. Reane
Canadian.
Stolt. Dr. Gold
French. Smith
~~Herd~~ Hunt.
Mr. Hard Mr. Koralh
Sherpe [illegible]
Stat. [illegible]
Mrs. Stepr Mr. Bl[illegible]
Mrs. Stepr Mrs. Bl[illegible]
Miss Rudi
French
Knights
Tay[illegible]
Catholic
British

ऋ. मण्डल 2 सूक्त 28. ([illegible] अपने पुनः [illegible] की, अतः अपराधस्य
वाक्यसूक्त (
८ इदं मे [illegible] वारुणं मयपापकृतम् । अथवा दारिद्र्य दुःस्वप्ननाशनं चेति शुभम् ।
[illegible] वर्तमानः सूर्ये पश्यन् [illegible] जीवेयम् ॥

स
मी.धा.वि. स्वचनम् (सुदर्शन / [illegible] ([illegible] , [illegible] अज्ञानमूल
अतिशय मूलक.

धातुपाठ विनोद

(१) कितना विशाल कोश है
(२) भिन्न २ देशों में व्यवहृत हैं
महान् शब्द प्रयोगविषय है
जम्बूद्वीपा वसुमती
(३) हमने कितना लिया है
(४) धातुओं के प्रकार
सकर्मक, अकर्मक, द्विकर्मक.
उदात्त, उदात्तेत्
अनुदात्त, अनुदात्तेत्
उदात्त, अनुदात्तेत्
अनुदात्त उदात्तेत्
~~अनिट्~~ स्वरितेत्
सेट्, अनिट्, वेट्,
(५) दशगणों का ज्ञान
(६) मातृभाषा के [illegible]
(७) व्युत्पत्तिपूर्वक पढ़ना
(८) तिङ् प्रधान या कृत् प्रधान
(९) नीति, कर्मों को समझाना.
(१०) [illegible] लोगों के पूछने पर देना.
(११) नानार्थ (निरुक्त, व्युत्पत्तिबोध.
(१२) अर्थों में सूक्ष्म भेद
(१३) [illegible] स्वयं धातु के लक्षण हैं।
तटस्थलक्षण, स्वरूपलक्षण
(१४) अपने आप में विश्व है।
माधवीया धातुवृत्ति
(१५) आधुनिक अंग्रेजीदां लोगों ने कुछ अर्थ स्पष्ट किये हैं
आपटे - मोनि आदि ने
(१६) अपनी अपनी मातृभाषा में
(१७) डॉ. [illegible] का हिन्दी संस्कृतकोश

१८. संस्कृतहिन्दी (द्वारकाप्रसाद [illegible] १९)
१९. [illegible]
२०. व, ब
२१. य, ज.
२२. क्या [illegible] , [illegible] प्रकाशन में कोई [illegible] है
२३. निगमन।
२४. अर्थों में सूक्ष्म भेद
२५. क्रियाप्रधान होना, नाम-रूपा बनाना, भू, कृ के प्रयोग से [illegible]
२६. [illegible]
२७. भ्वादि, चुरादि की [illegible] धातुएं
२८. भ्वादि, दिवादि आकृतिगण भी हैं
२९. [illegible] — [illegible] सर्ग.
३०. यौगिक, रूढ़ि, या [illegible] यौगिकरूढ़.
३१. [illegible]।
३२. [illegible] की अविवक्षा
३२. सिन्धी, गुजराती, बंगाली के [illegible]
३३. पं. [illegible] मण्डल, डॉ. [illegible]
३४. [illegible]
३५. पतञ्जलि कालीन भारत [illegible]
३६. [illegible]

३८. ण्यन्त प्रयोग में
'णिङ्'त्व की भावना
अन्तर्निहित है

३८. चौरादि, कण्ड्वादि, धातुएँ

३९. नामधातु।
॥ सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विप्
लोपश्चास्य धातुरेव वा आचारे
२. १.

४०. कितनी धातुओं की वार्तिककार
ने दे दी हैं।

४१. अलौकिक वानरेन्द्र
विद्या-विनय सम्पन्नता
सदा परिदृश्यते।
सदा। मिलता।
तद् विरुद्ध [illegible]।

४२. वद - वदाचादि की छाया।

४३. पक्षियों की बोलियों के लिए धातु

४४. पशुओं की बोलियों के लिए धातु।
रम्भाना, हिनहिनाना, कूजना ....

४५. अनुकरण धातुएँ

४५. ध्वनि को [illegible]
[illegible] करते जाते हैं, और
[illegible], [illegible], [illegible], देश भेद से
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
आदेश

४६. अंग्रेजी के ह की ध्वनि से -
[illegible] जाना।

४७. पंजाबी का भ

४८. उर्दू का हल्का करना
सम्हालना, सम्भालना।

४९. नजारत, [illegible]

५०. ब्रजभाषा का ल को र
बोल - बोर

५१. [illegible], [illegible] र को ल।
[illegible] [illegible]। अथर्ववेद
अनुनासिक।
[illegible], अथर्ववेद अनुनासिक।
रोटी, - लोटी।

५२. र, ल, ड, का अभेद।
व ब
य ज
श, स।
अभेद।

५३. यह प्रकृति स्वभाव है ॥

५४. श्रीमान् [illegible] के
[illegible] को
[illegible]।

५५. [illegible]
द्वारा। [illegible], [illegible], [illegible],
[illegible]। [illegible] [illegible]
लेजाना।

५६. [illegible] को [illegible] —
[illegible] [illegible] को
पं. [illegible] को

५७. अभी हम उपसर्गों को छेड़ते
नहीं विषय बहुत लम्बा
होजायगा।

५८. बहुत [illegible] तो [illegible]।

५९. पं. [illegible] जैन को
[illegible],
मोतीलाल बनारसीदास।

६०. [illegible] [illegible] आदि।

६१. [illegible] तो पहल करेगा।

६२. अंग्रेजी की आवश्यकता को
कम करना चाहिए।

६३. हम ही [illegible] [illegible] तो
[illegible] तो [illegible] हो जाएँगे

६४. [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]
संस्कृत
केवल [illegible] भाव भी

६५. — [illegible] और [illegible] द्वारा
[illegible] [illegible] [illegible] भी
[illegible] करते हैं धातुओं में
[illegible] [illegible] रहे

६६. [illegible] धातुओं का क्रियाओं का प्रयोग
आयुर्वेद में अधिक है

६७. [illegible] के विकार के [illegible]
अधिक हैं। [illegible] और
[illegible] के लिए और [illegible]।

६८. [illegible] और [illegible] में धातुओं
की छटा देखते ही बनती है ॥

६९. यों प्रतिभा के [illegible], [illegible]
और महाभाष्य में भी प्रसिद्ध हैं ॥

७०. [illegible] [illegible] [illegible] है, आदेश
और दर्शन कीजिए —

७१. पं. परमेश्वरानन्द, पं. [illegible], पं.
[illegible], पं. भगवद्दत्त पहुँच सके

७२. पं. [illegible] [illegible] सलाह करना।

७३. वैदिक = [illegible] [illegible]
धातुपाठ — [illegible] में [illegible]।

(७४) धातुपाठ का पहले का वर्ण होता है
वैदिक व्याकरणों में कहा धातुपाठ है।
पु

८६. अल धातु और अलम् के अर्थ समान ही है।

७५. Concordance of Sanskrit धातुपाठ।
G.B. Palsule M.A.
Deccan College Dissertation Series.

८७. २२ उपसर्ग
आठे वर्ग । [illegible]

७६. डा. त्रिवेदी की वेदि प्रस्ताव

८८. इ का निवृत्ति - इकार
अपवाद / संयोग-वियोग।
लोप - अलोप

७७. [illegible] की ... तो अभी दूसरी है

८९. भिन्न २ व्याकरणों के धातुपाठ
कलापी
हैमशब्द शब्दानुशासन
सारस्वत व्याकरण [illegible]
माधवीया धातुवृत्ति।
प्रचलित अर्थ, [illegible]

७८. धातु रत्नाकर। ३२६.
मुनि लावण्य विजय
जैन ग्रन्थ प्रकाशन सभा
अहमदाबाद।

७९. डा. [illegible]
पुरातत्व विभाग
[illegible]

९०. धात्वर्थः = भाव = क्रिया।
प्रातिपदिकार्थ = [illegible], द्रव्य, लिङ्ग, संख्या कारक।
धात्वर्थ = क्रिया, काल, पुरुष, वचन संख्या।
फलव्यापारयोः
आख्यात, तिङन्त
दोषा - [illegible] अर्थों का
गुण।
Dictionary of Sanskrit grammar
१९६१ ९९३, ९९४ [illegible]
पुरातत्व [illegible] प्रकाशन
[illegible] प्रकाशन
मोती
हेमचन्द्र
जैन ग्रन्थमाला [illegible]
बौद्ध ग्रन्थमाला [illegible]

८० क्षीर तरङ्गिणी।
धातु पाठ (क्षीरस्वामी

८१ व्याकरण शास्त्र का इतिहास
युधिष्ठिर मीमांसक।

८२. पाणिनिकालीन भारतवर्ष
पतञ्जलिकालीन भारतवर्ष

८३. शब्द कल्पद्रुम
वाचस्पत्याभिधान
माधवीया धातुवृत्तिः
सिद्धान्त कौमुदी की
टीकाएँ

८४. अर्थ की व्यवस्था [illegible]।
आप्टे वामन
[illegible] (विनायक)

८५. सिद्धान्तकौमुदी [illegible]

[illegible] पतञ्जलि महाभाष्य [illegible]

अस्ति । आह। गच्छति ब्रूहि पलायते
आसीत् आस। भवति भवतु प्रभवति
आसि एहि पश्य पश्यति प्रैति
अस्तु कृत्वा प्रसज्य विधीयते द्योतित

// भारत में सबसे अधिक प्रभावोत्पादक नगी ब्राह्मण
// ब्राह्मणों में भी और ज्योतिषी, ज्योतिर्विद्
होना चाहिए या नहीं यह दूसरी बात है॥

(संस्कृत) गोष्ठी — हिन्दी गोष्ठी — [illegible] (English)

"सर्वोत्तमा सत्कुल-प्रसूत-मूला"

about आमित:

संस्कृत का महापण्डित होना बड़ा कठिन है। व्यापकता — नाना शास्त्र विचक्षणता और शुद्ध ज्ञान — स्खलन रहित तर्कभाषा ने ठीक कहा था स्थिर प्रज्ञा (संशय, भ्रम, अज्ञान, तर्क से रहित।

// गोष्ठी ~~स्प~~ संवाद संभाषा विगृह्य संभाषा नहीं } जल्प, वितण्डा, तर्क-वितर्क से रहित।

९१. धातुओं में इत् वर्णों का प्रयोजन।

९२. इसके अष्टाध्यायी स्वरूप। धातुपाठ, गणपाठ को मान कर ~~आ~~ अष्टाध्यायी चलती है

९३. सार्वधातुकोपपाठ अब चले आ रहे हैं इसके वास्तव अर्थ संग्रह नहीं है। यदि प्रयोग-विषय का आलोडन करके इसके वास्तव अर्थ संग्रह होजाते तो बहुत अच्छा होगा।

९४. ये धातुएं कौन की होती हैं। ये बीज हैं इन्हीं से फल०वृक्ष-फल बनेगा।

९५. सर्वधातुभ्यः, तद्, त्यत्, ष्ट्रुल, अम, ल्युट्, ति, यत्, शतृ, ण्यत्, क्विप् —

९६. बड़ा संशय रहता है। धातु सकर्मक रहे हैं अथवा अकर्मक, धातु किस गण की हैं, सेट् है अनिट् है वा वेट्, धातु य, ज, व, ब, ए, ल, ष, ष, ष किनकी है।

९७. इसलिए इनमें महाकवियों का काम अद्भुत है॥

९८. बिना इसको दीए किया या अव्यय अर्थ कैसे सामने आ सकता है॥

९९. यह निबन्ध बिन्दु मात्र है— सामने समुद्र पड़ा है।

१००. पुरातत्वविज्ञों प्रकाशालय में धातुपाठ जाहिए)

१०१. जैन-बौद्ध धातुपाठ की बहुत उपेक्षा है— विदेशी लोगों के प्रयत्नों की प्रतीक्षा ~~अपेक्षा~~। भविष्य॥ कुछ काम अथवा औचित्य लाना चाहिए

१०२. ~~अत्र~~ कवियों का क्रम और प्रक्रिया=प्रत्यक्रम दोनों का मिलान ~~दोनों~~ [illegible]॥ साथ साथ दोनों।

न्याय: (स्वार्थिका: प्रत्यया: प्रकृतितो ऽविशिष्टा: भवन्ति" ३३३ पृष्ठ (१.१.६ आदेश्य
लिङ्गवचनानि नातिवर्तन्ते

तादर्थ्यात् ताच्छब्द्यम् (३३१ पृष्ठ)

शिष्ट इतिहासविनाश।

१९४४ | भीमसेन-पाठ / सिद्धेश्वरशास्त्री चित्राव। | धातुसंख्या १९४४
मद्रास मैसूर में प्रचलित | सौत्रधातु ७
१९४३ | कण्ड्वादिधात्वधातु ३९
नामधात्वा: धातव:
णिजन्त नामधातव:
भ्रूकन्ता नामधातु ।
उणादिसूत्रस्थ सौत्रधातु :-

बोधलिङ्गानुशासन।

पवित्रधातुपाठ:

(Bruno Liebich A.D. 1920)

K. D. Pathak (भाण्डा.ओ.रि.इं. vol IV p.p. 111-136.) vol XI pp. 90-93)

शान्तनवाचार्य (फिट् सूत्र) (फिष) सूत्र.

डॉ. ~~कृ.~~ ~~न~~ वेलवल्कर

राजस्थान संस्कृत सभा १. संस्कृत-धातुपाठ का सविमर्श अध्ययन

संस्कृत हिन्दी अध्यापक सभा। २. संस्कृत पद्य की प्रथम भूमिका।

धर्मविद्या-सभा। ३. संस्कृतसाहित्य में संगृहीत ~~[illegible]~~ उद्धृत वचनों का परिलोचन

४. भारत की आधुनिक भाषाएँ।

वे कौन वैयाकरण्य लौकिक दृष्टान्त देकर समझाते हैं और व्याख्या के सूत्र, कथमलङ्कृत:
और कौन से वचनों की व्याख्या करते हैं

(१) ह्रस्वदीर्घप्लुत (कुक्कुट स्वरवत्)

(२) सिंहावलोकितं चैव मण्डूकप्लुतमेव च । गङ्गाप्रवाहवच्चापि अधिकाराश्चतुर्विधा:।

(३) अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणा:

(४) एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा । आम्राश्च सिक्ता: पितरश्च प्रीणिता:।

(५) न हि भिक्षुका: सन्तीति स्थाल्यो नाधिश्रीयन्ते। न हि मृगा: सन्तीति यवा: नोप्यन्ते

(६) महता प्रयत्नेन लङ्घ्यते।

(७) प्रासादवासीन्यायेन

(८) खड्गकोशन्याय:

(९) अथवा भूतस्य न कारणं अनुबन्ध इति प्राञ्चो ऽत्र

(१०) संयोगो नाम गुणवृद्धिविषयप्रतिषेध: ॥

(११) अनेकान्ता अनुबन्धा: ॥

अवसर्ग = कामचारानुज्ञा। कुतो भवान्। निपात और आगमोंमें भेद। अव्ययकार्यादि निपातनानि भवन्ति। अभेदका गुणाः॥ पत्स्वरः।
आतिदेशिकम् कार्यम् अनित्यम्॥

धातु पा.व.वि. (१०३) वैदिक शब्दोंमें धातु प्रत्ययके लिए, उणादि पाठके लिए निरुक्त और ब्राह्मणग्रन्थ

(१०४) वेदमें, लौकिक संस्कृतमें, और भारतीय हिन्दी आदि भाषाओंमें संस्कृतके तत्सम और तद्भव धातुओंके अतिनिर्देश.

(१०५) हिन्दीका धातुपाठ आगरेसे छपा हुआ। श्रीदेवेन्द्रकुमारजीने (प्रकाशन)

(१०६) अंग्रेजी, लेटिन आदिके शिक्षण भी आवश्यक हैं परन्तु लोग अंग्रेजीमें गणितसे अधिक रस लेने लगते हैं॥

(१०७) नहीं मुखेन कम्प्यमानीनोः (शब्द रूपावलीसे व्याकरणमें प्रीति बढ़ानेके॥

(१०८) पञ्चाङ्गं व्याकरणम्। (शब्दानुशासन) सूत्रपाठ, धातुपाठ, गणपाठ, उणादिपाठ, लिङ्गानुशासन॥ अखिल - खिल।

वाक्यकार - वार्तिककार॥

(१०९) भूवादयो धातवः॥ इतनाही कहकर एक पूरे ग्रन्थकी ओर; संग्रहकी ओर समकालवर्ती अर्थात् पूर्ववर्ती संग्रहकी ओर निर्देश कर दिया।

(११०) उणादयो बहुलम् से। उणादि ग्रन्थ निर्दिष्ट हो गया।

(१११) वैयाकरणोंका पठ धातु बहुत प्रिय है। सूत्रपाठ - धातुपाठ, वार्तिक पाठ, गणपाठ, उणादिपाठ। पठ पुत्र व्याकरणम्। देवदत्तः पठति। गच्छति तो संस्कृत भाषाकी मानो प्राण है। गत्यर्थक धातुएं धातुपाठमें भरी पड़ी हैं। क्या यह संसार यह और जगत है इसलिए यहाँ गम् धातुकी प्रधानता है — अङ्ग भाव विकारमें गमन अनुस्यूत है। भू उच्च-ग्रुप-कर्ममें — क्रिया-कर्ममें प्रत्येक अनित्य वस्तु गतिशील है।

११२ भाषाएँ व्यवहारिक, धार्मिक, शास्त्रीयक।

(११३) इत्यादि विविधं शब्दरूपं समाप्नुते॥ आयुर्वेदके शरीरके सप्तधातु

(११४) खनिज धातु।

(११५) वर्णोच्चारणके तत्त्व धातु भी हैं और प्रातिपदिक भी.

(११६) उर्वादिविपदिरेभ्यः क्विप् (आचार अर्थमें)

(२१५) त्रिपुष्क परीकृत्य लतो अर्ह का आगम त्रिपुष्क से पूर्वयोग असम्भव
पुष्ट के बाद इससे पहले।

(२१६) सर्वप्रातिपदिकेभ्यः आचारे क्विप् वक्तव्यः। (पञ्चविंशति सविता के अन्दर)

(२१७) त्रिभुक्तो धातुत्वं न जहाति।

(२१८) जलयोरैकत्वम्। मानवजन्मोव
बेईमान। पौष्करसादि का मत अनृशट, अटनृशट॥
जो अनृशट बोलते हैं यद्यपि जानते हैं कि हम अनृशट बोलते हैं। पौष्करसादि की दृष्टि बड़ी सूक्ष्म है॥
पुरुषोत्तम की अष्टाध्यायी, अथर्ववेद, काल, जी, जब
प्रथम उत्तम ऐसा छन्द जकारादि वाले पढ़ेंगे॥

(२१८) मृत्स्नापात्र। अर्थ - मुनि

(२१९) अर्घपात्र, छल कपट भी है। जीव प्रापने - पूजा प्रापि में
विमोचने। हदिर - अश्रुविमोचने॥ और एक भी। जलेश -
दूकाद्रूम। वस्त्रों का धूल देना।—

(२२०) यह बलोचिस्तान के लोग सांस्कृतिक का अधिक व्यवहार करते हैं।

(२२१) हमारे लिये यशोदानन्दन भी राजपूत के आनुपात के हैं।
गोस्वामी जी -

(२२२) अर्थानिर्देश भी स्तेन का है॥

(२२३) कान्ति का अर्थ, काम, इच्छा है, ऐश्वर्य का अर्थ ईश्वरत्व है, भाग-
सम्पत्ति बाद का अर्थ गौण है। ईश्वरभावना (ऋषियों के उपाय में)

(२२४) दशगुणी अष्टाध्यायी से धातुपाठ का गणपाठ शायद उपलब्ध हो जाए॥

(२२५) अध्ययन के बाद मनन - स्वाध्याय - प्रवचन - रोमन्थ का समय और लगाव
और मननशील प्रवृत्ति ज्यों ज्यों कम होती जाती है - परीक्षा का बन्धन, मायना
लोभ, आदि में कम होती जाती इसलिए भाषा ज्ञान में अति बाधा आती।
अष्टाध्यायी में अंग्रेजी की ऐसी दशा हो रही है। हाँ जितना उपलब्ध आ
कुछ जो की रक्षा कर देते हैं। ?

(२२६) बहुत कम धातुओं का प्रयोग पाते हैं। प्रयोग आते हुए घबराते हैं। जानना चाहते हैं कि
क्या दूसरे शिष्ट लोगों ने इसे कहीं प्रयुक्त किया है। अहो कितना बड़ा व्याकरण

(२२७) आयुर्वेद, मेघाश्रम, उत्तरायण, आग्रयणेष्टि (वर्षान्त) [illegible], अपराजिता, दानव अनवस्था से वस्तु का संयोग और लोप करते हैं

(२२८) संस्कृत व्याकरण के बिना धातु रक्षा नहीं हो सकती। नाम प्रयोग हम चला लेते हैं आख्यात प्रयोग से भिन्न करते हैं

(२२९) बी.ए. एम.ए. में संस्कृत व्याकरण की परीक्षा अवश्य होनी चाहिए.

(२३०) धातुपाठ की पृथक् परीक्षा अर्थ ज्ञान के लिए पृथक् होनी चाहिए।

विषय: धातुपाठ का सविस्तर अध्ययन.

(१) पञ्चपाठी (सूत्र, धातु, गण, उणादि, लिङ्गानुशासन.
पञ्चाङ्ग व्याकरण.

(२) व्याकरण की प्रवृत्ति ही प्रकृति-प्रत्यय विभाग के लिए हुई है इसलिए पद, शब्द, के मूल के लिए धातुपाठ आवश्यक, नाम, आख्यात, उपसर्ग निपात.

(३) उणादि और निपात उपसर्ग को अव्युत्पन्न रहने दीजिए.

(४) लगभग २००० धातुएँ

(५) भ्वादि गणादि विभाग (२) अन्त्य वर्ण की दृष्टि से (२) आत्मनेपद, परस्मैपद उभयपद की दृष्टि से. (३) सकर्मक, अकर्मक, द्विकर्मक दृष्टि से, विभाग.

(६) प्रकृति ही हैं, बीज हैं इन्हीं से भवन और वृक्ष बनेंगे।

(७) धातु का लक्षण.

(८) धात्वर्थ निर्णय। अर्थ एक प्रकार से साध्य लक्षण भी हैं। स्वर्ग ज्ञान करि भी करते हैं। एक एक प्रयोग को क्रमश: सिखाना चाहिए। देवदत्तः भवति। देवदत्तः एधते।

(९) वैविध्य के लिए। नाम भेद, देवदत्त, यज्ञदत्त, विष्णुमित्र, चैत्र, मैत्र। पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि ... .. वर्धते, एधते - - - - . . ।

(१०) मंदि आदि व्यवहार में सिखाई जाएँ

(११) मातृभाषा की धातुओं से संस्कृत धातु। संस्कृत से मातृभाषाओं में अर्थ। छोटा कोश.

(१२) सिद्धान्त (अहमदाबाद से छपा रूपों का ग्रन्थ).

(१३) अति अल्पार्थक, द्विरर्थक धातुएँ बढ़ते हैं

(१४) रक्षा के उपाय। चार विद्यालयों में। भिन्न भिन्न दृष्टियों से। व्याकरण, शास्त्रार्थ प्रतियोगिता धातुओं में, धातुपाठ अध्ययन पर इनाम, पारितोषिक। परीक्षा में लिखे के बिना भी मूल [illegible] धातुपाठ पर प्रश्न। पठित प्रसंगों में से यथाशक्य धातु निर्देश। हिन्दी आदि मातृभाषा में योजना पूर्वक निर्देश. हिन्दी (मातृभाषा) अध्यापक अवश्य संस्कृतज्ञ हो।

(१५) शुद्ध आयुर्वेद अवश्य पढ़ाया जाए. (१६) वेदेतर अन्य शास्त्रों कर्मकाण्ड, ज्योतिष, और शिल्प

(२३१) धातुपाठके निरन्तर पठन-पाठनसे कितनी शक्तियाँ अपने हाथमें आजाती हैं

(२३२) व्यवहार ज्ञान व्यापक होजाता है

(२३३) ओषधियोंके नाम पदार्थोंके गुण-कर्म का बोध खूब होजाता है

(२३४) वट के नाम लेलें · अमरकोशके वनौषधिमें रस आता है ॥ इससे
इस तरह गुण कर्म ~~का~~ इनका बोध तो हो ही जाता है।
स्वामी दयानन्दने लिखा लिया है
(अग्नि वायु, पृथिवी, जल, आकाश के नामोंसे, अनेक गुण, सूर्य, चन्द्र

बुद्धि
"न सत्तां पदार्थो व्यभिचरति ~~चरति~~" लिङ्‌: कृदन्तचयः वा स्मृत" "क्रियावाचकमन्वितम्"
"आख्यातम् अविशेषणम् वाक्यम्"
नदीनाम· जलनाम· कमलनाम, भूमिनाम, पृथ्वीनाम, वृक्षनाम, पर्वतनाम प्रभृति।
शोभाजनके नाम (गुण, कर्म, स्वभाव बोधक) "हरीतकी" "आर्द्रक" शतावरी,
द्राक्षा, (अष्ट शतपुष्पा सौंफ) प्रकार (दश वेणुके) (वीरणमूल (खसके दस)
(द्वादश धूस्तूर) (नव वानस्य) दश जम्बूकस्य ((उलूक: सूकर: आयु)
(दश वानस्य) (पक्षी के २८) (२२ मयूर के) (११ स्त्रीनाम,) स्त्रियोंके
नादशब्द) (महोदधि) (रोगके जातनाम) (अष्ट नाम (२२ नाम धातुके) (दानके त्रयोदश) (अष्ट देश) (१६ शत्रुके) (पञ्चदश मित्र·) (दश ध्यानस्य
(११ दानके) (६ हाथीके)
(निघण्टु में ऐसे ही एक वस्तुके अनेक नाम (गुण-कर्म नाम)
(अष्ट धातु) (नव रत्नस्य) (३१ प्रकार) (३० मासस्य)
(आठ वाजीके) (गौके नव) (त्रयोदश इन्द्रके) (१२ पुरुषोंके) (अष्टौ उपनिषद्
(त्रयोदश मन्त्रस्य) (स्त्री-धार-वलन) (दश कुवाल) (अष्ट मूर्तिमान) (त्रयोदश गौ
(सहस्र प्रेक्षकस्य) (चतुर्दश रत्नस्य) (१२ बहुके) (१४ अग्निके) (६१ चन्द्रके)
(अष्ट गजाके) (६ नक्षत्रोंके) (८ कोश) (११ अंगीकृतस्य) (१४ कोटितक
(अष्ट तत्त्वम्, इति)
इत्यादि में
(२३५) सच यह है कि इसे तत्काल अर्थलाभ नहीं होता इसलिए उत्साह मन्द पड़ जाता है। वैदिक विज्ञान के जिज्ञासुको यह धातुपाठ पढ़ना चाहिए पदार्थोंके गुणकर्म-स्वभाव, और उनको चिरकालतक जानसकेगा और प्रयोग करसकेगा।

(२३६) वैशेषिक दर्शनके आरम्भकी धातुकर्मका समन्वय ॥ द्रव्य-गुण-कर्म
कर्मके, क्रियाः विशेषतया ॥
(२३७) – ~~श्री~~ भुवनतया धातुपाठके व्याख्यानका उपसंहार (संस्कृतमें) "संगृह श्लोकों में"
पठन-पीठन
(२३८) इन व्याकरणके मूल अवश्य पढ़िए। विशेषतः पद्धतिके लिये और दृष्टि (वाक्यपदीयकी टीका के लिए – "जैसे लोग वाणी भार बाँधते"।

(१४७) यदि अमरकोश को सटिप्पण, प्रत्ययदर्शन और प्रकृति-प्रत्यय पूर्वक पढ़ाया जाए तो कितना लाभ एक समय में और युगपत् हो जाएँ।

(१४८) शान्तम् पापम्। अभ्युदयम्॥ कीर्ति। शान्ति।

(१४९) नव संगीते मध्ये नव शब्दो न विद्यते।

(१५०) भावप्रकाश निघण्टु को भी पढ़ना शब्दों के गुण-कर्म प्रदर्शक नामों के महत्त्व को जानने के लिए देखना चाहिए।

(१५१) गु - पुरीषोत्सर्गे (हदपुरीषोत्सर्गे)

(१५२) उपसर्गों के योग से कितनी विविधता और अर्थ आ जाता है

(१५३) एक शब्द के अनेक अर्थ —
भाव, कान्ति, क्रिया, तत्त्व, योग, मग, हरि, गो, अनन्त, अर्थ

(१५४). गत्यर्थक, हिंसार्थक, भक्षणार्थक, कम्पनार्थक, दीप्त्यर्थक, शब्दनार्थक,
शोषणार्थक, सेवनार्थक, भासार्थक, वर्जनार्थक, इच्छार्थक, शब्दनार्थक,
स्तुत्यर्थक, दानार्थक, व्याप्त्यर्थक, प्रीत्यर्थक, दाहार्थक, भयार्थक,
रक्षणार्थक, क्रोधार्थक, संयोगार्थक, लेहनार्थक, यानार्थक,
पूजार्थक, व्याप्त्यर्थक

(१५५) कीलकीलमें धातु पाठ में 'वत्' नहीं लिखा है। वह स्वादिस्वरूपक है, गणान्त स्वादि स्वादि का अथवा भ्वादिगण की स्वादि का सूचक है। अन्यथा "आकृतिगणः" कहते हैं ऐसी ही दशा में इतनी धातुएँ भी हो सकती हैं। धातु कितनी आते होते हैं वह वर्तन धातु से सूचित किया है॥
ऐसे छोटे छोटे तत्त्व सूक्ष्म विवेचन अथवा गुरुपरम्परा से ही उपलब्ध होते हैं॥

(१५६) प्रमाद आलस्य से कितना वाङ्मय शाखाओं से लगकर नष्ट हो गया। वक्ता, श्रोता, और गुरुशिष्य, विद्यार्थी, गुरु का नाम रखकर उसका वर्तमान रहना ही चाहिए। शुद्ध है। शुद्ध अधिक जानना चाहिए॥
धातुपाठ की भी ऐसी ही दशा हो जाती॥

(१५७) "वृक्षाः प्रचलन्ति वातवेगैः प्रचलति" महाधीश और राजनीतिक नेता भी अपने अनुयायि मण्डल के साथ ही चलते हैं।

(१५८) उत्क्षेपणमवक्षेपणमाकुञ्चनं प्रसारणं गमनम् इति कर्माणि॥ (वाक्य)

(१५९) आत्म कर्म.

(१६०) हिन्दी गद्य में हृदय के भावों के विरोधी धातु और प्रत्यय भरा हुआ है।
नहीं रहता है। रोदिति, लज्जायते, हृष्यति, भीतः, हिंसायते, नतोऽगतः, शिशोर्वा, रजो, उद्वेजो, क्रीडावेदन, लज्जायाम्, दुःखः, भीत्या, भीतः, हिंसायाम्, नतौऽगात्मदिशेषेया, भक्ती, उद्वेगो, क्रीडितो, भीतः, प्रीतौ, शप आक्रोशे, विद्-वेदो, तृप प्रीतौ, विदा गात्र विक्षेपे, कुप क्रोधे, क्षुभ संचलने,
भीतः प्रीतौ। शप आक्रोशे। विद्-वेदो। तृप प्रीतौ। विदा गात्रविक्षेपे। कुप क्रोधे। क्षुध
बुभुक्षायाम्। तप दीपने। दृप हर्षमोहनयोः। कुह जिह्मीकरणे। मुद हर्षे। स्मिङ् ईषद्धसने।
शम उपशमे। तम काङ्क्षायाम्। दम उपशमे। श्रम तपसि खेदे च। क्लम अनवस्थाने

क्षमू सहने । ~~क्ष~~ क्षमू । लाँगो मदीर्ष्ये । ञि तृषा पिपासायाम् । हृष तुष्टौ ।
कुप क्रोधे । रुष हिंसायाम् । लुभ गार्ध्ये । ञिमिदा स्नेहने ।
गृधु अभिकाङ्क्षायाम् ।

(१६०) डु दानादनयोः आदाने च हेलने । जीर्यते इति भाष्यम् ।

सूक्ष्म प्रीता निविमोलने । ञिष्विदा गात्रप्रक्षरणे । स्था - गतिनिवृत्तौ ।
मादीहो । (मुलतानी में मा (आम) । अस भुवि । भू सत्तायाम् । भाग निद्राक्षये
वश कान्तौ (कान्ति इच्छा । वष्टि उशन्ति । ~~वदि~~ अप विमोलने) लिव अशन
विलापे । मृड् प्राणत्यागे । गु पुरीषोत्सर्गे । कुमा वैमनस्ये । कौ देवन प्रयोगः
(१६१) चर्करीतम् । छूर्त । वृत । मार्जितगृह भाष्ये । (शब्द अर्के कोपयोगे जाती बदला ।
(यत- शानंत) (छूर्त । (कृत्यः (मैं कृत्यपुत्रो) कृत मे । नची) नडशहि ॥ चि
(१६२) अनति हेत्वा शर्ह्देव शब्दान आत्म्ये । " ~~र~~ ब्रीड चोदेन लज्जायाम् च । ओलस्जी
ब्रीडायाम् । मृड पुलिने । जृम्भि गात्रविनामे ।

(१६३) कपोल कल्पना - ड कुत्र मैं अंग्रेजों ने डु त्याग लिया हम छोड़ दिया नहु
हमने डु देदिया कृञ लिया है ॥

(१६४) कट विभाजने (काटना) कुत्र हिंसायाम् (to leruise) अप विभाजने
व्यय विन्तसमुत्सर्गे ॥ ऋच्छि वच्छे स्तुत्यो । चक्षुद्वमा, अमु, परम अरेन । जिस हतिके

(१६५) खादृ भक्षणे । चक तृप्तौ प्रतिघाते च (छका ने खाया । ५२ छक मे
सप्प रक्षणे (अनुकम्पा क्रिया । कुटि विभाजने (बाटु) बाटु ~~पात्रों~~
नट वेष्टने । लुटि लुटि, कुठि लुठि, लडि; लडि - लोडे (लोटना) लंद विलाने
लल लालने ।

(१६६) अमजर (लज्जा लज्जा स्थिति जागरणं वली श्वपन जीवित भयाभ्यम् ।
शयन क्रीडा रुचि दीप्त्यर्थेश्च धातुगणन्त मकर्मक माहुः ॥

(१६७) खुर्दम, हुर्दम, हुर्लम इति इत्यादि । जब इनका उच्चारण करते हैं तो
मुँह की आकृति कुछ कुछ है जैसे मनुष्य की तरह हो जाती है, खांसने
है जैसे लगी की तरह ॥

(१६८) अलङ्करण पर्याप्ति वारणेषु । अलम् के भी यही अर्थ हैं ॥

(१६९) गल अदने गल - बोलने में छेल लगता है कि कुछ निगल
रहे हैं । ~~खाते~~ गीते अदश्य जी

(१७०) मव धातु के १२ अर्थ (१२ मे ही प्रयोग ओम मे अथवा
निवासि तत्प्रयोग

(१७१) ध्रुष - धिक्ष - सन्दीपन, क्लेशन, जीवनेषु ॥

अरे आग सुलगा
=
आग सुलगा

गर्ह कुत्सायाम् धातु गाली देने में निकला है ॥ चूत्याते (चूतक)
चले तहैा, करेव हृजने । हिक्कु अव्यक्ते शब्दे) । छिन्नः हैसद्यजने ।
प्र५ मैथुने (मुलतानी)

(१६०) धातुओं में धातुनिर्देश के प्रकार । धातुपाठम् । इक् । श्तिप् ।
जिनमें से एक का विकल्प देकर अथवा गणस्थ रूप बनाकर ॥
वैयाकरणैः कैयटादिभिः । शिल्प व्युत्पत्ये ॥

(१६१) नविधातुभ्यो भविष्यति । (५२४ इत्यादि) ५१८ नविधातुभ्यो भूत । (५२८) नविधातुभ्यो ऽन्यः ।

(१६२) निघण्टु कोश के शब्दों में निरुक्त देवताओं पद्यों की ॥
वेदमें धातुएँ ॥ और

(१६३) उणादि कोश पद एक ही है । इस शब्दों पद एक ही है.

चतुर्दशधा समुदायैका वृत्यास्य गृह्याग्निरूपम् । आते कृत्स्नेन सैद्धेया प्रत्युतं वाग्यतः शुचिः ।
पूर्वमाज्याहुती हुत्वाथोपस्थाय च शंकरम् । हविः शेषेण वर्तेत एकान्तमतन्द्रितः ।
पूर्णमासे जयेन्मत्युम् शौर्य प्रतिपद्यते ॥ (महाविधानम् ६. १६८ – १७०)
अथाधावृत्यर्थौ : नमस्कारः शर्मणिः वा (नमो (नमः अन्नं वा)
"श्रेष्ठो हि स्वात्मा नूतन अहा हाने कृतो भवति ।"

(१६४) { वरो लोल्यते) क्रिया सामान्यम् अर्थः
वरु नलोल्यते) क्रिया सामान्यम् अर्थः |

(१६५) समान मीहमानानाम् चाधीयानानाम् केचिदर्थं युज्यन्ते अपरे न,
तत्र किमस्माभिः कर्तुम् शक्यम् स्वाभाविकमेतत् ॥ (३४ पृष्ठ. नव.

(१६६) जेहृ प्रयत्ने, जेधाः, जेप्रयत्नः ॥ भाषायां नेम प्रियों ।

(१६७) " स्वार्थस्य यत्र विश्रान्ति शब्दं तुल्यं तदुच्यते "

(१६८) " एक वचनमुत्सर्गतः क्रियते !

(१६९) " वैयाकरणैः "

(१७०) " लक्षणं हि नाम ध्वनति भ्रमति मुहूर्तमपि नावतिष्ठते " महाभा. १.१.३)

(१७१) लकारों के पुराने नाम. लट् अद्यतनी,

(१७२) शृणाम मनुष्य ! प्रेक्षापूर्वकारी स बुद्ध्या कञ्चिदर्थम् संपश्यति, संदृष्टे प्रार्थना, प्रार्थिते अध्यवसायः, अध्यवसाये आरम्भः, आरम्भे निर्वृत्तिः ! निर्वृत्तौ फलावाप्तिः ॥ महाभाष्य १.३.१४ / १.४.३२.
ज्ञानजन्या भवेदिच्छा इच्छाजन्या भवेत् कृतिः ॥ इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञान

अनभ्यासेन वेदानाम् आचारस्य च वर्जनात्। आलस्याद् अन्नदोषाच्च मृत्युर्विप्रान् जिघांसति
शाद्व पद्य: ॥

(१८३) प्रमाणभूत आचार्यो ~~दर्भ~~ पवित्रपाणिः महता यत्नेन सूत्रं प्रणय स्म। तत्राशक्यं वर्णेनापि अनर्थकेन भवितुम्, किं पुनरियता सूत्रेण
महाभाष्य १.१.१.
सामर्थ्ययोगान्नहि किञ्चिदस्मिन् पश्यामि शास्त्रे यदनर्थकम् स्यात् ॥
महा. ६. १.

(१८४) निपातस्यानर्थकस्यापि प्रातिपदिकत्वम्

(१८५) संस्कृतभाषाद्वारा हम अपनी नवीन रचना कर रहे हैं यों नहीं तो तो इनके ही कृतियों का अनुवाद और टिप्पणियाँ ही संस्कृतभाषाविदों का कर्तव्य रह जाता है। साथ ही शास्त्र के परिशीलन का समय और अवकाश भी नहीं मिलता, मौरीताल, दार्जिलिंग, (अल्हट वहड़ मोव दा -

(१८६) अनवकाशा हि विधयो बाधका भवन्ति।

(१८७) सामान्यविधिरुत्सर्गः। विशेषविधिरपवादः॥
(१८८) अनिष्टं च प्राप्नोति इष्टं च न सिध्यति। न अनिष्टार्था शास्त्रप्रवृत्तिः
(१८९) प्रकृतिवदनुकरणं भवति।
(१९०) अनुकरणार्थे अर्था:
(१९१) पृथगर्थानाम् पदानाम् एकार्थीभावः समर्थम् उच्यते ॥ सम
(१९२) ऐतरेय ब्राह्मण में वर्तमान काल को सूचित करते हैं उक्ति में स्वयं वर्तमान है
(१९२) (चर्करीत) (इव) (कृत)
(नदी) (घि) (कृत) (कृत्य)
(शत - शानच् —— जत) (बहुव्रीहि में —— स्वपं बहुव्रीहि
(तत्पुरुष - तस्य पुरुषः स: पुरुषः) (द्विगु - द्वयो: गवो: समाहारः)

(१९३) क्रियासामान्यवाची - धातु - (कृ - भू - अस्)
(१९४) तद् तादर्थ्यात् ताच्छब्द्यम्
(१९५) तच्छील - तद्धर्म - तत्साधुकारिषु (स्वभाव, गुण, कर्म)
वैशेषिक सिद्धान्त (द्रव्य - गुण - कर्म)
(१९६) तिङन्तप्रतिरूपक (अस्ति) सुबन्तप्रतिरूपक (चिराय)
(१९७) दश - भवी,
(१९८) क्रिया - वचनो धातुः ॥ (कात्यायन)
(१९९) अविग्रहो ऽस्वपदविग्रहो वा नित्यसमासः।
(२००) नित्यानन्द पर्वतीय - बालशास्त्री के शिष्य ॥
(२०१) भरा - वाग् = शब्दकोश ॥ मूलाधार.
(२०२) परोक्ष - लिट्। अद्यतनी - लङ् लोट् प्रैषार्थ। लट् लकार - भवति

लविष्यत् - भविष्यन्ती = लृट्)

लट् भवन्त् कुर्वत् अद्यतनी। लिट् - परोक्षा। लुट् श्वस्तनी। लृट् भविष्यत् - भविष्यन्ती

लेट् पञ्चमी। लोट् - पञ्चमी) (विधिलिङ् सप्तमी।

(२०३) वाक्योच्चयो महावाक्यम् ॥ वर्ण। पद। वाक्य। महावाक्यम्।

सायण 1350 (A.D)

गुरुपुरावर्धिम्। प्रपञ्चार्थिम्। सौवर्णिम्। लाघवार्थिम्।

यौगिक + रूढ = अर्थबोधक: एक- यौगिक - रूढ.

उद्भिद् | उद्भिद् - (यज्ञविशेष)

व्युत्पत्तिवान् वृक्ष | प्रवृत्तिवान्

सू. ११७, स्वरतो [illegible] अनुनासिक स्यादेना।

लक्ष्यैकचक्षुष्कः - यच्च आह तद् लोकम् प्रमाणम् ॥

लक्षणैकचक्षुष्क। संक्रमो नाम गुण-वृद्धि-विषय प्रतिषेधः।

(२०४) भेदक तत्त्व, शुद्ध - अनुस्वार युक्त। क वर्ग का प्रथम वर्ण, वे स्थान द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ। घोष। विसर्ग। र, ल, अथवा ड। । व अथवा ब। श, ष, स, । य अथवा ज। रह रलव | उच्चारण ह अः, ल, ड। उच्चारण के विसर्ग के मिश्रण। ह को हलन्त करें तो विसर्ग बन जायगा। अन्तः क्रिया भी जैसे मा तोता प्रकाशन और अनुकरण ॥

(२०५) संस्कृत के ऋषियों की और उनके पत्नियों की घोर तपस्या, विशेषतः पति पत्नियों की ॥ कल्याणमय सम्बन्धियों के ममता त्यागके ही कुछ पति कुलका काम कर सकता है।

(२०६) नैकं प्रयोजनं योगारम्भं प्रयोजयति।

(२०७) द्विबद्धम् सुबद्धम् भवति।

(२०८) उपचारो नाम अतः कु इति विहित विसर्ग स्थानिक सत्त्वम्।

(२०९) अनन्तरस्य विधिर्वा भवति प्रतिषेधो वा।

पर्युदासः सदृग्ग्राही प्रसज्यस्तु निषेधकृत्।

(२१०) निरर्थकं घोषयेत्। अर्थवदनं घोषितव्यम्। प्रत्याहारः॥
विशते ह्यस्मिन् श्लोकः॥

(२११) काकाज्जातः काकः। श्येनाज्जाता श्येनः।

(२९२) संस्कृतके शब्द सिखाये हैं जो वे जानते हैं वह इन्हों के मुकाबिले में कोई कम नहीं है।

(२९२) कुछ व्याख्यान जाते हैं.

(२९३) पाश्चात्य [illegible] व्याख्यान [illegible] बन्धन में बंध कर
[illegible] [illegible] पूर्ववत् होजायगा।
संघात [illegible]। विग्रहात्मक [illegible]।

{ ब्राह्मसमाज, आर्यसमाज, [illegible], थियोसोफिकल
{ [illegible] और इनके प्रवर्तकों [illegible] सम्बन्ध
~~[illegible] का.~~ [illegible] सम्बन्ध

राजा राममोहन राय और प्रिंस द्वारकानाथ ठाकुर के इनोंके सम्बन्ध
गोपालराव भाण्डारकर और उनके [illegible] के साथ सम्बन्ध
[illegible] स्वामी दयानन्द के इनके विशिष्ट व्यक्तियों से सम्बन्ध
कर्नल आलकाट और मेडम ब्लेवत्सकी के इनोंके साथ सम्बन्ध
रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द के इनोंके साथ सम्बन्ध
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के इनोंके साथ सम्बन्ध.
रवीन्द्रनाथ और [illegible] के इनोंके साथ सम्बन्ध
सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी के इनोंके साथ सम्बन्ध

विपिनचन्द्र पाल, "
अरविन्द घोष
चित्तरंजन दास
आशुतोष मुकर्जी
रामानन्द चटर्जी
शरत्चन्द्र चटर्जी
जगदीशचन्द्र वसु
प्रफुल्लचन्द्र राय
सुभाषचन्द्र बोस
एनी बेसेन्ट
मदन मोहन मालवीय
स्वामी श्रद्धानन्द
महात्मा गान्धी
जवाहरलाल नेहरू
[illegible]
चन्द्रशेखर आजाद

स्वामी [illegible]
महात्मा हंसराज
महात्मा [illegible] (उदयपुर)
महेन्द्र बाबू [illegible]
भवानीदयाल [illegible],
तिलक
गोखले,
{ इनकालेके [illegible],
{ [illegible]
{ [illegible],
शुद्ध [illegible], [illegible], [illegible] तपस्वी
राजर्षी अंग्रेज विदेशी
लाजपतराय
हरदयाल
[illegible]
परमानन्द
हरकिशनलाल
पं. लालचन्द

भावनैव च वाक्यार्थः समासे विशेषणः।

क्रियापद मध्याहृत्यैव तत्र वाक्ये साधुत्वमापादनीयम् ॥

रोग और आपत्तियों से बचाने हेतु सन्तान की भांति विद्या और विद्वान् ब्राह्मण से ममता आर्यजाति की है। यह एक स्वाभाविक तत्त्व है। यह ममता अच्छी है। कुलपुरोहितों से यह ममता रखनी चाहिए वृत्ति की स्थिरता से ब्राह्मण में कुल और उनकी विद्या-संस्कार भी जीवित रहेगा नहीं तो नष्ट होने की सम्भावना है। इसके बिना गति नहीं। ~~विद्वान्~~ ब्राह्मण को विद्वान् बनाइये जैसे पाश्चात्यों में है और जैसे बड़ौदे के महाराज ने किया था। इस सारी परिस्थिति की उपेक्षा करने से आर्यजाति और विशेषतया उसकी धार्मिक वैदिक समाज बहुत कुछ खो बैठेगा।

इत्थम् इदम् इन्द्राय (इदं) न मम इति प्रयोगः साधु एव ॥

भूः	अग्नि,	ऋक्	सत्	ओम्
भुवः	वायु,	यजुः	चित्	
स्वः	आदित्य	साम	आनन्द	

कुल-ऋत्विज, कुलपुरोहित, कुल-गुरु — देशभक्तों में नेहरू जी का कुलपुरोहित ब्राह्मण कौन था।

" ज्वलन्तमग्निमुत्सृज्य न हि भस्मनि हूयते " ॥

32 पल से पूर्णपात्र।

|| 1.6 माष । कर्ष । 1¼ तोला
.4 कर्ष । पल । 5 तोला।
32 पल एक पूर्णपात्र । 1 छटाँक।

32 = १५० तोला।
२ सेर।

32 - छटाँक।
२ सेर।

अनतीय - उन्नीय।

षोडशोपचार पूजा —

आवाहन। आसन। पाद्य। अर्घ्य। आचमनीय। स्नान। वस्त्र। उपवीत। गन्धादि लेपन। पुष्प। दीप। धूप। नैवेद्य। प्रणाम। प्रदक्षिणा। विसर्जन

पितरः पितामहाः प्रपितामहाः वृद्धप्रपितामहाः ॥ निष्कण्टकः पन्थाः ॥

इष्टापूर्तिः। इष्टम् आयजते ॥ शिष्टाचारः ॥

सं पूर्वो न ह इति; शयनात्यागे वर्तते यथा

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः। (ऐत.ब्रा. ७.४)

इमौ हैमौ नगाहारवैमौ माता अवर्णीय माता इवर्णावर्णयो।

इवर्णः | न अनेन इको निवर्त्यन्ते
इकारः। |

पाणिनिकृतिः एषा तत्रभवताम्

कुलाल- कर्मार- वर्धकि- नापित- निषादः पञ्च कारवः॥

कुम्भकार-लोहकार, तक्षक- नापित- निषाद।

न हृस्वलोपो नियमनात —

अर्थे च शब्दं निवेशति। लक्ष्मी-दण्डक-पाठः (ग्रन्थविशेषः)।

कथ मनुष्यान् मंस्यते।

आर्याः यौनाः मौकाः ग्रीकाः

अनादित्वात्, नित्यत्वात्, गुरुशिष्यभावात्, अतिवृद्धत्वादयः॥

सामान्यतो ज्ञातस्य विशेषाकांक्षायां तत्प्रतिपत्तिस्तादुदाहरणम्।

सामान्य विशेष. | इण् के प्रकार वद् वहिः। यण् यह
उत्सर्ग - अपवाद | शेषः लाक्षणिको नवमीति। पं (5) लक्षणः = 5, पं लक्षणं = 3

तरह मुझे लिला मुहूर्त्तआदि ना बालिकाओं। असन्देहार्थः। मुख्यतः लौकिक दृष्टान्त देकर महाभाष्यकार ने कई कारण बताये कि भी देते हैं

1. विलासिनी वृत्ति
2. छोटे मोटे भावना.
3. सिनेमा का कुप्रभाव
4. हिन्दुओं का धन लोभ
5. लड़कियों का इतना अविवाहित रहना.
6. लड़कों की बम्बईयाँ
7. राजस्थानों की नौकरी
8. बेकारी
9. पाश्चात्य अल्प आविष्कार
10. पढ़े, पढ़े, आधुनिक शिक्षा की असफलता

परिणाम.
दुराचार,
हत्याएँ
कलह क्लेश.
चिन्ता

देशवासी
शत्रुओं के वश में होना
भी
आतङ्क

संयम और ब्रह्मचर्यपूर्वक
जीवन जीना
उपनिषद्

इस के विभाजन की समस्या सोते जगत् में भी है
भारत में भी है
जैसे समस्या होती है – इसके निर्णय में [illegible]
(२२४) कुछ [illegible] : [illegible] अनुवादेन,
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे अश्विनो बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्

(२२५) उडि. क्रिया विहायसा गतौ।

माधवीय धातुवृत्ति में उद्धृत –
अभिव्यक्त पदार्था ये स्वतन्त्रा लोकविश्रुताः। शास्त्रार्थस्तेषु कर्तव्यः शब्देषु न तदुक्तिषु।
"गुणवृत्तिरिक्त गुणपुत्रे वर्तितयम्" आचार्याः (४४५ नि. सं. [illegible] महाभाष्य)
"श्वा पुच्छे कर्णे वा छिन्ने श्वैव भवति नाश्वो न गर्दभः इति।
"वृक्षः प्रचलन् सहावयवैः प्रचलति"
प्रतिक्रियते॥

भू-सत्तायाम् (वर्तते) इति शेषः।" सत्ता इह आत्मभावः"
"आत्मानमात्मना बिभ्रदस्तीति व्यपदिश्यते" कैयटः "आत्मभाववचनो भवतिः"
मैत्रेयः "अस्ति इति उत्पन्नस्य आत्म-धारणमुच्यते॥"
तत्र नोक्तः तत्र भवः॥ "नैरुक्ताः पदार्थान् अभिधावतीति"
कृभ्वस्तयो हि क्रिया-सामान्यवचनाः॥
व्याकरणम् ~~[illegible]~~ का लौकिक ज्ञान बड़ा व्यापक था। व्यवहार और
लोकजीवन में ओतप्रोत शब्दों का ज्ञान करने से वे व्यावहारिक भी रहते हैं
और प्रवृत्ति-संपन्न भी। इसलिए [illegible] और प्रवृत्ति दोनों
का समन्वय और सङ्गम रहता है। और यह समन्वय है प्राणवान्
है प्रासाद तुल्य है। ईंटों के तुल्य है।
// हम हिन्दू ईंटों के तुल्य हैं और मुसलमान भवन के तुल्य हैं॥
साहित्य का के परिवार और विचार [illegible] इतनी प्रगति
है॥

1.8.२०४ [illegible]

वक्ष्यति हि आचार्यः (वार्तिककारः) [illegible] लोकतः [illegible] इति

(विशेषणानां चाजातेः) इत्यत्र पतञ्जलि, कैयट का कथन और स्थान तक शब्द को
लिखाना।
आकाश के साथ सम्बद्ध होने से आकाश के साथ शब्द का लोप.
श्रुति अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा। आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः
भाषा का, वाङ्मय का आविर्भाव।
पुरुषविद्या के अनित्य होने से — वेदमन्त्रों मात्र ही हिन्दुओं का वर्णित्व
होना चाहिए ऐं अधिकार्य देना चाहिए।
पृथिवी — अग्नि — रथन्तर साम
अन्तरिक्ष — वायु — वामदेव्य साम
द्युलोक — आदित्य — बृहत् साम (स्वयंसिद्ध।
प्रथम प्रवक्ता — ब्रह्मा।

(२१६) जहाँ प्रकृति-प्रत्यय का स्पष्ट बोध न हो वहाँ पत्नी से पूछ लेना चाहिए तेरा पति कौन है और पति से पूछ लेना चाहिए तेरा पति कौन है इनके विवाह की तसल्ली कर लेनी चाहिए कि किसी प्रकार विधि-विहित जो मान्य हुआ नहीं तो समाज में अव्यवस्था हो जाएगी।

(२१७) व्याकरण को वर्तमान भूत की घटनाओं के साथ ओतप्रोत करके पढ़ाना। महाभाष्यकार पतञ्जलि की तरह। ऐसे ही पाणिनि और वार्तिककार भी पढ़ाते होंगे। पर भाषा को ~~भा~~ संवाद की भाषा बनाकर प्राणवती, सरल और रुचिकर बना देना चाहिए। चरक में भी ऐसे हैं इसलिए भी काशिका महाभाष्य अवश्य पढ़ाने चाहिएँ। प्रशस्तपाद, चरक-सुश्रुत, महाभाष्य, अमरकोश, मनुस्मृति, गीता, रामायण, महाभारत साथ साथ वर्तमान इतिहास भूगोल साथ साथ पढ़ाने चाहिएँ। पाणिनिकालीन भारत- पतञ्जलिकालीन भारत दोनों ग्रन्थ मिलकर उस काल को जीवित कर देते हैं॥

(२१८) यदि इस प्रकार के ग्रन्थ सरल संस्कृत में हो जाएं तो वह संस्कृत के छात्रों को पढ़ाना चाहिए।

(२१९) पुरातन पण्डित तथा स्वामी दयानन्दजी ने संस्कृत पाठशाला खोलकर बड़ा उपकार किया था॥

(२२०) विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषाम् न चेतांसि त एव धीराः
त्रिकाल के प्रतिकूल परिस्थितियों के होते हुए भी संस्कृतज्ञों ने और इतर जनता ने मिलकर संस्कृत की रक्षा की है॥

पाठक्रमादर्थक्रमो बलीयान्॥ प्राचीनम् तिर्यगध्ययनम्

१३ (२२१) चक्र टहै। हिन्दी, पंजाबी में छकना।

पूर्ववयाः ब्राह्मणः प्रत्युत्थेयः॥

शिक्षाविज्ञाने

(a) अभ्यासार्थे द्रुता वृत्तिः प्रयोगार्थे तु मध्यमा।
शिष्याणामुपदेशार्थं वृत्तिरिष्टा विलम्बिता।

(b) क्या अकार को विवृत रखने का प्रयोजन भी शायद शिष्योपदेश और आयु निर्वाह के लिए किया है - अन्यथा संवृत को बोलने में फिर क्यों रह जाए उसके में ही न आए॥

(222) प्रो. रामचन्द्र वर्मा हिन्दी संस्कृतकोश.
आगरे से छपी प्रकार हिन्दीधातुएँ॥

(223) अकारादि क्रम से स्लिपें बना दी जाएँ फिर उन पर संस्कृत धातुएँ लगा दी जाएँ॥

जाना, आना, खाना, पीना, जागना, सोना, हगना, मूतना, पादना, नहाना, धोना, उठना, बैठना, तैरना, उड़ना, उगना, गिरना, बैठना, खड़ा होना, लेना, देना, मारना, जीना, मरना, करना, बढ़ना, घटना, डरना, खेलना, कूदना, हँसना, रोना, नाचना, बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना, गर्जना, ठंडा होना, जमना, पिघलना, क्षमा करना, तर्क करना, प्रार्थना करना, क्षमा करना, ईर्ष्या करना, क्रोध करना, छूना, मांगना, काटना, छीलना, कूटना, सीना, उधेड़ना, जोड़ना, तोड़ना, मोड़ना, ओढ़ना, नमस्कार, विरोध करना, निंदा करना, ध्यान करना, नष्ट करना, प्रतीक्षा करना, मचलना, उदासी होना, उबटना, सूखना, सुखाना, सोचना, अभिमान करना, भूलना, लेटना, लिपटना, मोड़ना, उत्साह देना, मनाना, फाड़ना, चीरना, मसलना, जलना, मसलना, मूर्छित होना, रोकना, बकना, थूकना, लड़ना, गाली देना, थूकना, छीपना, सुनना, छूना, चाटना, चलना, घूमना, चढ़ाना, आवर्तन होना, धोखा देना, शाप देना, दण्ड देना, रोना-चिल्लाना, बींधना, विनिमय करना, धोवना, नाचना, पीड़ा देना, बचाना, गिनना, मानना, जन्मना, संक्रमण होना, डींग मारना, आक्रमण करना, बिगड़ना, बिगाड़ना (क्रिया) मांगना, स्वीकार करना, नापना, नाप करना, आशीः देना, सिद्ध होना, फलना, फूलना, बीतना, नष्ट होना, नष्ट करना, चुराना, हटना, लगाना, उठाना, बहना, विलोड़न करना, मसलना, कूटना, छानना, पकना, पकाना, पचना, हिचकी आना, डकार आना, दबाना, मसलना, प्रकट होना, बांधना, खोलना, बन्द करना, शकुन करना, होश में आना, चीखना, धड़कना, जलना, खेल करना, सींचना, कटना, छिदना, धोखा देना, भटकना, भटकाना, अनुभव करना, प्रवृत्त होना, प्रवृत्त करना, छानना-बीनना, विलाप करना, प्रकट करना, होम करना, खोजना, विवेक करना, दैरा होना, दौड़ना, मचलना, फिसलना, कमाना, जीतना, दोहना, पूछना, अभ्यास करना, निकलना, उगलना, वमन करना, बजाना, बनाना, जुताना, थकना, ढील करना, बातें करना, बड़बड़ाना, रँगना, हिनहिनाना, गरजना, निर्माण करना, जगाना, डूबना, मिलना। पतला होना, मर्दन करना, सूंघना, घूमना, सँभलना, घूमना, घूरना, अभिव्यक्त करना, पैदा होना, सिद्ध होना, परिपक्व होना, उजाड़ना, छिड़कना, फैलना, पसरना, धकेलना, खींचना, कॉल काटना, बीजबोना, बहाना, रोगी होना, स्वस्थ होना

जुतना, पाना, भला करना, चौंपना, दमकाना, चूना, पड़ना, टपकना, बजना,
चुराना, जुआ खेलना, रेंगना, लुढ़कना, छकना, दिखना, जवान होना, छिपना
छिपाना, शान्त होना, धकना, बुझना, जलना, जलाना, गीला होना, कुरेदना
फूलना, गाना, हिलना डोलना, बेहोश होना, सूँघना, पिरोना, पसन्द आना
रंगना, मानना, भिगोना, भीगना, निचोड़ना, फूँक मारना, बिलोना, आश्चर्य करना,
मचलाना, खेलना, निकालना, पछाड़ना, बटना, निबाह करना, चबाना, पीसना, छोड़ना,
पकड़ना, जगाना, छोड़ना, हिलाना, रोना, उत्पन्न होना, खाल पड़ना, मचलना
कुढ़ होना, धमकाना, पसीना आना, बांधना, ~~खिलखिला~~ खिलखिला होना, खिलखि
कुकराना, सुहाना, उजला होना, पहुँचना, बदलना, थपथपाना,

भारतीय जीवन में ब्राह्मणों के उपकार.

भारतीय जीवन में ब्राह्मण के उपकार और अपकार.

Commentary
Kane's का अपने काल का पर्यवेक्षण (Survey &

Kane's के <u>History of Dharma Shastra</u> पुस्तक)

{ भारतीय शिक्षण-व्यवस्था के सिद्धान्त (स्थूल रूप से श्लोकों द्वारा चरक संहिता

<u>संस्कारविधि में निश्चय-स्थान.</u>

पाश्चात्य मीमांसा जैमिनी का बुद्धि नैपुण्य-पाटव॥ (संस्कृत लेख)

(संस्कृत लेख.

<u>कविकीर्ति</u>

संस्कृत धातुपाठ का नवीन अध्ययन.

किमिदं वैज्ञानिकता नाम. (संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता)

संस्कृत शिक्षण की उपयुक्त भूमिका.

श्री सुदामा चरित (पद्य में) <u>गद्य में</u>

आकाश को आश्चर्य कैसे बनाएं

<u>काव्य और शास्त्र में साधर्म्य-वैधर्म्य</u>

<u>पिछले दो सौ वर्षों में संस्कृत के प्रमुख पण्डित.</u>

संस्कृत व्याकरण सम्मेलन

सांख्य-योग सम्मेलन

आचार-नि
शिक्षा शास्त्रियों, वैयाकरणों, और नैरुक्तों के अपने अपने निकायों के

महाभारत में सांख्ययोग

(गुरु-शिष्य शिक्षण क्रम के उदाहरण स्थूल आचार और सिद्धान्त
अभ्यासेन कुशलता वाचि । प्रयोगार्थं तु मध्यमो । शिक्षणानुपदेशार्थं वाचि [illegible]
आचार्यात् पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया । पादं सब्रह्मचारिभ्यः पादः कालेन पच्यते । कालेन [illegible]
इत्यादि इत्यादि । [illegible], [illegible], गद्य, पद्य, [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ चरक-संहिता में ॥

(स्त्रियों में संस्कृत मातृभाषा अर्थ आज बहुत कम है) [illegible]

बेबर
आफ्रिक्तलिपा मैं पश्चिमी orientalist के चित्र।
गोल्डस्टूकर।

बाल शास्त्री।

विशुद्धानन्द
गङ्गाधर शास्त्री।
शिवकुमार शास्त्री।
नित्यानन्द पर्वतीय।
कैलहार्न।
वाराणसेय Queen's कॉलेज तत्रत्य के विद्वान-
मैक्समूलर
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
रामकृष्ण भण्डारकर
वासुदेव शास्त्री अभ्यंकर
रामावतार पाण्डेय
शालग्राम शास्त्री
म. म. गिरिधर शर्मा
द्विवेदी
बर्नेल
भगवद्दत्त।
प्रतिष्ठितों में आंग्ल
कुन्दनलाल निवास।
पण्डित काशीनाथ (सरयूपारीण)
(काशी) राजाराम शास्त्री

उपेक्षा
पठन-पाठन।
शब्दविद्या
शाब्दिक।
शब्द
ध्वनि
स्फोट।
संकलन।
लोकजीवन
शब्द, अर्थ।
सिद्धि
जायते का
दूराद् हूते।
आह्वान।
अभिवादन
उपविभाग
प्रश्न-प्रतिवचन।
मतिनि
व्युत्पन्न, अव्युत्पन्न
क्लिष्ट
मध्यमपद - समन्वय
नवेदं पाणिनेः ईदं गाम्भीर्यम्।
क्लिष्ट कल्पना।
सिद्धाप्रमाण शब्द।
यथोपदिष्ट
द्वन्द्व
वाजप्यायन
पस्पशा
छन्दोवत् सूत्राणि भवन्ति।
सिक्के, शिलालेख, पुरातन स्थापत्य॥
रक्षा कि जिन्होंने की
कैसे की
और कि
नागरिक वैसे बढ़ाई
ब्राह्मण - ब्राह्मणेतर ने अपना
अपना कर्तव्य चुन लिया।
बहिरङ्ग परीक्षा
अन्तरङ्ग परीक्षा
पदबन्ध
पाणिनीयं महत् सुविहितम्॥
सूत्रकार पाणिनि
लक्ष्य लक्षणे व्याकरणम्
शब्दार्थ
शाब्दिक
शब्दानुशासनम्
वार्तिक संख्या ४२६३
सूत्र संख्या ३९९५
शब्द व्याख्यान
श्री दयानन्द जी की शैली और
शब्द भण्डार व्याकरण के
पूर्वपक्ष - उत्तरपक्ष
पदकृत्य चूर्णिका
जालीय
शब्दबोध

विशालबुद्धि। अनल्पमति। पदार्थाभिधानम् वृत्तिः। (बड़ीव-चाल) अन्वाख्यान मा
पाणिनि, व्यास, वाल्मीकि। पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि शकुनाचार्य
पनोला, (प्रमदा उनकी गुरु) नन्द, बुद्ध, महावीर, दयानन्द, विवेकानन्द, [illegible]
की बोली — सूत्र पूरे। अब बात में व्यापकता, गहनता
और अनुभवशीलता आ गई॥ पैदल घूमना — ज्ञान की गहराई और प्रवि
हो जाती है॥ शालातुर: [illegible]। कैयट प्रदीप में पाणिनि शब्द की सिद्धि
४।३।९३ वा.६॥ (निवासगोत्र। देशवं (गोत्र) आहिक। शालङ्कि, दाक्षीपुत्र

शालातुरीय

प्राच्य [illegible] उशीनर - मद्र, उदीच्य। (उशीनर+मद्र) वाहीक,
(शालातुरीयतन्त्र = पाणिनीय शास्त्र) गुणाढ्य की बृहत्कथा। क्षेमेन्द्र की —
बृहत्कथामञ्जरी। [illegible] मूल रूप॥ है-सोमदेव का कथासरित्सागर
नाटिका (जिसका अनुवाद (शायद [illegible] शर्मा) हिन्दी में॥
शब्द पारायण। निर्मलबुद्धि - (ऊँची खोपड़ी के लोग) व्याख्यानुसार
शब्द। काशिका। श्लोकात्मक टिप्पणियाँ (वर्तिकाएँ)।
भाष्यकारस्तु उक्तिदर्शनत, अविशिष्यते। पुरुषोत्तमदेव की भाषावृत्ति।

कुणिवृत्ति	चर्चा (खण्ड)	वस्तु-नाम उपाधि-नाम
लघुवृत्ति	वाक्याध्याहार	स्थान-नाम
महाभाष्य	उदाहरण	मनुष्य-नाम।
(न्यास) मितादी	प्रत्युदाहरण	
भागवृत्ति		
काशिका		
न्यास		
पदमञ्जरी।		

यदि संस्कृत नामों का रूप बदल न बिगड़ जाए तो उनमें परिवर्तन थोड़ा होता है और और उनके मूल संस्कृत नाम भी जल्दी पहचाने जाते हैं

सम्बन्धि शब्दा: मातृ, पितृ ——। तदेकदेश शब्द ग्रहणेन गृह्यते।
वर्णादाङ्गं बलीय:॥
न हि विना चित्रगवीभि: देवदत्त: चित्रगु: भवति॥
कृत्रिमाकृत्रिमयो: कृत्रिमे कार्यसंप्रत्यय:॥
पर पदार्थे बुद्धि प्रयुज्यमाना: शब्दा: वृत्तिमन्तरेणापि तदर्थं गमयन्ति। सिंहो माणवक:॥ अग्निर्माणवक:॥ गौर्वाहीक:॥

अग्नि — इन्धे त
अग्नि + अ + गा + त
अग्र गी इ र र्म
विस्मरणोत्मवत्युना तस्माच्छब्दस्य शक्यते वक्तुम्।

बुद्धिस्थ परामर्श:
प्रसङ्गप्राप्त:
प्रियतद्धिता: दाक्षिणात्या:
पत्रधारणार्थ।

आग्निवेश्य गृह्यसूत्र

गृह्यसूत्र श्रौतसूत्र कल्पसूत्र	} कल्पसूत्र.	आग्निवेश्य आग्निवेशि आग्निवेश्य. शिष्यपरम्परा	आचार्य परम्परा. शाण्डिल्य आग्निस्नात. प्रथमान्त: शिष्य पञ्चम्यन्त: आचार्य

वाधूल श्रौतसूत्र.

१. कीदृशोऽग्नि: इति आम्नायमाह।

"विप्रतिषेधे परं कार्यम् अत्र दृष्टवाची पाठः॥
"शिल्पा शापानुबन्धेन निर्दिष्टं यद् गणेन च। "
(यत्रैकम् गृह्यं विस्मृतं पश्चात्तानि न यजुषि।)

कुलञ्च शीलञ्च वपुर्यशश्च विद्यां च वित्तं च सनाथतां च।
एतान् गुणान् सप्त परीक्ष्य कन्या देया बुधैः शेषमचिन्तनीयम्॥

पति-विप्र. (योजना.
विजायते ... आती है

(२२४) संस्कृत में प्रवेश का लाभ तो प्रत्येक धातु का ल्युडन्त प्रयोग, भू, कृ, गम भवन, करण, गमन लिखा दिया जाय और उन अपनी भावनाओं में प्रयुक्त करना लिखा दिया जाए।

तद्धितार्थोऽनन्योर्था राक्षस-वायसादिवत्
रक्षस् / राक्षस / वयस् वायस।

एतावद्वा इदमन्नं चैतावानन्नादश्च, सोम एवान्नम् अग्निरन्नादः॥

अग्नि वायु आदित्य	पृथिवी अन्तरिक्ष द्युलोक

" ज्वलन्तमग्निमुत्सृज्य नहि भस्मनि हूयते "
8 गुञ्जा — 1 माष.
16 माष = कर्ष
4 कर्ष = 1 पल

द्रुत
मध्यम
विलम्बित } वृत्ति.

विष्णुधर्मोत्तर महापुराण

सम्पूर्णचन्द्रवदनाः। (वज्र - मार्कण्डेय) संवाद। } कथा - उपाख्यान।
चन्द्रवंशी - सूर्यवंशी।

ज्येष्ठ - रविवार } हिरण्मयः अष्टः।
त्रयोदश - रात्रि }

"सूत - मण्डल मध्ये ... अध्यायपदि इष्यते" इति व्याख्यातो।
निष्कण्टकः पन्थाः। ततः प्रवालिनीभिः नीराजनम् कार्येतु॥

कृष्ण, बलराम, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध
वज्र। सूर्यवंश, सविनय॥
पीतवर्णम् वासुदेवस्य वल्लभम्। } चित्त - शालेयान वर्णित। मुक्तिमुक्तिफलप्रदः

अखिलं वेदिः। वज्रोमेखला) } गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति
८, २८, १०८, १००८। } नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु

पयो-दधि-घृत-क्षौद्र-शर्कराः पञ्चामृतानि। पर्वन् (गांठ। ग्रन्थि Knot

शुक्ल
अरुन्धती
चक्रवाक
धेनु-वत्स
दूर्वा

यजुर्वेद। अध्याय १३, मन्त्र २०
ओम् काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

आयाम - विस्तार - उत्सेध
लम्बाई - चौड़ाई - ऊँचाई

विष्कम्भ = व्यास
वृत्त का व्यास
Circle - Diameter

प्राणप्रत्ययैः अवलेपन / मङ्गल जनन
पारस्कर गृह्यसूत्रम्॥ मनु - वसिष्ठ - आपस्तम्ब। उपकिरण
गृह्य - शालाग्निः। आवसथ्यः औपासनः।
आज्य - प्रोक्षणी - धान्य - सत्तु। स्रुवा। शान्तिका। पौष्टिक।
अपशकुन अप्राकृतिक अवैद्य। अपपाठ। अपशब्द।

यजुः -
कृष्ण शुक्ल
८६ १५

१०१। एकशतम्

(२२२) बुद्ध काल (१३२३) (पंजाबी कुड़ा, कुड़ी।

यत्परः शब्दः स शब्दार्थः"

देव ब्राह्मण कण्टकाः॥ निरपवाद

अनुष्टुभ् — एकविंशस्तोम वैराजम् साम विनाह

उ भुवः अन्तरिक्षलोक - वायु - इन्द्र माध्यन्दिनं ग्रीष्म, हेमन्त त्रिष्टुभ् पञ्चदशस्तोम बृहत्साम क्षत्रियवाउपनयन, यजुर्वेद
हेमन्त शिशिर. त्रिणवस्तोम शाक्वरसाम. विनाह

म स्वः द्युलोक आदित्य वर्षा शिशिर ~~अग्निष्टोम~~ सामवेद,
~~शिशिर~~ अतिच्छन्द त्रयस्त्रिंशस्तोम. रैवतसाम.

अग्नि वहनम् हविषाम् आवाहनम् देवानाम् दार्ढ्य विपाकम् अग्नेर्दैवतम् शूद्र ~~[illegible]~~
वायु-इन्द्र. रसानुप्रदान वृत्रवधः याचाश्च बलकृतिः इन्द्र दैवतम् वैश्य
सूर्य — रसादान क्षत्र.

विश्वेश्वरानन्द वेदसंस्थान से अच्छी पुस्तकें मिल सकती हैं

~~Bengal's eminent Hindus~~ | N. B. Sen. 7-50

Thoughts on Some Current problems | गुरु गोलवलकर जी 0-87.

दृष्टान्तसागर पाँचों भाग (}
प. हनुमानप्रसाद जी (} 7-00

लालचन्द लाइब्रेरी की पुस्तकसूची.

व्याकरण.

सांख्य

कुन्हनराजा की सांख्यकारिका

महाभारत में सांख्ययोग.

(225) { वेद में भी निघण्टु में गत्यर्थक धातु 222
{ लौकिक धातुपाठ में भी ~~गति~~ गत्यर्थक धातु बहुत हैं
और गति का स्वभाव गत्यर्थक हैं ||
गति प्रधान है।

जो नित्य वस्तु ज्ञानप्रधान
जो अनित्य वस्तु कर्मप्रधान - गतिप्रधान हैं

(226) संस्कृत भाषा में व्यवहृत रही क्रिया-प्रधान - आख्यात प्रधान
अप्रयुक्त होते होते कृत् प्रधान होगई।
आख्यात का विस्तार विशाल रहा।
तः, तवत्, इत्यादि का प्रयोग अत्यल्प होगया। प्राचीन ग्रन्थ
ब्राह्मण ग्रन्थों से लेकर महाभाष्य पर्यन्त क्रिया का प्रयोग
उत्तरोत्तर निर्बल है। बाद में क्रिया के प्रयोग में भीरुता के
कारण कृत् का प्रयोग अधिक होगया ||

|| वैदिक प्रक्रिया में प्रधान परम्परा उतरते या स्थूल से सूक्ष्म की ओर ||
जाने की प्रवृत्ति। भूलोक, हृदय। अन्तरिक्ष लोक, द्युलोक
परोक्ष - अतिपरोक्ष

प्रत्यक्ष - प्रमाण। अनुमानप्रमाण। शब्द-प्रमाण वेद-
अनुमान के लिए अविनाभाव के नानत्व
अतिपरोक्ष तत्त्व के लिए

स्व-स्वामिभाव - राजा और पुरुष
प्रकृतिविकार - यव और जन्तु
आधिराधेयभाव - वंशा और पर्व
पात्र - पात्रिक - अविदुग्धा - पीडा
साहचर्य - चकवाक - चक्रवाकी
प्रतिद्वन्द्विता शीत - उष्ण
निमित्त - नैमित्तिक - भोजन - भोजक

---

१. २. १२ उद्यम । भ्वादि।

शैली हीयमाचार्यस्य यत्र यस्य धातोर्ग्रहणमिच्छति तत्र तस्य श्तिपा ग्रहणं करोति। यथा ऽर्त्ति पिपर्त्योश्च (७.४.७७) धर्ति शाश्वत्योरितरथा ३.१.५६॥ न चेह श्तिपा निर्देशः कृतः

(१.२.१४)
|| यमो गन्धने (यमु गन्धनं सूचनम्। दोष प्रकाश्यमानस्य अवद्यस्य आविष्करणम्
|| मुनित्रय ने धातुओं के सूत्र - वार्तिक भाष्यादि में ~~न अन~~ धातु पाठ में पठित से इतर अर्थ भी दिए हैं। उन अर्थों को भी ध्यान में ध्यान देना चाहिए।
उपयमनम् स्वीकरणम् विवाह, दारकर्म, पाणिग्रहणम् इत्यर्थः॥
कर्मशब्दः क्रियावाची। दारक्रिया।
स्वीक्रिया इत्यत्र करणहेतौः हकारःस्य पराक्रियते

अलाक्षण्डैः॥
ध्रुव - व्याख्यानाधीनं अस्य शास्त्रस्य। जनाभाव। जनाभात। उ व्याख्यातव्यं। दोनों में क्रिया ~~अ~~ अध्याहार्य है॥ अथवा - भूधवनो भवति॥
प्रकरण के अनुकूल अर्थ देखकर निर्वाचन करो॥ व्याकरण में धातु
|| का ज्ञान ऊहा पर अवलम्बित है॥ पर ऊहा को शिष्टप्रयोग से बाँध लेना चाहिए। देवानाम् पूः (पुर्) नगर = शरीर है॥
|| शरीर(पुरि)॥ / नगर(पुरि)॥ जो विभाग करता शरीर के वो हो सकते॥
पुरि - शयः। पुरि - जातः॥ स्व - संस्कार - पदविभाग
वेद - ज्ञान के लिए अवधारण पूर्ववर्ती तत्त्व॥ स्व - संस्कार - पदविभाग॥
अदिति to ~~every thing~~ | माता वो गौर में बहुत कुछ रहता है
माता - जन्मकुछ है
ऋग्० १.८९.१० अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षम्॥

ब्राह्मण के उपकार और अपकार.

1. वेदपाठक
2. शान्तिप्रद है
3. सरल है
4. ईश्वर, ऋषियों, वेद का [illegible] है — भीरु है
5. [illegible] है — मलिन है
6. [illegible] है — लोभी है
7. ज्ञान का निःस्वार्थ दान करते हैं — कलियुग [illegible] कर देते हैं
8. अच्छे तेजस्वी हैं — [illegible] लिए [illegible]
9. अग्नि [illegible] है — [illegible] जाता है
10. जब जागता है तो अति [illegible] जाता है — [illegible] जाता है
11. प्रवचक है — [illegible]
12. [illegible] बनाता है — [illegible]
13. ज्ञान को [illegible] परिपूर्ण नहीं होता. — [illegible] कम जाता है।
14. पुरुषार्थ करता है — [illegible] है
15. गो-~~[illegible]~~ है — [illegible] नहीं [illegible]
16. शुद्ध भोजन करता है — [illegible]
17. शान्तिसंपदा में [illegible] है. — [illegible] चाहिए
18. पढ़ने लिखने में शूर है — [illegible]
19. ज्ञान शूर है ॥ — [illegible]
20. [illegible] है। ज्ञान-धन है — ज्ञान की दृष्टि से [illegible] है
21. शिक्षाप्रेमी है — [illegible] परीक्षा [illegible]
22. हृदय विशाल बनाओ तो, अन्य लोगों को प्रेम और सत्कार [illegible] हो जाता है
23. ब्राह्मणी का त्याग, तेजस्, अगाध है
24. [illegible] ब्राह्मणी का त्याग [illegible] है। [illegible] है

भारतीय जीवन में वृक्षों का स्थान

नामानि - आख्यातजानि।

शोक - शुचि

नवं, नूत्न, नूतन, नव्य, नवीन।

नया,

New.

पुराणं (तृतीयः पन्था:) | तीन लोकों से प्रथम न्यारी।

उपर्युक्त उदाहरण वैदिक साहित्य में अनेक शब्दों द्वारा इतना प्रचलित है॥

प्रत्न - था
पूर्व - था
विश्व - था
इम - था

प्रतिवैकल्पम्। अर्धे कल्पम्॥

मानवप्राचीन यज्ञेन यजन्ति यज्ञः इति.

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्॥

प्रतिबध्नाति। निबध्नाति। उपनिमीत॥ प्रतिबध्नातीति:।

उपमाती:॥

आयुर्वेदीय ग्रन्थों में कुलप्राय: कितने द्रव्य = पदार्थ हैं और उन का प्रमुख वर्गीकरण क्या है॥

१. धान्यवर्ग	द्रव्य	हरीतक्यादिवर्ग	अंकुर	स्थूल वर्गीकरण
२. मांसवर्ग	रस	कर्पूरादिवर्ग	मूल	काल दृष्टि से
३. शाकवर्ग	वीर्य	गुडूच्यादिवर्ग:	नाल	काल - आयुर्वेद
४. लवणादिवर्ग	विपाक	पुष्पवर्ग	पत्र	आयुर्वेद भूमिका।
५. फलवर्ग	प्रभाव	फलवर्ग	पुष्प	आयुर्वेदीय द्रव्य वर्गीकरण।
६. जलवर्ग	दीपन	वटादिवर्ग	क्षीर	
७. क्षीरवर्ग:	पाचन	धातुवर्ग	त्वक्	
८. तैलवर्ग	दीपन-पाचन	धान्यवर्ग.	कोष	
९. इक्षु-विकृतिवर्ग	शमन	शाकवर्ग	बीजकोष	
१०. मद्यवर्ग	अनुलोमन	वारिवर्ग	तण्डुल	
११. कृतान्नवर्ग.	स्रंसन	दुग्धवर्ग	कण	
१२. मधुवर्ग	भेदन	दधिवर्ग		
१३. आहारविधिवर्ग	रेचन	तक्रवर्ग		
१४. अनुपानवर्ग	वमन	नवनीतवर्ग		
१५. मिश्रकवर्ग॥	संशोधन	घृतवर्ग		
	ग्राही	मूत्रवर्ग		
	छेदन	तैलवर्ग		
	स्तम्भन	मधुवर्ग		
	लेखन	इक्षुवर्ग		
	वाजीकरण	सन्धानवर्ग		
	जनक	दुग्धादिवर्ग		
	प्रवर्तक	मांसवर्ग		
	जनक-प्रवर्तक	कृतान्नवर्ग		
	रसायन	अनेकार्थवर्ग		
	प्रमाथि			
	विष्यन्दि			
	मादक			
	अभिष्यन्दि			
	विदाहि			
	योगवाहि			

स्थूलदृष्टि

शीत	श्लक्ष्ण
उष्ण	कर्कश
स्निग्ध	सुगन्ध
रूक्ष	दुर्गन्ध
पिच्छिल	सर
विशद	मन्द
तीक्ष्ण	सूक्ष्म
मृदु	स्थिर
गुरु	
लघु	

अजीव शब्देन गतसारं लोमकम्युच्यते । नैतं तो गणाः मारुत

इन्द्रस्य पुरः षड् ऋषिणः मरुतः ।

स्वामी दयानन्द जी की प्रवचिता। व्यावहारिक, इन पृथिवी की, इनके देवताओं को, पितरों को, छोड़कर, इन लोक, परलोक, इन पितरों

वैदिक दर्शन की खोज, प्रचार, अनुशीलन करो ।

इन्द्र ऋषिणः । मरुतः । जीवः इन्द्रः प्राणाः मरुतः ॥

इन्द्रः मघवः ॥ जो जीव के अन्दर घटित हो रहा है वही बाहर भी हो रहा है।

" नवमासधृतं गर्भम् भास्करस्य गभस्तिभिः ।
पीत्वा रसं समुद्राणाम् द्यौः प्रसूते रसायनम् ॥

आकर्षण -	उत्थापन -	उन्मोचनम्
पूरक .	कुम्भक ,	रेचक.
आगम	स्वाध्याय -	प्रवचन - व्यवहार
अरहट्टचक्र पूरण	धारण ,	मोचन
स्त्री वीर्यग्रहण	धारण ,	गर्भमोचन
जायते अस्ति	विपरिणमते - वर्धते -	अपक्षीयते - विन
उत्पत्ति -	स्थिति -	प्रलय
बाल्य	यौवन	वार्धक्य
धनार्जन -	धनवर्धन -	धनव्यय.
कन्या जनन -	कन्यापोषण -	कन्यादान

८ - ३ - ६५   महाभारत का पाठ आरम्भ।

लोमहर्षण का पुत्र उग्रश्रवा: सौति पौराणिक:

नैमिषारण्य। कुलपति - शौनक। ॥ सुखासीन। पूरनशन ॥

विनयावनत। तपोवृद्धम् अभ्यगच्छत। अपि तत्रो वर्तते। ~~लौमहर्षिण~~ लौमहर्षिण:

कमलपत्राक्ष। कुत आगम्यते। राजर्षि जनमेजय के सर्पसत्र में।

वैशम्पायन। ऋषि - पावक वर्चस:। वैशम्पायन ने जनमेजय

को कथा सुनाई। अण्ड हुआ।

अप्रभ: सुरपूर्वे ये मनवश्च चतुर्दश।

एते प्रजानाम् पतय: एभि: कल्प: समाप्यते ॥

(अण्ड)

ब्रह्मा -- रुद्र -- मनु - प्रजापति, परमेष्ठी, प्रचेताओं के पुत्र।
(दक्ष के सात पुत्र
(क्रोध, तम, दम, विक्रीत
अङ्गिरा

तत्पश्चात्

२१ प्रजापति (सप्तर्षि १४ मनु
मरीच्यादि

लोकसाक्षिकम्।

यावत् मनुष्य ॥
पृथक्षे।

कुरुवंश
यदुवंश
भरतवंश
ययाति
इक्ष्वाकु

विश्वेदेवा:,
आदित्य
वसु,
अश्विनौ।
~~यक्ष~~
पक्षी साध्य
पिशाच
गुह्यक
पितर:

यथर्तावृतुलिङ्गानि नानारूपाणि पर्यये। दृश्यन्ते तानि तान्येव तथा भावा युगादिषु।

३३३३३ । देवता।

दिव: पुत्र, बृहद्भानु, चक्षु, आत्मा, विभावसु, सविता, ऋचीक, अर्क, भानु, आशावह, रवि

रवि = मह्य

रवि
देवभ्राट् सुभ्राट् | सुभ्राट् के पुत्र (दशज्योति, शतज्योति, सहस्रज्योति ॥

विस्तीर्यैतन् महत् ज्ञानमृषि: संक्षिप्य चाब्रवीत् ॥ इष्टं हि विदुषां लोके समासव्यासधारणम् ॥

(१) मन्वादि
(२) आस्तीकादि
(३) उपरिचरादि वसु

तपसा ब्रह्मचर्येण व्यस्य वेदं सनातनम्।
इतिहासमिमं चक्रे पुण्यं सत्यवती सुत: ॥

~~अष्टौ श्लोक सहस्राणि अष्टौ श्लोक शतानि च । अहं वेद्मि शुको वेत्ति संजयो वा~~

आ. पर्व. १.५४. ८१॥

(गोस्वामीजी की धर्मशीलता। विदुरनीतिचर्चा, कुन्तीका धैर्य (स्तुति))

इदं शतसहस्रं तु लोकानाम् पुण्यकर्मणाम्। उपाख्यानैः सह ज्ञेयम् आद्यं भारत मुत्तमम्

चतुर्विंशति साहस्रीं चक्रे भारत संहिताम्॥ १. १. १०२.

पहले पुरु को पढ़ाया। दयाशील। कीर्तिविधान। अकुतोभय

ईप्सितः सुमुत्थः मन्युः।

येषां शास्त्रानुगा बुद्धिर्न ते मुह्यन्ति भारत. १. १२२४॥

नियतात्मवतां। प्रतिविम्बम् इवादर्शे। न कश्चिद् व्यवजीवति

नवनीतम् यथा दध्नः।

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्। बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति

समन्तपञ्चक = कुरुक्षेत्र।

इलीउत्सेन मैं पहले सत्युगमें कृष्ण कहाया. (भारतकी पुरानी प्रति यहाँ रही

अधुना। अधुना अर्थात् अधुना है इदानीं॥

नलोपाख्यानं। (अंश + औषधि) सूक्ष्मशीचिन्ता समुत्पन्ना।

द्वैपायन (द्वीपवश) वेदविद्या – वेदविद्। वेदाचार्य – वेदव्यास

कृष्ण द्वैपायन॥ । विदुला की अपने पुत्र को शिक्षा॥

स्वामी दयानंद जी का उपदेश। भारतीय धर्म – संस्कृति – विद्या – इतिहास

के प्रेमी पर ध्यान रख लिया॥ न मैं सहूँ कृष्ण कहलाऊँ

न लवणा फेंक दो॥ कृपा मैया – ना मैया माँगी वाली॥

शौर्यमस्य। प्रतोद – चाबुक॥ अप्राप्तयौवन – अभिमन्यु। पाराशर्यो मुनिना।

महाभारतके आरम्भमें जब पर्वों का संक्षेप वर्णन और उन पर्वों पर का

मन पर स्पष्ट स्पष्ट असर होता है — । निर्विघ्नमाप्नुयात्॥ प्रकृतिमापन्नौ

नवनीतं हृदयं ब्राह्मणस्य वाचि क्षुरो निहितस्तीक्ष्णधारः।

तदुभयमेतद् विपरीतं क्षत्रियस्य वाङ्नवनीतं हृदयं तीक्ष्णधारम् इति।

महापुरुषों के जीवनचरित यदि हिंदी में मिल सकें॥

हिंदी विश्वकोशसे चरित।

बंगला में

अंग्रेजी में

अमेरिकन सहयोगसे National Biography.

मराठी का चरित कोश।

National Library में कितने चरित हैं

मिश्रबंधु	गुरुकुल
श्री मोर	दिल्ली के पुराने पुस्तकालय
कालिदास नाग	सेंट स्टीफन कॉलेज
शान्तिनिकेतन	आगरा
	मराठी जैन लिपि पुस्तकालय हिन्दी-जैन दिल्ली

केशवानन्द जी के पास रामकृष्ण प्रेम। पर इस रामकृष्ण का कहना कि स्वामी दयानन्द जी भी केशवचन्द्र का प्रेम करते थे ॥

श्री अरविन्द घोष के नाना थे श्री दयानन्द जी की स्मृतियाँ ॥

" श्री रामकृष्ण वचनामृत " प्रथम भाग ५९९ पृष्ठ.

दयानन्द जी का · दयानन्द केशव के लिए·

वंशपरम्परा से ब्राह्मण बनने की पद्धति में सुव्यवस्थित और परिमार्जित पुनःसंस्कृत करते न चाहिए। उसी से ब्राह्मण पैदा हो सकती है - हाँ उसमें इतर लोगों के आर्य समाज संस्थापक लोगों का योगदान भी अनुभव हो ॥ बड़ौदा महाराज ने पुरोहितों की परीक्षा निश्चित कर दी थी। धर्मशास्त्र दाक्षिणात्य विद्वान् ... इसी तरह से — ज्योतिषी विद्वान् बने। वह भी शायद ... के बाद ॥

सर्वे ज्ञानमूलं ... संख्यातुम् अशक्यानि। नापतेइदि वेपथु। ... शल्यं ... पाण्डु - अर्जुन - अभिमन्यु - परीक्षित। व्यास। विचित्रवीर्य। पाण्डु - अर्जुन - अभिमन्यु - परीक्षित - जनमेजय

धातुपाठ { धातुपाठ में · जैसे ... 'ओ' आदि अनुबन्ध भी बनाए हैं

परम्परा इतनी विच्छिन्न हो गई है, इसके आचार्यों के साथ मिलते जुलते, विचार-विनिमय के अवसर इतने कम हो गए कि ... अपार - इतर लोगों को आलसी और लड़ी में भी ... हो गई। उसकी जाति के आलस्य-प्रमाद के दोष से नित्य भाषा का लोप नित्य वेदों का लोप आ उपस्थित हुआ है। ... बौद्ध और महात्माओं का कितना उपकार है। इस के ... और ... का भी बड़ा अनुग्रह है।

पंजाबी आर्य के गुरु.

(१) विरजानन्द
(२) उदीच्य ...
(३) ... के विश्व ... थे ... उसके निजी पूर्व गुरु ... पढ़े थे
(४) तोतापुरी पंजाबी परमहंस रामकृष्ण का गुरु.
(५) ... के गुरु दयानन्द
(६) भारत में ... शासनिक ... गुरु ... आदि ... — ... उत्तर - दक्षिण ... गुरु और शिष्य मिल जाते हैं ॥
(७) बौद्धों के उदय में पंजाब ... है।

धातुपाठ — वर्ध धातोः नित्यसम्बन्धः बीभत्सते (मैथुनवधयोः)

(मो) प्रातःकाल पश्चात्य समाप्तत्वम् वर्तमानत्वम्।

(स्फुलनवृद्धिः)

(का) भूतः पञ्चविधस्तत्र जीवग्रामश्चतुर्विधः॥ वर्तमानो द्विधाख्यातः इत्येकादश कल्प

जरायुज, अण्डज, स्वेदज, उद्भिज्ज,

तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना। अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः

अनुशासन पर्व अध्याय॥२२८॥

प्रशास्त्रपादः। कर्णार्थः। अर्थ - प्रभुत की संस्कृत, शास्त्र

अनुकूल है, प्रबद्ध है।

(उमा) प्रश्न प्रतिक्रियावत्।

अजयो दीर्घसन्ध्यत्वाद् दीर्घमायुरवाप्नुवन्।

प्रज्ञां यशश्च कीर्तिं च ब्रह्मवर्चसमेव च।

देव, ऋषि, पितरः

इन् सर्वधातुभ्यः॥ उणादि ४/५५७ सूत्र

सर्वधातुभ्यः इन्

सर्वधातुभ्यः असुन्

सर्वधातुभ्यो मनिन्

यज्

हन्

स्पृ

धर्म

त्रि

च

भवत्

छिद्

ज्वल्

तन्

आचार्य

गति — यज्ञे

हिंसा — मिलते

प्रीयमाणो — मिलते

दान — मिलते

आदान

शब्द

क्षेपे

भेदन

वरणे

संवरणे

वेद शास्त्र की चर्चा (व्यक्ति)

" (परिपाटी)

दो विद्वान्

एक — तीन की गोष्ठी

पाँच की गोष्ठी

प्रामाणिक वाले

हिन्दी संस्कृत ~~अध्यापक~~ अध्यापक मण्डल

सम्मेलन।

प. प्रियव्रताजी

प. ब्रजलालजी

प. दीनानाथजी

प. शिवदत्तजी (देशवाल ब्राह्मण)

प. कृष्णचन्द्र शास्त्री (बालक)

प. ज्ञानचन्द्रजी

प. हीरालाल (प्रो. रामजीदास मोदी)

प. जीवनराम

(हाजरबाल वाले)

प. दयारामजी (अजमेर आर्य...)

आलस्यप्रमाद का बड़ा उदाहरण - मूल जोध्य सिद्धान्त का लोप : वैतस्यों
(१) शंकराचार्य जी गीता भाष्य में दैवी के गुणों में जनक, जीव, तमस का सुन्दर निरूपण करते हैं ॥

दशा तो अच्छी नहीं है । ~~[illegible]~~ उनकी जाति वाली समान है
तमाशा, शून्य, गहन, कपट, लोहार, हलकापन, अनेकाग्रता अव्यवहितचित्तता, उद्देश्यहीनता, उद्देश्य परिवर्तन, अनन्त आ जाति धन और लीन ।

द्रव्य - गुण - विशेष (1) सिद्धान्त (2) औषध द्रव्य आहार द्रव्य ।
द्रव्य । गुण । रस, वीर्य, विपाक । प्रभाव । कर्म
बालकृष्ण अमर जी पाठक ।। पदार्थ (अस्तित्व, अभिधेयत्व, ज्ञेय
द्रव्य रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च ।

पदार्थाः पञ्च तिष्ठन्ति स्वं स्वं कुर्वन्ति कर्म च ॥ भावमिश्र
द्रव्य (~~कार्य द्रव्य । कारण द्रव्य~~ । कारण द्रव्य । कार्य द्रव्य
पृथिवी, अप, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा - मन
चेतन - अचेतन

अन्तःचेतन । बहिःचेतन
जरायुज, अण्डज, स्वेदज उद्भिज्ज । औषधि द्रव्य
नागार्जुन का वैशेषिक सूत्र । सर्व द्रव्यं पाञ्चभौतिक
सिद्धान्त - द्रव्य लक्षण -
रसो गुणस्तथा वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च ।
पञ्चानां यः आधारः स्यात् द्रव्यमिति कथ्यते ।
गुरु - लघु शीत-उष्ण - स्निग्ध-रूक्ष - मन्द - तीक्ष्ण - स्थिर - सर - मृदु कठिन - विशद पिच्छिल - श्लक्ष्ण - खर - स्थूल - सूक्ष्म - सान्द्र द्रवाः ॥
लक्षण इतना स्थूल होना चाहिए जो किसी दूसरे के लिए भी लागू ही न हो और वो भी समझ में आ जाए । इसलिए जो वैद्य लक्षण जानते हैं और उनमें वाद-जल्प- वितण्डा की भी मैं नहीं रहती । जैसे महात्मा जी का गोल कमरा
रस । मधुर ।
मधुरविपाकरसे — अम्लविपाकरसे — कटुविपाकरसे
कफ पित्त वायु
active principle = वीर्य - तासीर
औषध - शमन (ऊर्ध्वभाग - अधोभाग - उभयभाग संशोधन
संशमन - संग्राहि - अग्निदीपन - पीडन - लेखन - बृंहण - रसायन
वाजीकरण - श्वयथुहर - विलयन - ~~[illegible]~~ दहन - दारण - मादन
प्राणघ्न विष - प्रशमनादीनि । वीर्य प्राधान्यात् भवन्ति
नवीन नाम के गुण कर्मों का समूह परिभाषा द्वारा निर्णय करना चाहिए

काले की व्यापार। ... ॥ बौद्ध

बौद्ध

नेपाल हिन्दू

इस्लाम सिक्ख आदिवासी

ईसाई

जैन उपेक्षित हिन्दू धर्म

ब्राह्मणवाद इस्लाम बौद्ध

पारसी

उपेक्षित वर्ग

जैन

हिन्दू धर्म

अछूत उपेक्षित

ईसाई

मुसलमान

बौद्ध

भारी दयानन्द

हिन्दू धर्म में वो।

शूद्र और हूण बनाओ

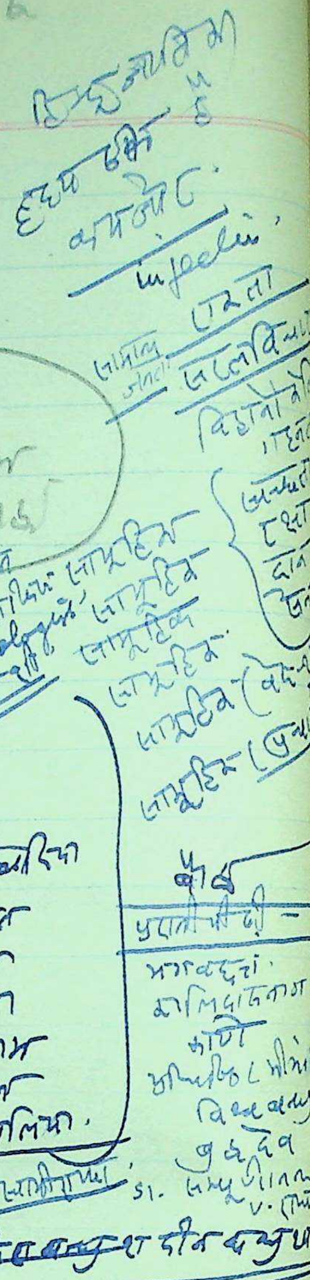
पालन बौद्ध धर्म

जनतन्त्र में है

...

बलवान

राजनीति में बहुत ... धर्म में बड़ा ...



(2) ... ... ।

... ...

...

...

...

नीतिशास्त्र।

... प्रजातन्त्रवाली।

मध्य लोक

बिड़ला का पार्लमेन्ट।

मूर्त — सूची. द्रव्य - प्रत्यक्ष भूमि के तत्वों का ज्ञान। (पृथिवी, अप, तेज)
अमूर्त — अमूर्त. अनारिक्ष- वायु। आकाश (अमूर्त।
परोक्ष. अतिपरोक्ष.

(शब्द + अर्थ (जल) + ... । अन्न। औषध। चोट और स्थूल तत्व।
... । स्थूलदर्शी। शरीर ... । अन्नमय कोश।

Physiology, Anatomy. (... वैधक सम्प्रदायों में व्यवहृत
अन्न और औषध। (... रोग ... स्थूल स्थूल दोनों
के प्रयोग में ... । ... के ... है। बहुत ... ।
... और ... ...

वैशेषिक ...
कर्म ...

स्वाउध मातृभाषामें पढ़ाइए ॥

स्वामी दयानन्द – लैं वर्ष आगे

दक्षिणामूर्ति, स्वामी श्रद्धानन्द। लेखराम। महात्मा हंसराज और भाई परमानन्द 20 वर्ष आगे देखते थे ॥

(Ameerchand Rangila

(२) पंजाब का इतिहास।

(३) पंजाब के पिछले एक वर्ष के आन्दोलन।

(४) सिंह सभा, मुस्लिम लसवाय। ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज, सनातन धर्म का जागरण। पंजाब और बंगाल में स्त्री शिक्षा के जागरण। कब की जागृति हो गई है। पंजाब में सनातन धर्म रह गया है असली रूप वहाँ। कब ये पुरी प्रदेश में जलन है। केवल उनमें धनिक लोग ही रही है उनकी प्रलिक, फैक्ट अपनी भी चाहिए। पुरी common sense। खूब है ॥

कर्मकाण्ड और निरुक्त के वेद मन्त्रों के अर्थ तो बहुत छोड़ते लेने चाहिए ॥

What constitutes a great Pandit!

आयुर्वेद
सिद्ध
यूनानी।
एलोपैथी
होमियोपैथी
बायोकैमिक
चीनी।
नेचुरोपैथी
Christian Science.

अहो अहो ब्राह्मण:
स्वस्ति,
शान्ति:। स्वागतम्। सुस्वागतं एवमेव। श्रुतम्। किमभिधानं भवतो तोहि हानि:। अस्तु। ओम्। हरि: ओम्। कविसमय। वैयाकरणनिकाय-समय॥ हैदिबाद ॥

// संस्कृतज्ञों का विद्वानों का एक अपना ही – जगत है जिसमें वे उसमें रहते हैं और आनन्द लेते हैं ॥

(१) कथाएँ, परम्परागत

(२) व्याकरण, न्याय, अमरकोश, जन्मपत्री, जातिवादिता, विद्याभिमान, गुरुपूजा, गोत्राभिमान, शास्त्री, कर्मकाण्ड- सम्बन्धी मन्त्र, औपचारिक उक्तियाँ, आमन्त्रण, दन्तकथाएँ, विद्वानों आचार्यों के बारे में चुटकुले, शास्त्रार्थ, इतर विद्वानों के बलाबल, पाण्डित्य-अपाण्डित्य का ज्ञान, जपादिरता, शिखासूत्र, शास्त्र का कण्ठस्थ करना, महापण्डित काशी-गमन, अपने को विद्या के लिए पीस डालना संकल्प पाठ, गायत्री, अभिमन्त्रित, प्राणप्रतिष्ठा स्वस्तिवाचन शुद्धाशुद्धि, कुछ बाल बाद ईर्ष्या से विमुक्त होकर दूसरे के गुणों का ग्रहण। टीका लिखना। उपमा और आगामि पढ़ाना, कालिदास, भारवि, माघ, नैषधमतिः। मल्लिनाथ के प्रेम और उत्कर्ष आदर। प्रतिवादि-भयङ्कर। शास्त्रार्थी। आह्वान, आस्फालन, कैयट, कुमारिलभट्ट, शंकराचार्य, उदयनाचार्य, मण्डन, हर्ष, वाचस्पति बाण, भट्टोजि दीक्षित, पण्डितराज जगन्नाथ, भर्तृहरि, भोज, विक्रमादित्य आदि के बारे में छोटे छोटे चुटकुले ॥ गुरुभक्ति, गुरु की चरण वन्दना। गुरु मृत्यु पर गहरा विलाप। नवद्वीप। नागेशभट्ट के बाद नया पण्डित मान

लेखमाला का शीर्षक (भारतीय संस्कृति के रूप) प्रतिसप्ताह आगे आगे जा रहे हैं वे कौन

(१) गोडे
(२) ब्रजेन्द्रनाथ शील
(३) संस्कृत के महापण्डित
(४) रामावतार पाण्डे
(५) राधा कुमुद मुकर्जी
(६) राधा कमल मुकर्जी
(७) रवीन्द्रनाथ टागोर
(८) अवनीन्द्रनाथ टागोर
(९) रामकृष्ण परमहंस
(१०) विवेकानन्द
(११) रामकृष्ण मिशन के लोग
(१२) आर्यसमाज के उपदेशक
(१३) एनी बेसेन्ट
(१४) [illegible] पाल
(१५) स्वामी दयानन्द जी
(१६) पण्डित गुरुदत्त
(१७) पण्डित लेखराम
(१८) स्वामी श्रद्धानन्द
(१९) स्वामी सर्वदानन्द
(२०) स्वामी दर्शनानन्द
(२१) प. नरदेव वेदतीर्थ
(२२) प. बुद्धदेव जी
(२३) प. विश्वनाथ
(२४) पं. भगवद्दत्त
(२५) विनयकुमार सरकार
(२६) प. रामगोपाल वैद्य
(२७) प. रामचन्द्र देहलवी
(२८) प. गङ्गानाथ झा
(२९) रामकृष्ण भण्डारकर
(३०) वासुदेव शास्त्री अभ्यंकर
(३१) काशीनाथ शास्त्री अभ्यंकर
(३२) बेल्वालकर
(३३) शङ्कर पाण्डुरङ्ग दीक्षित
(३४) सी.पी. रामस्वामी अय्यर
(३५) चित्तरंजनदास । [illegible] (आनन्दकुमार स्वामी) (लवेल्ली)
(३६) यूरोपियन Indologist.
(३७) अरविन्द घोष
(३८) बारीन्द्रकुमार घोष
(३९) गान्धी

(४०) कार्वे
(४१) तिलक
(४२) श्रीमान् [illegible]
(४३) रानाडे
(४४) प. भीमसेन शर्मा
(४५) प. मदनमोहन मालवीय
(४६) प्र. गङ्गानाथ झा
(४७) म.म. शिवकुमार शास्त्री
(४८) बालशास्त्री रानडे
(४९) श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
(५०) प. जयदेव शर्मा
(५१) काशीप्रसाद जायसवाल
(५२) राजगोपालाचार्य
(५३) कन्हैयालाल मुंशी
(५४) प. सुखलाल जी (ए. पुरातत्वमंदिर)
(५५) मुनि जिनविजय जी
(५६) म.म. योगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य
(५७) प. विधुशेखर शास्त्री
(५८) क्षितिमोहन सेन
(५९) [illegible]
(६०) [illegible]
(६१) [illegible]
(६२) प. युधिष्ठिर मीमांसक
(६३) प. उदयवीर शास्त्री
(६४) प. हरिदत्त शास्त्री नानातीर्थ
(६५) प. युधिष्ठिर मीमांसक
(६६) धर्मेन्द्रनाथ तर्कशिरोमणि
(६७) म.म. [illegible] मिश्र
(६८) डा. वासुदेवशरण अग्रवाल
(६९) प्रभुदयाल अग्निहोत्री
(७०) [illegible] मण्डली
(७१) प्र. हंसराज
(७२) व्याख्यान वा. दीनदयालु शर्मा
(७३) प. [illegible] शर्मा
(७४) प. विद्याधर शर्मा (बीकानेर)
(७५) [illegible]

७७. [illegible] गुप्त
७८. वैद्य [illegible] देव जी
७९. डा. सत्यव्रत सिद्धान्ता[illegible]
(८०) चन्द्रवती लखनपाल
(८१) आचार्य रामदेव
(८२) मनसा राम उपदेशक
(८३) मुरारीलाल शर्मा
(८४) पं. इन्द्र
(८५) पं. [illegible] शास्त्री
(८६) पं. चन्द्रमणि
(८७) प. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
(८८) डा. सिद्धेश्वर वर्मा
(८९) प. हंसराज (लाला [illegible])
(९०) श्री [illegible]
(९१) [illegible]
(९२) पार्जीटर
(९३) टाड
(९४) [illegible]
(९५) जवाहरलाल ने[illegible]
(९६) विद्याधर [illegible] गौड
(९७) अयोध्यानाथ [illegible]
(९८) वैद्यनाथ शा[illegible]
(९९) मधुसूदन [illegible]
(१००) म.म. गिरिधर चतुर्वेदी
(१०१) बलदेव उपाध्याय
(१०२) प. चूडामणि [illegible]
(१०३) चन्द्रमाना [illegible]
(१०३) प. दीनानाथ शास्त्री [illegible]
(१०४) बी. [illegible]
(१०५) [illegible]
(१०६) [illegible]
(१०७) [illegible]
(१०८) [illegible]

//

आगम, स्वाध्याय, प्रवचन, व्यवहार। चारों द्वारा ही विद्या सुरक्षित रह सकती है। साधन जुटाने चाहिएँ। योजक स्तत्र दुर्लभः

अर्थ अर्थ व्याख्या॥ सेकेतियों के विग्रह-वाक्य भी बड़े अद्भुत होते हैं पुरः एनं दधाति इति पुरोहितः। देवाः एनं देयासुः इति देवदत्तः। पङ्कात् जातम् पङ्कजम्॥

// जाति अकर्मी हो गई है बालविवाह के - अजन्-दर्शन के अवलम्बन से, इसलिए हस्त-पाद चलाती नहीं। मध्यदेश के लोग चलकर देश-देशान्तरों में नहीं पहुँचते। पेट हिलता डुलता नहीं इसलिए भारत की सीमाओं पर लोग नहीं पहुँचते। पंजाबी और सिक्ख पहुँचते हैं वे ही लड़ाई-केन्द्रों में लड़ते हैं। इसलिए उनका बल, उत्साह, तेजस्विता, मनुष्यत्व, सहिष्णुता बढ़ते हैं - उन्हीं का भारत पर प्रभाव हो जायगा।

और किनारों के चतुर्दिक् सीमा के लोगों तक उत्साह, ज्ञान, विद्या, धर्म, साधु न पहुँचने के कारण लोग हिन्दू धर्म, हिन्दू जाति, हिन्दू सभ्यता के विरुद्ध हो जाते हैं। यह बात विदेशी मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, नास्तिक, साम्यवादी, समाजवादी सभी समझते हैं और इसलिए दोहन, शोषण, आक्रमण करते रहते हैं। वेद की भी समस्या इसी से है। व्यावहारिक वैदिक धर्म चाहिए। केवल शास्त्र वेदान्त से काम न चलेगा। दयानन्द, तिलक, विवेकानन्द, मालवीय, श्रद्धानन्द, हंसराज, लाजपतराय, ठक्के, एनी बेसेन्ट, राय, आदि की दौड़, विवेचना, जनचेतना आदि की तरह निर्भीक होने से काम चलेगा॥

धीरे धीरे भेदों को छोड़कर समान दृष्टिकोण को पकड़िये। आर्य जाति का समग्रदर्शन नहीं समझते हैं। शिष्य, श्रोता को देखकर स्वामी जी को आर्य समाज के पक्ष, उनके सिद्धान्त दयानन्द के विपरीत रखने पड़े। श्रोता की रुचि का ख्याल है। इसलिए ज्ञान, विज्ञान, विद्या, आगम, स्वाध्याय, प्रवचन, व्यवहार चारों के जानने वाले और जनता के हृदय के मिलती है॥ श्री अरविन्द और घोष जी तथा दयानन्द को खूब समझते हैं॥

स्वामी दयानन्द जी की दृष्टि॥

(१) इत इदं जगत् की।
(२) सू लोक की।
(३) प्रवाहित धर्म, चतुर्वर्ण, चतुराश्रम की
(४) वैशेषिक दर्शन।
(५) यज्ञ-होम की।
(६) वेद की
(७) गो-ब्राह्मण की।
(८) अनमेय प्राय मय की अवस्था की
(९) पठन, पुरुषार्थ की।
(१०) सनातन + समाज की

(११) कला-शिल्प की
(१२) इष्टपूर्त चरित्र की
(१३) शिक्षा, अभिहित की
(१४) हिन्दू जाति के उद्धार की
(१५) समन्वय की।
(१६) अनेकता। प्रति पुरुषार्थ की।
(१७) मुसलमानों रक्षा की।
(१८) सेवा में पुलिस का हक्की
(१९) जब बड़ी आर्यों के उद्धार की
(२०) मनुष्यता की दृष्टि थी।

संक्षेप में।

// { इहलोकमें / परलोकमें पितृ और देव हैं और } इहलोकोंमें भी हैं
उन्हें उनके पाठ अग्नि हव्य, कव्य लेजाता है
वेदभी कहता है
~~हिन्दूधर्मकी परम्पराभी कहती है~~ ॥

प्रत्यक्ष लोक और तत्वभी हैं
और परोक्ष और अतिपरोक्ष तत्वभी हैं
प्रत्यक्ष । अनुमान । आगम । ~~तीनों ही प्रमाण~~ हैं ॥
हमें पहले इष्ट, प्रत्यक्ष तत्वकी उपासना करनी चाहिए

वे "लेखकोंके प्रियवाक्य" देवदत्तः आयाति, पचति, पठति । पाठम् आदि । (शालियमें विद्या-स्थानमें) (विद्यापत्तनम्)

चतुर्दश विद्या-स्थानानि
राजशेखर, 890-9.0 (निर्भयमहेन्द्रपाल का गुरु.
पुत्र
महीपाल (लेखक 910-940 } मध्यदेश - वाल्मीकि जी

विक्रम 974 । A.D 917-918 } आदि हर्षवर्धन (कर्पूरमञ्जरी
गुर्जर-प्रतिहार वंश. पालवंश गोपाल (976-1026)

R.D. बेनर्जी (Pala's of Bengal)
आनन्दवर्धन (857-884 A.D)
सोमदेव
वाक्कूल
अभिनवगुप्त } हरवंशी ! काव्यमीमांसा, विद्धशालभञ्जिका, बालरामायण, हरविलास | कर्पूरमञ्जरी, अवन्ति-सुन्दरी

उद्योतकर
कमाल
शंकर } धर्मकीर्ति, शान्तरक्षित, कमलशील }

// "अनयेन कृतं लिङ्गम् समुदायस्य विशेषरूपम्" //

भात
लोकम्
माकह
लोक-
रुद्र
आनन्दवर्धन

" अस्यैव कृतेलिङ्गा समुदायस्य विशेषणम्" (माधवीय धातुवृत्तिः) (२०३ ६०)

संसारसागरमिमं भ्रमता नितान्तं जीवेन मानवभवः समवापि दैवात्।
तत्रापि यत् भुवनमान्यकुले प्रसूतिः सत्सङ्गतिश्च तदिहान्धकवर्तकीयम् ॥
(यशस्तिलक II। (153)

घातयितुमेव नीचः परकार्यं वेत्ति न प्रसाधयितुम्।
पातयितुमेव शक्तिर्नाखोरुद्धर्तुमन्नपिटम् ॥ (पञ्चतन्त्र I. 363)

विषं विषेण व्यथते वज्रं वज्रेण भिद्यते। गजेन्द्रो दृष्टसारेण गजेन्द्रेणैव बध्यते।
(H. W. Thomas (India Office Librarian) (नीतिसार VIII. 67)
St. Petersburg. Lexicon ॥

कामन्दक नीतिसार।
आयुर्घृतम् नदीपुण्यं भयं चौरः प्रियं प्रिया। वैरं द्यूतं गुरुर्ज्ञानं श्रेयो ब्राह्मणपूजनम्।
... पुण्यं प्रत्यक्षो ज्वरः।
आशामोदकतृप्ता ये ये चोपार्जितमोदकाः। रसवीर्यविपाकादि तुल्यं तेषां प्रजायते ॥
इक्षुकाण्डं न दः कश्चिदिभावासक्तमानसः। समीपेनापि गच्छन्तं राजानं नाववुध्यवान्।

// गो-दृष्टि- भौतिक दृष्टि से देखा जाए तो स्थूल और प्रत्यक्ष ही दीखता है और अप्रत्यक्ष
सूक्ष्म, अप्रत्यक्ष, एकीभूत, अदृष्ट वा दर्शन नहीं होता है ॥
यदि शक्ति नहीं तो कह देना चाहिए कि हमें नहीं मालूम, छोटे को
अधिक जानने वालों को मालूम होगा ॥

ऐठन, खिंचाव, अकड़ाव, तनाव)
विजायते (व्याती है) आप्त आर्ष (विजायते ॥
हिन्दी निरुक्ति कोश। (एक हिन्दी कोश जिसमें निरुक्ति भी दी है ॥

द्रव्य
कारण द्रव्य — कार्य द्रव्य
पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु - आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन — चेतन — अचेतन
कीट चेतन — अन्तश्चेतन
जरायुज, अण्डज, स्वेदज — उद्भिज्ज
पार्थिव द्रव्य।
आहार द्रव्य — औषध

पाञ्चभौतिकं

रसो गुणस्तथा वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च ।

पञ्चानामपि यः समाहारस्तद् द्रव्यमिति कथ्यते ।

शारीरगुण — २०

गुरु-लघु — शीतोष्ण-स्निग्ध-रूक्ष मन्द-तीक्ष्ण स्थिर-सर-मृदु-कठिन, विशद-पिच्छिल

श्लक्ष्ण-खर - सूक्ष्म-स्थूल - सान्द्र - द्रव ॥

आत्म गुण :

ज्ञान - दुःख - इच्छा - द्वेष प्रयत्न - ज्ञान ॥

सामान्यगुण

पर - अपर -

(२५)

उत्कृष्ट शक्ति सम्पन्न (मृदु - तीक्ष्ण, शीत - उष्ण, गुरु - लघु - स्निग्ध - रूक्ष ॥
= वीर्य

अन्न रस को रस और में अव्यक्त हो उसे अनुरस ।

मधुपाक — वीर्य (शीतोष्ण) विपाक — प्रभाव

मुख्य भोजन अवस्था पाक (जठराग्नि पाक)

(तीव्र)

प्रथमपाक मधुर-प्राय । द्वितीयपाक में अम्ल प्राय । तृतीयपाक में कटु प्राय

मल - कफ वात पित्त - मूत्र पुरीष ।

मधुर - लवण का विपाक मधुर — कफ

अम्ल का विपाक — अम्ल — पित्त

कटु, तिक्त - कषाय / कटु (लघु) ... वात

महाभूतों में प्रधानता रस में
विशिष्ट शक्ति से वीर्य
अचिन्त्य शक्ति को ~~प्रभाव~~ प्रभाव ।
} द्रव्यों में active principle

वैशेषिक ५ कर्मों के नानाभेद आयुर्वेद में ॥

(गोधूम - तण्डुल) आहार | (गुडूची - शुण्ठी) औषध ॥

संस्कारविधि । (प्रथम संस्करण)

संस्कार विधि

(५) ग्रन्थ (पारस्कर गृह्यसूत्र) (आश्वलायन गृह्यसूत्र) (कुमारिल भट्ट -
प्रणीत आश्वलायन गृह्यकारिका) (गोभिलीय गृह्यसूत्र) सामवेद -
मन्त्र ब्राह्मण) (तैत्तिरीयारण्यक) आपस्तम्ब धर्मसूत्र) निघण्टु -
निरुक्त) चारों वेदों के सायणाचार्य, स्वामी दयानन्द सरस्वती उव्वट,
आदि के भाष्य) (मानवगृह्यसूत्र) आपस्तम्बीय गृह्यसूत्र ।
डा. कल्याणदास बम्बई, यादवजी त्रिकमजी (आयुर्वेदीय ग्रन्थमाला
छोलीबगला) (डा. हरिदत्त शास्त्री । मास्टर आत्मारामजी, पं. भीमसेन
जी (ज्वालापुर). पं. भीमसेन (इटावा) रामगोपाल विद्यालंकार ॥
प्रथम संस्कारविधि । आरम्भ (१९३२ संवत् कार्तिक कृष्णपक्ष ३० शनिवार
(छपा १८८०) आषाढ वदी १३ रविवार)
भूमिका में शान्तिः । ओम् सहनाववतु .... ।
(तैत्तिरीयारण्यके अष्टम प्रपाठकः । प्रथमानुवाकः ॥
गर्भाधान मृत्यु पर्यन्त । षोडश संस्कार । और्ध्वदैहिक । शरीरात्म -
शुद्धि हेतु ॥ शिक्षा + ओषधियाँ ॥
(१९३६ कार्तिक कृष्णा । अमावास्या शनिवार । १९४० आषाढ -
कृष्णा १२ रविवार पुनः संस्करण जानाति इच्छति, करोति
ईश्वर - स्तुति - प्रार्थनोपासना मन्त्राः (स्तुति - ज्ञान) प्रार्थना (यजुर्वेद)
उपासना (सामवेद) । (अथ स्वस्तिवाचनम्) ऋग्, यजुः - साम, अथर्व,
शान्तिप्रकरण (ऋग् यजुः साम - अथर्व) सामान्य प्रकरणम्
यज्ञदेश । यज्ञशाला । यज्ञकुण्ड का परिमाण, यज्ञपात्रों के लक्षण
आपस्तम्बीय यज्ञपरिभाषा सूत्र शाङ्खायन श्रौतसूत्र । यज्ञसमिधा
पलाश - शमी, पीपल, वट, गूलर, आम, बिल्व । इनके -
आयुर्वेदीय गुण दोषों का ज्ञान (वायुरूप में (फल अग्नि द्वारा वर्षा)
देवों का दूत (वातघ्नाः) । जलद्वारा । (शुद्धि) के लाभ)
चार प्रकार के होमद्रव्य (सुगन्धित - पुष्टिकारक - मिष्ट - (रोगनाशक)
आयुर्वेद को साथ लेते थे तो वर्षा प्रचार पूर्वक और औषधि पूर्वक न होता
आयुर्वेद द्वारा पृथक् वस्तुओं प्रचार जल्दी होती है। आयुर्वेद - में
रोगनिवारण दोनों में ॥ प्रत्यक्ष में । और इन्कार नहीं कर सकते ॥
स्थालीपाक (भात खिचड़ी, खीर, लड्डू (मोहनभोग)
यज्ञपात्र (ध्रुवा, उपभृत, जुहू, स्रुवा) जुहू (पलाश की) उपभृत
पीपल की) ध्रुवा (विकङ्कत का) स्रुवा (खदिर का) (अग्निहोत्रहवणी)
प्रोक्षणी । (वारुणी वृक्ष का कूर्च)

वेद। वस्त्र (आच्छादयते) उलूखल, मुसल। मूसल (खदिर)
उलूखल ढाक का। शूर्प- (छाज) बाँस का। शम्या।
कृष्णाजिन। कृष्णाजिन। दृषद् उपल। इडापात्र
आग्नीध्र। पुरोडाश-पात्री। शतावदान। प्राशित्र हरण।
षडवत्त। अन्तर्धान कट। उपवेश। (खूँटा) यजमान पूर्णपात्र
यजमानपत्नीपूर्णपात्र। प्रणीतापात्र (पीपल का) आज्यस्थाली —
चरुस्थाली। अन्वाहार्यपात्र। कुश। समिध। (कुश - बर्हिष)
उदकपात्र/ वस्त्र। यजमान और यजमानपत्नी के लिए —
क्षौम वस्त्र।
विद्वान् श्रोत्रिय पुरुष यज्ञ का पाठ और अर्थ ज्ञान।
लिपिविज्ञान परमात्मा में ध्यान लगाकर। वाणी उच्चारण उनमें
ध्यान लगाना, उनमें और विचारें।
यज्ञपात्र - स्रुच्। स्रुव। शम्या। स्फ्य। पात्री। उलूखल।
मुसल। उपल। शतावदान। कूर्च। अन्तर्धान। (बाँस) उपभृत।
अभाणी। प्राशित्रहरण। पिष्टपात्री। अग्नि। आवली।
चात्र। षडवत्त। पुरोडाशपात्री। इडा। प्रणीता। प्राक्षणी।
अग्नीध्र। मूलोखल। उपवेश। शूर्प। शूर्प।
ऋत्विक् वरण। ४ पुरोहित। (४ ऋत्विक् होता पुरोहित अध्वर्यु
होता (पूर्वमुख)। अध्वर्यु (दक्षिणाभिमुख) उद्गाता (पश्चिमाभिमुख), ब्रह्मा (उत्तर मुख)
अपने अपने आसन पर बैठें आसन। ओम् अमृतोपस्तरणमसि —
तैत्तिरीय आरण्यक प्र. १० / अनुवाक ३२, ३५॥
अंगस्पर्श = वाङ्मे (पारस्कर गृह्यसूत्र (कण्डिका २। सूत्र २५
ओम् मूर्धा चासि। गोभिल गृह्य सूत्र।
घृतप्रदीपन।
ओम् भूर्भुवः स्वः द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
यजुः। अध्याय ३॥ मन्त्र ५॥
प्रज्वलित अग्नि को वेदी में रखें।
|| पाकशाला में गृहस्थ के उपरान्त हवन के द्वारा अग्नि प्रतिष्ठित करते
जो अग्नि आधान कर जाता है।
उद् बुध्यस्वाग्ने। यजुः अ. १५। मन्त्र ५४॥
अथर्ववेद (काण्ड १९ अध्याय ६। सूक्त ६०-६२॥
ओम् वाङ् मे आस्ये। प्राणश्चक्षुः श्रोत्रम्।

अग्न्याधान इध्म आनो । (आश्वलायन गृह्यसूत्र प्रथम अध्याय कण्डिका दसवीं । सूत्र १२ ॥

{ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के घर से अग्नि लावें
(गोभिल गृह्यसूत्र प्र. १ । का. २ । सू. ६.

बहु पशु - वैश्य के घर से (गो. गृह्य. १ । २ । सूत्र ३ ॥

समिधाग्निं दुवस्यत
सुसमिद्धाय शोचिषे
तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो } यजुः अध्याय ३ । मन्त्र १, २, ३ ॥

होम का शाकल्य । यथावत् विधि से बनाया हो ।

दर्वी, [illegible], [illegible], काष्ठ पात्र ।

आहुति ६ मासा —— अधिक से अधिक ६ टाँक ॥

आचमन / आघारावाज्य / भागाज्याहुति

अदितेऽनुमन्यस्व । पूर्व
अनुमतेऽनुमन्यस्व पश्चिम
सरस्वत्यनुमन्यस्व । उत्तर } गोभिल गृह्यसूत्र । १ । ३ । मन्त्र १ - ३ ॥
आर्यसमाज पद्धति में सरस्वत्यनुमन्यस्व

ओम् देव सवितः प्रसुव यज्ञं —— (यजु. अध्याय ३० । मन्त्र १ ॥

प्रजापतये स्वाहा इन्द्राय स्वाहा । आघारावाज्य भागाहुति

अग्नये स्वाहा - सोमाय स्वाहा । आज्य भागाहुति

व्याहृति आहुति

ओम् भूरग्नये
भुवर्वायवे
स्वरादित्याय
भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः ॥ } पारस्कर गृह्य । १ । ५ । ३, ४

{ यदस्य कर्मणो (शत. १४ । ८ । ७ । ५ ॥

विशुद्ध पाठ है । या विद्वान ॥ (आर्यवेद पद्धति में [illegible] पाठ है ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः अग्न आयूंषि
भूर्भुवः स्वः । अग्नि ऋषिः ।
भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा } ऋग्वेद मण्डल ९ सूक्त ६६ मन्त्र १९, २०, २१ ॥
भूर्भुवः प्रजापते न त्वदेता (ऋ. मण्ड. १० । १२१ । १० ।

कुलञ्च शीलञ्च वपुर्यशश्च विद्याञ्च वित्तञ्च सनाथतांच ।
एतान् गुणान् सप्त परीक्ष्य कन्या देया बुधैः शेषमचिन्तनीयम् ।

मधुश्च माधवश्च शुक्रश्च शुचिश्च नभश्च नभस्यश्च इषश्च ऊर्जश्च,
सहश्च सहस्यश्च तपश्च तपस्यश्च ॥

चैत्र वैशाख ज्येष्ठ आषाढ श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक
मार्गशीर्ष पौष माघ फाल्गुन

मीन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनुष
मकर कुम्भ ।

		नक्षत्र	देवता
प्रतिपद्	ब्रह्मन्	अश्विनी	अश्विन (अश्विनौ
द्वितीया	त्वष्टृ	भरणी	यम
तृतीया	विष्णु	कृत्तिका	अग्नि
चतुर्थी	यम	रोहिणी	प्रजापति
पञ्चमी	सोम	मृगशीर्ष	सोम
षष्ठी	कुमार	आर्द्रा	रुद्र
सप्तमी	मुनि	पुनर्वसु	अदिति
अष्टमी	वसु	पुष्य	बृहस्पति
नवमी	शिव	आश्लेषा	सर्पः
दशमी	धर्म	मघा	पितृ
एकादशी	रुद्र	पूर्वाफाल्गुनी	भग
द्वादशी	वायु	उत्तराफाल्गुनी	अर्यमन्
त्रयोदशी	काम	हस्त	सवितृ
चतुर्दशी	अनन्त	चित्रा	त्वष्टा
पञ्चदशी	विश्वेदेवा	स्वाती	वायु
अमावास्या	पितरः ।	विशाखा	इन्द्राग्नी
		अनुराधा	मित्र
		ज्येष्ठा	इन्द्र
		मूल	निर्ऋति
		पूर्वाषाढ	अप
		उत्तराषाढ	विश्वेदेव
		श्रवण	विष्णु
		धनिष्ठा	वसु
		शतभिषज	वरुण
		पूर्वाभाद्रपदा	अजएकपाद
		उत्तराभाद्रपदा	अहिर्बुध्न्य
		रेवती	पूषन्

यव - सर्षप - धान्य - माष ।

ब्राह्मण पयस्
क्षत्रिय यवागू
वैश्य - आमिक्षा

भोजनान्ते द्विजातीनाम् पायसोऽन्न तर्पिता (पायसेन तर्पिता)
गो-भू-तिल हिरण्यानि युक्तवद्भ्यः प्रदापयेत् ॥

ऋतु - क्षेत्र - बीज - जल
तैल - माष - यव - तण्डुल

(शिक्षा + व्याकरण + वैशेषिक + वैद्यक + कोश +
ज्योतिष नीतिशास्त्र + सम्भाषण +

संस्कृताध्ययनस्य उपक्रम भूमिका ।)

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के

जन्मसंवत् १८८१. ईसवी सन् १८२४ . मृत्युसंवत् १९४० मृत्यु सन् १८८[illegible]

१. भारत के मुख्य मुख्य जनपद खण्डों के इतिहास.
२. भारत के जनपद खण्डों का ब्रिटिश कालीन इतिहास.
३. ब्रिटिश कालीन नेताओं के जरिए अथवा प्रभावशाली व्यक्तियों के धार्मिक सम्पर्क.
४. राजा राममोहन राय. — बारीन्द्र कुमार घोष
द्वारकानाथ ठाकुर. — लालमोहन घोष
देवेन्द्रनाथ ठाकुर. — राजनारायण बसु
केशवचन्द्र सेन — महेशचन्द्र न्यायरत्न
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर — { उमेशचन्द्र बनर्जी
रामकृष्ण परमहंस. — W. C. बनर्जी
General Chaudhari }
विवेकानन्द. — नीलरतन सरकार.
विपिनचन्द्र पाल — गणनाथ सेन
सुरेन्द्रनाथ बनर्जी — योगेन्द्रनाथ सेन.
अरविन्द घोष — { शिशिर कुमार मित्र की पुस्तकें
ब्रजेन्द्रनाथ शील — The Liberator }
रवीन्द्रनाथ ठाकुर.
ठाकुर [illegible] — { नलिनीकान्त गुप्त (लेखक अरविंद)
गुरुदास बनर्जी — प्रेमेन्द्रमोहन घोष.
रमेशचन्द्र दत्त — अरविन्द की लेखावली. }
{ आशुतोष मुकर्जी — बंकिम - तिलक - दयानन्द -
श्यामाप्रसाद मुकर्जी } — कांग्रेस का इतिहास
दादाभाई नौरोजी
प्रफुल्लचन्द्र राय — महादेव कार्वे
जगदीशचन्द्र बोस — श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
प्रमथनाथ बोस — (भूपेन्द्रनाथ दत्त (विवेकानन्द का भाई)
रासबिहारी घोष. — चारुचन्द्र दत्त (अरविंद के
डा. विधानचन्द्र राय — ज्योतिर्मय घोष.
श्यामसुन्दर चक्रवर्ती — { दीनबन्धु शास्त्री कलकत्ता
(स्वामी) हेमचन्द्र चक्रवर्ती — शिवचन्द्र वर्मा }
प्रतापचन्द्र मजुमदार — { नरदेव शास्त्री (आर्यसमाज का
रमेशचन्द्र दत्त — आर्यसमाज का इतिहास) }
मोतीलाल घोष. — इन्द्र विद्यावाचस्पति
सखाराम देउस्कर. — कल्याण मार्ग का पथिक
हिन्दुत्व (रामदास गौड़)

चरित्र की रूप रेखा.

R. C. मजूमदार
H. C. रायचौधुरी
कालीकिंकर दत्त
The advanced History of India
जयचन्द्र विद्यालंकार
भगवद्दत्त
युधिष्ठिर मीमांसक
आचार्य [illegible]
हरबिलास शारदा
हरबिलास शारदा
[illegible]
की इतिहास
पुलिस को (?)
दयानन्द के जीवनचरित
महादेव गोविन्द रानडे
रमाबाई गोविन्द रानडे
ज्ञानप्रकाश (पूना)
इन्दुप्रकाश (बम्बई)
Cultural fellowship of Bengal
(शिशिर कुमार मित्र)
क्षितिमोहन सेन
विधुशेखर भट्टाचार्य
मेरे बंगाल [illegible]
Calcutta municipal gazette
Independence number 1947
सरदेसाई (?)
Main Current of Mahratta History
[illegible]
[illegible]
आचार्य - मानसार (वास्तुविद्या. / शिल्पशास्त्र [illegible])
भर्तृहरि
चाणक्य नीति
चाणक्य अर्थशास्त्र
शुक्रनीति
रामायण
महाभारत

मनुस्मृति
पाणिनि कालीन भारतवर्ष
पतञ्जलि कालीन भारतवर्ष
राजस्थान का इतिहास
~~[illegible]~~ मेवाड़ का इतिहास
म. गौरीशंकर ओझा
मुंशी देवीप्रसाद
[illegible] अहमदाबाद (?)
फर्रुखाबाद का इतिहास
उत्तरप्रदेश आर्यसमाज का इतिहास (?)
भूदेव मुकर्जी
संस्कृति के चार अध्याय दिनकर (रामधारीसिंह)
नारायण स्वामीजी का जीवनचरित
आर्यसमाज के महाधन
स्वा. [illegible] जी
स्वा. वेदानन्द
उदयवीर शास्त्री
गङ्गाप्रसाद [illegible]
गङ्गाप्रसाद [illegible]
देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय (जीवनचरित)
[illegible]
कल्याण मार्ग का पथिक
भाई परमानन्द
जीवनदास (?)
(पं. गुरुदत्त
प्रा. [illegible])
[illegible]
[illegible]
([illegible])
पूना में स्वामी दयानन्द
क्रान्तिकारी (श्यामजी कृष्णवर्मा)
इन्दुलाल
बनारसीदास चतुर्वेदी
(कृष्णचन्द्र मेहता (राजस्थान
[illegible]
[illegible]
[illegible] — [illegible]
[illegible] (आगरा))

लालचन्द लाहौरी
त्रिलोकचन्द नारंग
गुरुकुल कांगड़ी
गुरुकुल ज्वालापुर
वृन्दावन
स्वामी [illegible]
[illegible] शर्मा
[illegible] विद्यालंकार
भीमसेन शर्मा (इटावा)
सत्यव्रत त्रिवेदी (आगरा)
[illegible] विद्यालंकार
प्रो. रामसिंह
संस्कृत विश्वविद्यालय (वाराणसी)
[illegible]
काशी का इतिहास (मोतीचन्द)
भारत के पक्ष (")
धीरेन्द्र वर्मा
रामकृष्ण वर्मा (आगरा)
राजनारायण सिंह (बनारस)
मौलवी महेशप्रसाद
प. [illegible]
प. [illegible]
प. [illegible]
प. [illegible]
[illegible] (हैदराबाद)
शङ्करदेव
[illegible]
[illegible]
भाई परमानन्द
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
काशी नागरी प्रचारिणी सभा
आर्य समाज की हिन्दी सेवा
लाला देवराज (कन्या महाविद्यालय)
जालन्धर डी ए वी कालिज
होशियारपुर
देहरादून

स्वामी [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] की [illegible]
अजमेर
प. [illegible] (स्वामी दयानन्द जी के [illegible])
ला. मूलराज [illegible]
[illegible]
डॉ. गोकुलचन्द नारंग
भारत के महापण्डित
वैदिक आचार्य और
संस्कृत [illegible] इतिहास
स्वामी दयानन्द जी [illegible]
कृष्ण [illegible] विद्यार्थी
[illegible] आर्य [illegible]
प. [illegible]
[illegible]
प. [illegible] मुलतानी
स्वामी दयानन्द जी और होम [illegible]
[illegible]
[illegible]
स्वामी दयानन्द जी की [illegible]
[illegible]
स्वामी सनातनी
वैदिक [illegible]
अभयदेव
वैदिक विनय
भारतीय इतिहास की भौगोलिक आधार
" " की ऐतिहासिक "
भौगोलिक आधार
भारतीय संस्कृति [illegible]
मराठे और [illegible]
मराठे और [illegible] के विषय में
क्या जानते हैं

बम्बई एशियाटिक सोसाइटी की लाइब्रेरी
कलकत्ता एशियाटिक सोसाइटी लाइब्रेरी

देहू - दाहोद में वैदिक साहित्य संग्रह

{ श्यामजी कृष्ण वर्मा का पत्र कि वि. वि. में पुस्तकालय

ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी
India Office लाइब्रेरी
रामकृष्ण मिशन
थियोसोफिकल सोसाइटी
{ ललित भारती की लाल
{ एन्साइक्लोपीडिया of ethics & Religion में

उम्मेद सिंह मजीठिया की लाइब्रेरी
पं. केशवदेव (आर्य समाज दादर)
लाजपत राय
स्वामी गिरधारी
गुजराती गोवर्धनदास
डॉ. बालकृष्ण
अवनीन्द्र कुमार
स्वा. वेदानन्द
पं. रामलाल जी देहलवी
स्वामी दयानन्द जी कब बम्बई आये ?
पं. मनुमान (हनुमान देव आर्य)
कलकत्ता National Library
उसमें मेरा विभाग (अंग्रेजी संस्करण / दयानन्द)
{ पं. गंगादेव शास्त्री
{ उदयवीर शास्त्री
धीरेन्द्र शास्त्री
डॉ. बलदेव
प्रतापसिंह शास्त्री
बालकृष्ण

गुजरात में स्वा. दयानन्द जी का कार्य
पूछिए दानी जी दयानन्द जी !
बाहिर जाने के कारण । संस्थापक के कारण जीवन चरित की ओर ध्यान नहीं दिया

अध्याय प्रकाश
थियोसोफिकल सोसाइटी
मिर्ज़ा गुलाम अहमद की जीवनी
मिर्ज़ा गुलाम अहमद के लेख
१० अप्रैल १८७५ में बम्बई में
आर्य समाज स्थापित हुआ
आदि समाज (हिन्दी भाषा में)
डॉ. एफ. पी. (अमर)
भारत में क्रिश्चियनिटी की दशा
(देवेन्द्रनाथ ठाकुर के
वेद भाष्यों का संग्रह)
काठियावाड़
गजेटियर

गुजरात का इतिहास
मालवा का इतिहास
बड़ोदा राज्य में स्वामी जी की चर्चा
पं. मुक्तिरामजी (स्वामी आलो नन्द जी)
कर्मठ जी तिवाड़ी जासूसी
उदीच्य ब्राह्मण ।
गुजरात के औदीच्य ब्राह्मण
भारत में किस वेद की
रक्षा कहाँ कहाँ है ।
श्री दयानन्द के जीवन में
वेदों की रक्षा का भार
भिन्न भिन्न स्थानों पर लोगों को
जाति (बलात्) उपाध्याय
ऐसी बात चरित्र में देनी चाहिए
पुराने निर्णय, खुलासा नहीं
वेद पढ़े हुए लोग कोथी में
भेजे गये परोपकारिणी
शाखाएं बचा रही जाती है

और उनके जिज्ञासा के मानी है।

दयानन्द जी जिनके माता पिता का

स्वभाव ॥

तत्कालीन धार्मिक सामाजिक राजनैतिक

दशा

गया, उत्तर बना, उसके बिल्कुल [illegible]

अंग्रेजी राज, उसके नीचे बगदादा, उसके

नीचे मौलवी, उसके नीचे प्रजा ॥

आजकल के साथ मिलान ॥

॥ १८२४ में देश की दुर्दशा ।

१८१८ में अंग्रेज जीत चुके

अंग्रेज, मराठे राजा, सेनापति जमी[illegible]

लुटेरे – फिर तो प्रजा के

ही लूटना था।

तब स्त्रियों की क्या दुर्दशा होगी ॥

वह जब से नीचे बैठी विधवा लड़कियाँ, [illegible]

और बालविवाह और कुरीतियों में

नाक तक डूबी हुई ॥

गांधी, तिलक, रानडे, गोखले, विवेकानन्द

रामकृष्ण परमहंस उनके जीवन चरित अधिक

प्राप्य, अच्छे हैं। स्वामी दयानन्द जी के बहुत

मामूली हैं ॥

मैंने [illegible] की सामग्री देखनी

स्वामी जी के जीवन चरित के सम्बन्ध में ॥

स्वामी जी के पश्चात आये,

{ गोविन्द राम हासानन्द

मेरी नीति विद्यार्थी से सहायता लेना ॥

दिल्ली के पुराने लोगों से सम्पर्क

सनातनी ईसाई

आर्य समाज जैनी

मुसलमान सरकारी कागजात

गवर्नमेंट ही स्टोर स्थायी दरबार में
और अविलम्ब जन के विषय में

प्रवाह पुरुष मौन की नीति।
जीवन की घटनाओं का वर्णन कि कैसे किया जाता है। कुछ
लोकोत्तर कल्पना तो करनी ही पड़ती है।

पदिचन, प्रेरणा। भोग, गर्मी, धाम सर्दी। व्रत करलेना।
देवव्रत भीष्म ने व्रत लिया था। और व्रत पूरे कर चलिये
भीष्म प्रतिज्ञा। आत्मत्याग॥ अभिनिवेश की दयाध्वनि
उपकार प्रवृत्ति। लोक हित।
गोपाल राव हरि देशमुख। उन्होंने बम्बई में और पूना
महाराष्ट्र चरित्र से उनके ग्रन्थों का परिचय
चरित्र कोश का हिन्दी अनुवाद भी छप गया है (प्रथम भाग)
इतनी अधिक संख्या में लोग श्रेष्ठ पुरुष हो चुके हैं?
नर—नारी होना, मनुष्य होना। मनोरंजन सहित॥
कुछ व्यक्तियों की फाँसी मिलती है उनके जिम्मेदार राजा, न्यायाधीश
से लेकर जल्लाद तक सभी हैं। स जागर नर मुक्त।
evolution (क्रमोन्नति) योग्यता का अवशेष—परिशेष (
survival of the fittest)। अतः अतर्पणीय। स्थावर—
जंगम। प्राणी—जड़। ज्ञान शून्य। शक्ति शून्य।
अतिबलि लोकोषित मूल कारण है। पुरोपकारी सम्यता राजनीति
जितेन्द्रिय: क्षमता। क्रीत—दास। अविद्या पुरुषोदास:।
दासत्व हीन न व्यक्तित्व। आजकल की सभ्यता अर्थ काम—
प्रधान। बंगालियों का शौर्य असमर्थता के कारण अंग्रेजों के
विरोध का। भावुकता पहले अर्थ जीवन की ओर खींच ले
गई। पराधीनता दुःख थी और असमर्थता ने उसे दुगुनी
पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया। अतिरागे स अविवेक। स्त्री स्वभाव।
आधुनिक विज्ञान की विचार शैली दार्शनिक विषय में अनिश्चित है।
वैज्ञानिक तर्कों की बातें में स्थिर—पद है। अनिश्चित है।
भारत का उद्धार गुरुओं के विचार के बिना कैसे होगा।
मेरा कोई गुरु है। कोई भी है।
क्या भारतवर्ष का संसार के इतिहास में कोई विशेष स्थान है
इसके मस्तिष्क में वेदान्त है उसके पाँव में आलस्य अकर्मण्यता
की पक्की बेड़ी है। सिर पर वेदान्त की गठरी है। पाँवों में अकर्मण्यता
की बेड़ियाँ हैं।

पहेल स्वामी दयानन्दजी का स्वलिखित जीवनचरित सुनो देना ॥

साथ साथ उन की पुस्तकें, लेख और एक जनहार से उन बातों को प्रकट करना ॥

(१) वैदिक धर्म
(२) वर्णाश्रम व्यवस्था
(३) सात्विक जीवन
(४) भक्ष्याभक्ष्य
(५) एकेश्वर पूजा
(६) मूर्तिपूजा खण्डन
(७) वस्तु-परीक्षा
(८) { प्रत्यक्ष + [illegible] (तर्क)
शब्द प्रमाण - अनुमान प्रमाण
(९) पञ्च महायज्ञ
(१०) आर्य जाति का उद्धार
(११) स्त्रियों का उद्धार
(१२) गोरक्षा
(१३) हिन्दी देवनागरी संस्कृत
(१४) अपनी नाम उपाधि
(१५) बाल-विवाह रोकना
(१६) पाठशालाएँ
(१७) आर्य समाज
(१८) दयानिधान।
(१९) स्वदेशी।

वैदिक सम्प्रदाय के रक्षक

(१) हिन्दूमात्र
(२) वैदिक ब्राह्मण
(३) भिन्न भिन्न शाखाओं के भिन्न भिन्न देशों में
(४) श्रम विभाग
(५) शिक्षा विभाग के श्रम विभाग (उपनिषद् में)
(६) " " " शाङ्कर मठों द्वारा
(७) उपनिषदों द्वारा
(८) ब्राह्मण ग्रन्थों द्वारा
(९) पण्डों द्वारा
(१०) कर्मकाण्डी
(११) आर्यसमाज के ब्राह्मण
जमना , [illegible] , [illegible]
(१२) पेशवा काशीसभा
(१३) [illegible]
(१४) विद्यासागर
(१५) पाठशालाएँ
(१६) गुरुकुल
(१७) सेठ साहूकार
(१८) राजा, धनपति, वैश्य, क्षत्रिय
(१९) यूरोपियन, अमेरिकन
(२०) जर्मन
(२१) रशियन
(२२) नेपाल
(२३) काशी, पूना, शांकर मठ ॥
(२४) स्त्रियाँ
(२५) विदुषी संस्कृतज्ञ स्त्रियाँ
(२६)

सामूहिक सफाई हिन्दूजाति और हिन्दुस्तान की आधुनिक
आवश्यक सफाई है।

काठियावाड में पहेल भोजनी राजा
भराडी
स्थानीय राजा
उनके नौकरशाही
नौकरशाही
पुरुषजाति
स्त्री जाति

इन राजाओं की और के लिये उनके स्थल [illegible] सम्बन्धी
जगह भ्रष्टता, पतन, और काम-क्रोध, मद मो[illegible]
काठियावाड का रोग।

अछूत, आदिवासी, शिल्प (कारीगर) मशीन युग के मारे हुए। गरीब
मुसलमान, और इन सब की स्त्रियाँ इनकी आर्थिक दशा
मजदूर, छोटे किसान। (बहुत शोचनीय है।
अतिधनिक के मारे, पारसी, जैनी, राजा महाराजा, बड़े जमींदार,
ठेकेदार, मिलमालिक, एजण्ट, आढ़ती, ब्रोकर, मिलपति
ये अधिक धनके कारण [illegible] हैं
गाँवों में ईश्वर, ~~और~~ हरम, शहरों में इमारतें [illegible]
कोल भी [illegible] हैं

बाकी सभी हैं। मध्यम जमींदार
पढ़ी लिखी मध्यम जनता
मध्यम व्यापारी
मध्यम शिल्पी

ये लोग
आर्थिक दृष्टिसे है।।

M36. फरवरी ९, ६ [illegible].

(नु-बाद ; मानुषी बाधयन्त ; अवनत नोतव

प्रत्येक का नमस्कार करना लिखा है ॥

श्री शंकराचार्य और श्री दयानन्द जी दोनों कट्टर मत के और त्यागी थे। शंकराचार्य को ज्ञान ग्रहण का बहुत अधिक अवसर मिला। श्री दयानन्द जी को अध्ययन के काल थोड़ा।

आर्य जीवन का गौरव श्री दयानन्द जी के हृदय में जगाने और उसके प्रचार करने में विरजानन्द जी का हाथ बहुत है ॥

॥ विरजानन्द जी के जीवन चरित की भी खोज होनी चाहिए ॥

वेद और आर्य ज्ञान के प्रचारक के रूप में स्वामी विरजानन्द और स्वामी दयानन्द सार्वभौम होने लगते हैं क्योंकि आर्य ज्ञान सार्वभौम है एक देशीय नहीं ॥

॥ देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय का कुछ परिचय ॥
देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय का अपना व्याकरण ज्ञान बहुत अच्छा ॥

मुरादाबाद में ~~स्वामी [illegible]~~ रा. राजा जयकिशन दास के घर को देखना ॥

श्री देवेन्द्रनाथ की पुस्तक आदर्श सुधारक दयानन्द आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] ने उसका अनुवाद छापा है

॥ " गुजरात काठियावाड़ का इतिहास "

॥ राजकोट के गोविन्द दास [illegible] दास "

॥ प्रयाग के शिवराम पाण्डे वैद्य "

अनभ्यासेन वेदानाम् आचारस्य च वर्जनात् ।
आलस्यादन्नदोषाच्च मृत्युर्विप्रान् जिघांसति ॥

इन दिनों पसेगा आदिम जनता ॥ इन सब जनों मलेवा चौन है ?

(१) केवल आधुनिकता के होते हुए भी [illegible] जनता की [illegible]
(२) भारत गाँवों में रहता है
(३) ७५% जनता
(४) आधुनिक प्रभाव फैल रहा है — नयी पुरानी तो नहीं [illegible] [illegible] भी मिलता है — इतनी आधुनिक परिवर्तन शीलता नहीं
(५) किसान, इनके ब्राह्मण पुरोहित, बढ़ई, लुहार, कुम्हार, चमार, भूमिहीन मजदूर, नाई, धोबी, मोची, आदि, [illegible], [illegible],
(६) इन के धन्धे [illegible]। अलग अलग [illegible] तरह पर गाँव [illegible]। [illegible] देश
(७) इनका जीवन भी वे ही नियमों परम्पराओं पर चल रहा है।
(८) हमारे देश में सिन्धकाल से परम्परा इस जनता तक तीन रूपों में से [illegible] पानी की तरह पहुँची है ॥ वैदिक क्रिया धार्मिक [illegible] लोकाचार (जैसे [illegible] — [illegible] — [illegible] और लोकाचार इन उभय [illegible] — (आचार अवरोध) (मूल — [illegible] (आचार व्यवहार) (नाना वाद, [illegible] अर्थ (अमानवीय) (पञ्चांग) (अ — [illegible], [illegible]) जीवन [illegible], [illegible],
(९) ऋग्वेद ३. ५५. २ का [illegible]
(१०) यजुर्वेद में देखो
(११) किसान [illegible]
(१२) ~~[illegible]~~ । अद [illegible] [illegible]
(१३) किसानों की [illegible]। [illegible]। [illegible] } पहले देहात में [illegible] [illegible] जगह नहीं, [illegible] वाद में देखो
(१४) किसानों की सामाजिक जीवन की पद्धति — ~~[illegible]~~ [illegible] में से [illegible] प्रभावों का अधिक असर
(१५) { प्रजातिवाद, अपराध, अल्पदल, महादल, विश्वास विश्वास का लक्षण }
(१६) हमें प्रेम — सुधार [illegible] चाहिए विश्वास भी, उसका भी [illegible] है ॥ केवल वैज्ञानिक दृष्टि आवश्यक है ॥
(१७) इन दृष्टि से भारत के गाँव अब भी पड़ रहे हैं

(१८) किन किन ने भारतीय विज्ञान क्षेत्र में पहल [illegible] है।

(१९) किसानादि अपढ़ वर्ग लोग [illegible] सब जानते हैं

(२०) [illegible] नहीं जानते हैं - पीढ़ियों में इनके पास [illegible] चले आ रहे हैं

(२१) किसान की भाषा
(क) उनकी [illegible] (ख) [illegible] (ग) लोकोक्तियाँ —
मुहावरे - [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] — अछूती —
कुछ [illegible] [illegible] // [illegible], भीतर, जतन, [illegible] —

(२२) इसका जड़ चेतन जगत दोनों से सम्बन्ध है।

(२३) परमात्मा को मानता है, धर्मभीरु है, [illegible] में इसका विश्वास है
भूत, मूर्तिपूजा, ग्रामदेवता, लोकनायकों की भी पूजा करते हैं

(२४) ईश्वर, वेद, [illegible] पुराण, [illegible], ब्राह्मण, पूजा-पाठ, [illegible] अंधविश्वासी,

(२५) इसे [illegible] हैं - दोहे आदि, स्त्रियों के लोकगीत आदि

(२६) हाँ बाल-विवाहादि कुरीतियाँ [illegible] हैं - और इनसे बहुत [illegible] होता है

(२७) ऋतुओं के ज्ञान में, पवनों की गति, चान्द्र तिथि, [illegible] उपज को [illegible] पौधों
भी अपने [illegible] जीवन के लिए [illegible] अनेक तत्व ज्ञात हैं।
या इनका [illegible] तैयार हो [illegible] उनकी [illegible] — [illegible]
[illegible] हैं इतना नहीं ये नक्षत्रों, पक्षी, आदि —
[illegible] [illegible], [illegible] की १, २ [illegible]
मुहावरों में
[illegible] इनके विषय में [illegible] ([illegible] बातें नवीन विज्ञान
[illegible] भी [illegible] है — [illegible] तैयार हैं [illegible] नहीं —
[illegible] १०००, १५०० वर्षों से [illegible] है - [illegible] है [illegible]

(२८) शनैः शनैः [illegible] बदलनी चाहिए -

(२९) यूरोप - अमेरिका आदि अपनी [illegible] स्थिति से बहुत [illegible] नहीं।

(३०) [illegible] [illegible] - [illegible], [illegible], [illegible] आदि [illegible]

(३१) पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, [illegible] [illegible] में [illegible]
हैं [illegible] ये [illegible] नहीं - [illegible], फल, फूल —

(३२) हाँ [illegible] [illegible] भी बहुत [illegible] हैं॥

(३३) [illegible] हैं, [illegible] हैं, [illegible] हैं, [illegible] देता है। [illegible] नहीं है
[illegible] भी, [illegible] [illegible]

(३४) इसे [illegible] नहीं होती, इसके [illegible] हैं। [illegible] रोगों की जड़।

शास्त्रानुमोदित, और अनुभवसिद्ध हैं॥

(३३) इनके (न) रहे शास्त्रानुमोदित, और अनुभवसिद्ध हैं॥

(३४) अनेकोंगाली इनकी जबान (जिनकी देखी) शरीरके छल।
वडे शरीरके औ [illegible]

(३५) यह (दुःख) मान, है नहीं, (नास्तिकवादी) नास्तिक नहीं बनेगा इनका।
स्थिर सम्पत्ति हैं, ॥ उसमें है ॥

(३७) ३ लटा. बंगाल, केरल को देखलें। वडे शहरोंको देखलें॥

(३८) संक्षिप्त इतिहास इनकी, अर्थात्, मनुष्य, [illegible] –
[illegible] भारतवर्षकी सीमाएँ के
लोग अपनापन छोड़ बैठे। उपेक्षित रहे। देहात [illegible]
जातियाँ भी।

(४०) आयतन – ग्रामगीत, महात्मा गांधीजी, विनोबाके अनुभव, हिन्दी कविता
[illegible] विश्वभ्रमण [illegible] लोकोक्ति [illegible], [illegible] इनके
विषयमें लेख (पुस्तक/मासिक) अवलोकन, [illegible]
है। [illegible], [illegible], डा. [illegible]
बंगाल [illegible] (Indian village) गांधी [illegible]
गद्य – विनोबा, [illegible], डी. [illegible]
लय कलकत्ता॥ [illegible], [illegible], मनुष्यके [illegible]
मनुष्यमें [illegible], [illegible], दे [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible]
[illegible] का हित्व॥, [illegible], [illegible]
दास गुप्त: [illegible] बंगालवाले

(४१) देखीलेवें॥

(४२) [illegible], विनोदी, (पुरुषार्थी) मेहनती, उद्दिनीय, बड़न [illegible]
पतिव्रताली, [illegible], पारकुशल [illegible],

(४३) इनकी [illegible] औरतमसाएँ॥ महात्मागांधीके अनीर्थ, अल्पपुरु
आधुनिकताके [illegible] केवल [illegible]॥ विनोबाके अनुभव॥ [illegible], बहु
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]। [illegible]
[illegible] नहीं॥ इनके [illegible] उपाय। [illegible] सुलभ
[illegible] - और [illegible]

(४४) वेदैर्विहीनाश्च पठन्ति शास्त्रं शास्त्रेण हीनाश्च पुराणपाठाः।
पुराणहीनाः कृषिणो भवन्ति भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति।
(अत्रिस्मृति ?)

(४५) यतो भूमिः [illegible] उष्णा: [illegible] इन्द्रिय

(४६) इसके लेकिन वाद अभी तक नहीं है। भरत तामिल के घर
कितना लौटना वहीं आते हैं। नवनीत से मार्गसुख
मिलाने आदि लोगकी नयकिता मुक्त है इन्होने अनेक बक्सों
भी हमारी है। अपू तो मेरी हमारी अपेक्षा ध्यान के —
इनके अन्दर दोष आए हैं। जुधार कल आज औपचारिकों ने
मध्य. मालवी जीने ~~से~~ इसका इलाज दिया बहुत अच्छा
किया है

(हाशिये पर: मोहनधर्म, अनेक रीति, इसका बाबू इनके हैं। वे बिल्ली और नागरिक पहले मानी)

(४७) हमारे देश में क्या है इसकी जाड़ों पाड़ विवेचना के कुछ
दिखनी लि दो तीन वर्षों से इसका बढ़ना पड़ा है। केवल
ग्रामीण जनता इसे जल्दी सीखेगी क्योंकि उनके अन्दर कितना
ही प्रेम पहले से ही विद्यमान है॥

(४८) रामायण और ललितविस्तर की चौपाई बनाइए॥

(४९) किसानों के बच्चे, त्योहार, मेले, खेलकूद, हाट-बाजार, कुश्ती

(५०) न ध्यान दिया तो २५ सालमें ५० पीढ़ी बाबू होंगे

(५१) अपने अपने पेशे का ज्ञान। स्वावलम्बन। वंश से खुदके स्वाभिमान,
स्वावलम्बी लोग न होंगे। अक्लमंदता। मोहनदासों से
कहिए तो कर सकते हैं॥ मुसलमानों ने हिन्दुओं की रीति व संस्कार रीति को
बदला वहाँ रीति भी॥

(५२) तप: स्वाध्याय। ~~ईश्वर~~ व्यवस्था ज्ञान॥

(५३) नगर उपजाऊ। शरीर, आहार, धन मन ब्रह्मचर्य। वर्षुन होना
यह किसानों का अन्त: जल है और उसके आदि में
और पशुओं को भी शहर वालों ने इसी के पास पहुँचने दिये ना।
खाद नहीं, पूरे पन्ने तरह नहीं, जल नहीं, तो बहुत सी बीमारी होगी॥

(५४) नागरिकों के मुकाबले में इनकी ~~के~~ लोकगाथा बड़ी ज्यादा, कुछ
और लिखते हैं।

(५५) मैदान का ग्रामीण, पहाड़ का ग्रामीण, जंगल का ग्रामीण, नदी किनारे का ग्रामीण

(५६) शहर वालों में अपने धन में धर्म, जोश, स्वार्थ, अदेखा, ईर्ष्या —
उपालम्भ रहते हैं॥ —

(५७) जुबानी शक्ति॥ जुबानी ज्ञान की शक्ति किसके पास अधिक है॥

(५८) वृक्ष-वनस्पतियों के तत्त्व, ग्राम्य जीवन में व्याप्त.
वायु-रूप द्वारा फैलते हैं और जीवन को नाना गुण गंध बनाते हैं
होम द्वारा और अधिक। शहरों में ये सुलभ नहीं। छोटे पौधे
अल्प मात्रा में प्रभावशाली भी होती हैं (थोड़ा ही सही, प्रभाव ही सही,
व्याप्त ही सही, बलों परिणाम ही सही)

(५९) गाँव के मुख्य मुख्य वृक्ष ॥

(६०) दंगल खेलना, दौड़ना, तैरना, मल्लयुद्ध ॥ अल्प व्यय,
अल्प साधन के खेल ॥

(६१) [illegible] के गुरुकुल। पंडितों की पाठशालाएँ ॥

(६२) कुछ न कुछ ग्राम विज्ञान की चर्चा अवश्य होना चाहिए।

(६३) कल्याण को भी बहुजन हिताय ग्राम में ~~[illegible]~~ प्रभावित करना
चाहिए।

(६४) पंजाब का किसान, खरबूजा खा कर ही अपनी भूख तोड़ लेता है।
अमलतास, बेल, गुलाब की गुलकन्द ॥

(६५) जब जब को जानते हैं धोखा देना मुश्किल है ॥

(६६) वायु-वरुण, रुद्र, इन्द्र, पर्जन्य ॥

(६७) समुद्री पर्वतीय ग्रामों के वासी ग्रामीण कितने अधिक
वैज्ञानिक तत्त्व जानते हैं ॥

(६८) महाभाष्यकार पतञ्जलि का गोलक और हली हालिक, ऊँट
का गोलक जानते हैं - वारी मटकने फिरते हैं ॥

(६९) तत्त्व प्रधान। ग्राम्यालोचन। स्वभावोक्ति अलंकार वाद। [illegible]।
वितण्डा। कल्पना। मिथ्याचार। दम्भ। कपट। कलह प्रियता

(७०) उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।

Family friend }
Family Doctor. }

| कुल पुरोहित
| कुल वैद्य

(७१) एक बार तीर्थयात्रा कर आने को होवेगा।
ज्ञान व्यापक दृष्टि व्यापक हो जायगी। महाज्ञानी महायोगी बन
जायगा

(७२) प्रकृति के स्वाभाविक उपमाएँ दे सकता है। अपनी बातको उपमा द्वारा आसानीसे समझा सकता है॥

शास्त्रीय
(७३) वैदिक छन्दोंके, शास्त्रीय और शास्त्रीयेतर लौकिक दोहे सोरठा — आदि ये उसे ही रमा।

(७४) जैसे संसार का प्रपञ्च जीवके चारों ओर घूमता है जैसे पृथ्वी के चारों ओर नक्षत्रादि उसे ही किसानके चारों ओर राष्ट्र घूमता है॥

(७५) इन लोगोंके बीचमें रहें तो इनका प्रजातन्त्र चालचलन प्रकृति-प्रकर्ष, सद्गुण-दुर्गुण का बोध हो। एकात्म होकर इनकी स्त्रियों की विशेषताएँ

(७६) प्रजनन कि बाबोंकी स्त्रियाँ और लड़कियाँ भी उन्नति की अद्भुत व्यक्तियाँ हैं। वीर, शूर प्रजा को जन्म देती हैं

(७७) एक माता दूध-पूत। एक माता दूधहीन॥

(७८) सेना विभाग से पूछना चाहिए - कितने किसान देशके किसान सेनामें भर्ती किए जाते हैं। ये भी अच्छा महाली, चाल, हमें देख सकते हैं॥

(७९) मेरे देश के गाय और बच्चों में किसान आदि किसानके नस्लको देखा करते हैं?

(८०) इन लोगोंके अपने बड़ बड़े प्रवचन, आख्यायिकाएँ आदि हैं इस प्रकार भाषा की रक्षा ये करते हैं। शब्दकोश और धातु पाठ की रक्षा करते हैं- संस्कृत पढ़ जाएँ तो ये संस्कृत की रक्षा भी अच्छी तरह करेंगे॥

(८१) कृषक पति पत्नी का जीवन होता है जैसे वृषभ और गौ का जीवन है॥

(८२) वृषों के महत्त्व को समझकर वृषयज्ञ आ सकता है इन लोगों को
स्थानीय लोगों से अपरिचित हैं

(८३) भाग्यवान् वह किसान है जिसके पास भूमि है। इसके मो. पशु अनाज, जल, बच्चों को पूरा खाना देना। कृषक पशु। स्वाभाविक पशु महाप्रपञ्च- स्त्रियों का हित का तुलना स्वाभाविक भावना। अर्थ अनेक का नाम है। बच्चे रोकर खूँटे से खेलते हैं, अज की दूध और दूध दीजिए॥

(८३) शहर के लोगों को, खासकर बच्चों को क्या मालूम कि ——— कुआँ कैसे बनाते हैं? बावली क्या होती है। रहट क्या होता है अरहट क्या होता है॥

(८४) अत्यधिक कंक्रीट रोड, बजरी आदि, विशेषत: जल की भूमि नहीं सोख सकती। इसलिए बावड़ी, कूप, तालाब आदि बनाने और सुरक्षा में रखने चाहिए।

(८५) भारत की नदियों में जलतन्त्र में बहुत विविधता है, जब नदियों के चारों ओर एक विशाल जलराशि, जलधारा, अथाह जलराशि जमा होती हो सकती है॥

(८६) जलजीवन का इतिहास भी भारत के इतिहास का एक अंग है॥

(८७) बौद्ध ग्रन्थों - जातकों आदि की सामग्री भी प्राप्त है — धर्म के कारण हमने इनकी भी बड़ी उपेक्षा की है - अब हमारी दृष्टि व्यापक होगई है - इनमें पाश्चात्य - अध्ययन विद्वानों का भी उपकार मानना चाहिए॥

(८८) वैदिक भारत के अद्भुत आर्य मेघ के लिए इन्द्र देवता की वैदिक प्रार्थना की रचना की है। नागा लोगों को इन्द्र के अर्थ मेघ का नाम दिया जाता है॥

(८९) वृक्ष वनस्पति आदि काटते नष्ट करते जाएँगे, घास, पात, पशु खा जाएँगे तो वर्षा की कमी होती जाएगी इसलिए वन वृक्ष - उद्भिज्ज - वर्षा चक्र सबको जानना चाहिए — नहीं तो किसान भी नष्ट और दूसरे सब लोग भी नष्ट।

(९०) प्रेरणा का उपकार - जब मेरे आधार मातापिता, भगवान, महात्मा गांधी, स्वामी दयानन्द, सर्वोदय, गुरुजन, राष्ट्रनेता, स्वामी विवेकानन्दजी, भारत के प्रभाव के साथ, जयप्रकाश नारायण का शील॥ जयप्रकाश नारायण का जन्म स्थल, अलौकिक जगत

(९१) मेरे लोक की परीक्षा कर विश्व लोगों से पहले कर लेनी चाहिए डा. राजेन्द्र प्रसाद। पं. दीनदयाल उपाध्याय। विनोबा भावे कोई शिष्य जिनके उनके पास मार्ग शुभकामनाएँ हो॥ वैद्य रामनारायण॥ गुरु कोने पं. ...

(९२) वह मनुष्य जिसने पसीना बहाकर श्रम अर्जित किया है।

(९३) प्रातः ऋग्वेद की गायत्री जिसकी है राहत देना लगाओ:॥ ———

(९५) क्या श्रीमती शारदा मुकर्जी ग्रामजीवन पर कोई पुस्तक प्रकाशित करेंगी?

(९६) ५० करोड़ में से ५० लाख नगरवासी - बाकी आम गाँव, गरीब को इनकी समस्याएँ

(९७) जनसंख्या के बढ़ने से भूमि का बँटवारा होने पर नई पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन कौन करे

(९८) बहुत से सुधार हुए, पर, गाँवों पर असर थोड़ा, यहाँ सुधार कौन करे

(९९) सैनिकों की अपाहिजता या मृत्यु पर उनकी विधवाओं का गाँव में मार्गदर्शन कौन करे

(१००) भूमि के विषय पर सुधार अंग्रेजी काल में भी कुछ हुए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी सरकार ने सुधार अच्छे किए हैं। पर जीवन के और पक्षों में मार्गदर्शन कौन करे

(१०१) ऐसे ~~भूखण्ड~~ आबादी खण्ड हैं जो पिछले २५०० वर्षों से अच्छे जनपद चले आते हैं और आजकल पुनः उजड़ने की पूर्ण स्थिति में आ गए हैं। उन में ~~का~~ नवीन प्रेम व्यवस्था से पूर्ण समाज कौन स्थापित करेगा। किसी में क्षत्रियपन नहीं, किसी में वैभव नहीं (भारत के लोग सेना में शामिल नहीं होते

(१०२) हरियाणा ने नए समाज सुधार और स्वास्थ्य रक्षा में अच्छी उन्नति की है पर ~~श~~ कृषि प्रधान प्रान्त – कुछ औद्योगिक उन्नति से यह बहुत अच्छा सम्पन्न जनपद बन सकता है

(१०३) सुधारक समाजों - ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, थियोसोफी आदि का ग्रामों पर बहुत असर नहीं पहुँचा। सिक्खों, आर्यसमाज, का कुछ पहुँचा। ईसाइयों ने भी जमा लिया। गाँधीजी ने ग्रामों में महत्व जाना और उनकी समस्याओं का, उनके वर्तमान काल की समस्याओं का असर

(१०४) जैसा भूमि का अभाव - वैसा ही उनके निवासियों का अभाव

(१०५) भूमि का ध्यान हर समाज के ध्यान में आवश्यक है।

(२०६) भूमि के स्वभाव-गुण कर्म पहचानने वाले भारतीय
सायन्स भूमि रूप और भूमि का रस मधुर
लवण, कटु, तिक्त, कषाय (प्रमाण परिषदे)
Agriculture in Ancient India
M.A.S.C.

(२०७) नरनारायण पंडित मात्र किसान और गौपालन आदि
करने वाले लोग हैं ॥
~~अतः~~ अतः सब लोगों से वह भूमि कैसे पाए।

(१०८)

(२०९) भूमि का राजा है ॥

(२१०) भारतीय कृषि की देशरणा पुस्तक
(१) पुरातत्त्व विभाग (जनपथ) गीतावली
(२) आकाश दर्शन
(३) पूसा - कृषि विद्यालय
(४) श्री हरिश्चन्द्र गुप्त (टाइप पुस्तकालय)
(५) श्री दीनदयाल शास्त्री
(६) हिन्दी साहित्य सम्मेलन
(७) गोरखपुर विश्वविद्यालय
(८) महाराज हालन नाम पुस्तक विद्वता
(९) पं- धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड। गुरुकुल कांगड़ी, पीपुल

भारतीय कृषि और पशुपालन
डा. महेन्द्र सिंह रंधावा
I.C.A.R.
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - २१-२५
कृषि भवन नई दिल्ली

(२११) किसानों और ग्रामीणों का एक बार यह अच्छी बात
सिखादो कि वह उनमें चिरकाल तक प्रतिष्ठापित होगी।
अध्यात्म संस्कृत में

(२१२) कृषक, कृषीवल, ———
हलिक: ॥

(२१३) अमरकोश

(२१४) कृषि गोरक्षा वाणिज्य

(२१५) ग्राम जीवन
किसान पर कविता संग्रह.

(२१६) जीवन के किसी भाग में गाँव में या गाँव के समीप रहना चाहिए।

(२१७) कृषि और हमारे जीवन में गहरा रूप
क्षेत्र, बीज, ऋतु तीनों में समान।

(२१८) हमारे जीवन में कितना श्रम और कितना सुख
और कितना रस - आनन्द है।

(२१९) यदि इन में विद्या का सहयोग हो जाए तो सोने में
सुगन्ध है॥

(२२०) लोक का उपसंहार जनपद जानना ही चाहिए
ओजस्वी॥

(२२१) उत्तर-पूर्व-संग्रह में
भारत में कृषि और पशुपालन } दोनों में बहुत संग्रह

(२२२) आयुर्वेद-जामनगर वगैरह
जो — ग्रामीण - आयुर्वेद - वैद्य
और आजकल की एलोपैथी
इस्तेमाल करते हैं }

(२२३) नियत परिमाण दोनों का - चिकित्सा पद्धतियाँ भिन्न भिन्न
हो सकती हैं॥

(२२४) हम जो प्रचलित ज्ञान को जंगल और गाँव और किसानों की
कोटि में डालते हैं - नागरिकों और आधुनिकों का बुरा हाल है?
जड़ी-बूटी के नाम पर - करोड़ों रुपया और 5:रुपये दोनों
व्यय करते जाते हैं॥

(२२५) "अतिवृष्टिरनावृष्टि मूषकाः शलभाः शुकाः।
प्रत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः॥
दुर्भिक्ष-हेतु। दुर्भिक्ष ...
कुदाल पिटक पाणि। नदी के ... । inflow - outflow।
पुरातत्त्व विद्यालय में कृषि सम्बन्धी पुरातन साहित्य॥

(२२६) पुरातत्त्वविद्यालय में

(२२७) किन किन नक्षत्रों में वर्षा॥ । जड़ — चेतन (जरायुज, अण्डज, स्वेदज, उद्भिज्ज)

(२२८) जल सब के लिए समान पेय है।

(२२९) जल का नाम जीवन भी है॥

(२३०) "विश्ववल्लभ" ... चक्रपाणि॥

(२३१) भारत को समझने के लिए भूगोल और ऋतुचर्या कितना आवश्यक है —
सूर्य, ~~चन्द्र~~ ग्रह, नक्षत्र ज्ञान भी ... नाना ... तारे, दशा को
समझा सकते हैं॥ ये monsoon। मरुत् जानने चाहिए। इन्द्र + मरुत्।

(२३२) आवश्यकतानुसार भी महत्व है ॥ वस्तुओं के प्रयोग से मिले अधिक जो अधिक महत्व देदिया है - और यह प्रवृत्ति भ्रम पैदा करती है ॥

(२३३) किसान आदि का ज्ञानकोष, लोकोक्तियाँ मुहावरे भी हैं। ये पीढ़ी दर पीढ़ी और परम्परा से उनके पास आई हैं ॥

(२३४) भूमी लोगों को अन्न और अन्न का मोक्ष दोनों ही उपलब्ध होते हैं उनकी पत्नियाँ पूर्णकाम होजाती हैं। - आहें नहीं भरती रहती। अन्नकी, जलकी, दूधकी, रति की ॥

(२३५) किसान अपने आपमें एक संस्था है, यदि वह शिक्षित है, कुलीन है, और विद्वान है तो वह एक छोटा राजा है अधिपति है स्वामी है, मालिक है और उसकी [illegible] लोगों में ठेका और उपकार रखने की [illegible] है, [illegible] है ॥

(२३६) ~~वैज्ञानिक~~ वस्तु के भौतिक और रासायनिक गुणों के अलावा उनके वैज्ञानिक और [illegible] गुणों का ध्यान में रख [illegible]

(२३७) सहकार (Co-operation) [illegible] है। क्योंकि [illegible] और [illegible] बोलने और [illegible] करने के [illegible] हमने बहुत [illegible] है। [illegible] हम बहुत पिछड़े हुए हैं और [illegible] हमारी [illegible] [illegible] और [illegible] पिछ काल से जानता है ॥

(२३८) गाँव में [illegible] जल की [illegible] जल की [illegible] बड़ी [illegible] है। [illegible] मानव [illegible] भिन्न-भिन्न उपाय और [illegible] और [illegible] में भिन्न-भिन्न [illegible] है ॥ [illegible] तरीके [illegible] है ॥

(२३९) [illegible] और [illegible] आरद [illegible] [illegible] किसी [illegible], [illegible] हम [illegible] जीवन [illegible] है [illegible] [illegible] ॥ [illegible] लिखी [illegible]

(२४०) [illegible] अति [illegible] पतन का [illegible] है - [illegible] में पुजारियों के, [illegible] के पतन का [illegible] -

(२४१) [illegible] और [illegible] के [illegible] और [illegible] वस्तु के [illegible]

(२४२) गुणों का ज्ञान [illegible] लिए [illegible] और - A [illegible] का ज्ञान भी तो करते हैं - [illegible] जगत।

(१४३) जह रूप की भावना आत्मा के ही विश्वात्मक की आदि आदेश की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। विशेषकर स्त्रियों के इस का अनुभव, क्योंकि, मैं पत्न महत्वों में समान मिलने में अहंकार उत्पन्न नहीं होने देता ॥ विशेष दिव्यता
(१४४) वेद कि पांनी और अनुभूतियों का संग्रह है — इन को और विशेषणों का नहीं ॥
(१४५) पञ्चपालदत्त, अवतिक (विशेष) आदि की वृक्ष पूजा में तुलना ॥
उदाहरण
(१४६) किसान की भूमि मतीपती उत्पत्ति के सिद्धान्तों, ऋतु, क्षेत्र, बीज, जल, अन्न, मनुष्य के तत्व को बेहतर और जाकित जमाती प्राणिजगत में इन सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं की व्याख्या का होना ॥ कृषि प्रयोग शाला है — यदि विद्या भी साथ हो तो सोने में सुगन्ध आ जाये — और गाँव वालों से, स्त्रियों के अनुभव लेने को लोग आवें
(१४७) दतौन के लाभ, और नाना वृक्ष की दतौन.
(१४८) पराशर के अनुसार हल के आठ अंग (ईषा-युग-निर्योत, निर्योल + पाशिका, हलस्थाणु, अड्डचल्लू, शौल, पच्चनी (Bread) शैल्क, फाल, अड्डी, विल्वक, शण, ७ आनिक, मुसल, ऊखल, सूर्प, धान्यकुत! (क्योंकि, लोकटे के नाप के इनका स्पष्टीकरण होना चाहिए। चालनी क्योंकि, देखि ॥ क्या आयुर्वेद का कोई महाकोश विद्यमान है ? ॥
अश्वत्थ पत्र तुल्य — हल-फाल ॥
(१४९) भारतीय — और उन के जीवन और उन के धर्मों के और जादू टोना से विविध वैशिष्ट्य है — अनुसन्धेय है ॥ Ancient Indian life by J. C. Ray) तिलक — निशि शर्य। पञ्चक। आम्रपत्र, पुष्प, चन्दन, केसर, शङ्ख। देवता-प्रतिमा देवती, लक्ष्मी, जगदेवी, पार्वती, इन्द्र, वरुण, कुबेर ॥
(१५०) भिन्न दिशाओं की अधिष्ठात्री देवता (ईशान — शिव। पूर्व दक्षिण — अग्नि पश्चिम उत्तर — वायु। विष्णु। कुबेर (जल — उदक)
(१५१) जिन बैलों को उन के मालिक बेचना चाहते हैं वह काम क्या देगा उन की आहें मानव वृन्दों की — क्या इस विषय में भी किसी नेता ने कहा है जब की प्रेम भावना, वात्सल्य, शिव संकल्प के ही कार्य करना चाहिए — गौ, मनुष्य, पक्षी, ... — की आर्ति: । शोषण ही ॥

(१५२) पंचांगी की ~~षोड~~ षोडशोपचार पूजा॥ ह्रीं = विष्णुपत्नी॥
प्रणाम विष्णुः अधिपति। प्रदक्षिणा। नमस्कार।
सूर्य। दिक्पाल॥ गन्ध। माल्य। पुष्प॥ योग क्षेम।
वर्णों में भी ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र॥ धन-धान्य वृद्धि

(१५३) उत्साह है तो बड़े बड़े। उत्साह ही नहीं तो सब निम्न कोटि का। बाल विवाह और कुरीतियाँ भारत के विनाश को बुला रखा है। पिछड़ी जातियाँ - चाहे कृषक हों या।

(१५४) गौओं और वृक्षों का क्या आपस में सम्बन्ध है क्या दोनों में कोई तत्त्व प्रधान है॥

(१५५) बौद्ध कालीन कृषि साधनों का संग्रह सांची के संग्रहालय में

(१५६) स्वाति, उत्तरा रोहिणी, मृगशिरा, मूल, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण
// इन में हलप्रवर्तन किया॥
पुष्प, दूध, दधि, घृत।

(१५७) भारतीय विद्या और के ज्ञान और विज्ञान जितनी गहराई से आप शास्त्रों को पढ़ेंगे और उन शास्त्रों का मन्थन और समन्वय करेंगे इतना ही उन को और उनके ग्रंथों की प्रीति, भक्ति, (श्रद्धा) उत्साह अपने देश की संस्कृति सभ्यता में गहरा और स्थिर होगा।

(१५८) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में से कृषि आधिकतर अर्थ-काम की सिद्धि करती है। अपना अपना पेशा-धन्धा करने लोग मुख्यतया इन प्रयोजनों की सिद्धि के लिए अपनाते हैं॥

(१५९) अर्थशास्त्र, बृहत्संहिता, अग्नि पुराण॥ Khan's maxims॥
88 अध्या० 281 अध्या०
कृषि संग्रह / पराशर, शुक्रनीति
107, 108 श्लोक

(१६१) Nitrogen, Phosphoric acid, Potash.

(१६०) वराहमिहिर की बृहत्संहिता (चौखम्बा हिन्दी अर्थ के साथ चाहिए)॥

हरिद्रा (Turmeric) तिन्तिडीक (इमली) कपित्थ।
~~अक्षोट~~ अक्षोट। आमलकी, धव, नालिक, बकुल, सूर्यवल्ली
श्यामा अतिमुक्तक॥ Positive Sciences of the Hindus
by Dr. ब्रजेन्द्रनाथ शील

(१६१) कुलत्थ, माष, मुद्ग, यव, तिल ॥ "उपवनविनोद"
G. P. Majumdar. ॥ जुटी खर्जूर, बिल्व, लकुच
ऐरावत। त्रिपुलपत्र ॥

(१६२) किस वृक्ष को क्या भोजन पसन्द है ॥ (पञ्चपल्लव = आम्र + अश्वत्थ
वट + प्लक्ष + पलाश) । कुणप, वचा दाडिम। शाल्मली।
कादम्ब, नागकेसर, मेथिका, कुणप प्रियङ्गु, गुञ्जा, निम्ब।
पिप्पल, वचा, इंडो, तिल, सर्षप। अश्वगन्धा गारुडी,
मधूक, कोशातकी। पिप्पल, कुणप ॥ यष्टिमधु बीजपूर, केतकी,
कुष्ठ, पत्र, मुस्ता, मुस्ता, तगर, उशीर, अङ्कोल।
कुसुमपाल का वृक्षायुर्वेद ॥ कुणप Carcass। बिल्व। लि
कल्पलता। कल्पवृक्ष। मेथिक। बिल्व। तिल माष, मुद्ग खर्जूर,
लकुल, धात्री, बदरी ॥ लोध्र, कुशर, मातुलुङ्गी ॥
वृक्ष, बहुत शोर पसन्द नहीं करते।

(१६३) बकुल, तिलक, श्यामा, माधवी, करवीर, कुष्ठ।

(१६४) वीर-कलाय, दूर्वा, तिलक, वृहच्छद, शेफालिका, निर्मली
लवंग, करवीर, मधुल, अलाबू, पटोल,

(१६५) (वृक्षायुर्वेद - गुरुनाथ (सुपोल)) माष, अङ्कोल, जाति,
मल्लिका, माधवी, बिडङ्ग।
बीज बोन के काम आती है ॥

(१६६) जब पशुओं की पंक्ति
मुद्ग माष, कुलत्थ, कुमुक ॥ निचुल, व्रीहि, तिन्दुक,
साकवार, कदम्ब, कुल, कदलिका। पाटल, मोलश्री,
वचा, मधूक, कोशातकी अपराजिता, वटि-, सैन्धव,
कुष्ठ, पत्र, मुस्ता, तगर, उशीर, बिल्व-वल्कल, चक्रपाणि। बिल्व
लकुच, अर्जुन, पनस, मधूक, चम्पा,

(१६७) भूमि-जलवायु का ध्यान रखना पड़ता है ॥ हैमिक,
वार्षिक, शारद, हैमन ॥ प्रष्टिक, व्रीहि, शालि,
ग्रीष्म, वर्षा, शरद
नीवार, जंगली किस्मों में Protein ज्यादा होती है ॥ विमर्ष —
तथागत ॥

(१६८) क्या देवदेवान्तरों की बात. details नारद जी
के कहनेवाले जो होते हैं ॥ नारदीयशिक्षा - पशु - पक्षी
स्वरमध्य के ध्वनि-शिक्षा

वाल्मीकि रामायण में सम्मोहितना प्रश्न। क्या नारदीय पुराण में है ४७ श्लो
अलग था है, तुलसी रामायण में नारद वाल्मीकि, इन का नाम लिखना भी

(१६९) शालि, कलम, आष्टिक,

(१७०) प्रकृति माता और ~~...~~ इच्छा), कर्म (कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः॥

(१७१) ~~ए~~ धर्मार्थकाममोक्षाणाम् आरोग्यं मूलमुत्तमम्॥

(१७२) हिमालय के लाभ और उपकार॥

(१७३) हमें अपने देश की मूलभूत समस्याओं का ध्यान है॥

(१७४) वनों का महत्व॥

(१७५) वर्षा की अनिश्चितता ने भारतीयों को भाग्यवादी बना दिया है॥

(१७६) प्रोटीन (नत्रजन), स्नेह, शर्करा लवण जल
1 + 2 + 3 + ४ + ५

(१७७) वनौषधि (आयुर्वेद शास्त्र) (खाद्य, भेषज, पार्थिव॥

(१७८) पृथिवी, जल, सूर्य, वायु - (खुला आकाश)

(१७९) चन्द्र से शीतल सोम शक्ति। सोम ओषधीनाम् अधिपतिः॥

(१८०) ~~...~~ (वायु - सूर्य - सोम
वात - पित्त - कफ)

(१८१) अविनाभाव सम्बन्ध जोड़िए - वह युक्तियुक्त हो जायगा॥

(१८२) आदर - आहार

(१८३) सूर्य के सारे लाभ उठाने चाहिएँ॥

(१८४) कोई दवाइयाँ, ओषधियाँ, पहले न जाने, वह नहीं चीजें पशुओं के काम आती हैं, बाद के काम पीछे आ जावेंगे॥

(१८५) कोदोन, मकर, पद॥ sustenance to the cattle
छावी गन्ना हुआ लाते हैं। unplants saline soil,

(१८६) ~~...~~, ओषधयः, मनोविदः, ~~...~~, विद्वांसः, मुनयः, आत्मानम्, प्राज्ञाः, ऋषिमन्तः। महामतयः। ज्ञमतयः॥

(२२५) जातिका । रीतिजातिका · वल्लिका, वनवल्लिका, पत्नालका
पलाशक ? कुलत्थक । ? हीड़ा, आर्द्रक ॥

(२२६) एक भारतवासी का जाम अन्न खाता है
एक किसान का जाम अन्न खाता है
जातिमाया, कर्मशास्त्र, वैशेषिक, व्याकरण, आयुर्वेद, मनुस्मृति
शिल्पशास्त्र, पशुपक्षि विषयक ज्ञान ॥

(२२७) द्वीप - नदी की रेती में, कद्दू - केले, खरबूजा, तरबूज, ककड़ी
खीरा, फूट,

(२२८) अन्न (खूबकाल) शिम्बीधान्य, शाक, उपवनस्पति

(२२९) अन्न के बाद धर्म, अर्थ, काम ॥ पहले लेखक, ग्रन्थ
नप: ॥ ॥ Sprouting ; dressed with cow-dung ;
transplant.

(२३०) मैं इसको खेत के पवन की संज्ञा ॥ क्या प्रयुक्त बन्द है

(२३१) भोजन के तत्वों और तत्वों के अनुपात का निर्णय
आधुनिक प्रगतन — प्राचीन लोकाचार सबसे प्राय
एक परिणाम ही निकलेगा। किन्तु तत्वों का अध्ययन
को रिवाज। वैदिक लोक पर मूल सिद्धान्त का
भङ्ग न करें ॥

(२३२) सर्वा: श्मा: तण्डुलप्रस्थमूला: ॥

	विभीतक	कर्णिकार
कटफल	आमलक	तापिच्छ
नक्तमाल	हैमवती	तमाल
एरण्ड	कपित्थ (र)	जिजुवार
मुञ्जक	निकुञ्च	तिन्तिडीक
अर्जुन	निम्ब	वेत्र
सर्जक	अशोक	कुर
नीप	शिरीष	टोल
कदम्ब	दाडिम	आम्र
शिग्रु	जम्बु	बदरी
? मरुबक	खदिर	खदिर
देवदारु	जम्बीरमडर	मधुर
भू—	चम्पक	बिल्व
तिलक	कुसुम	पुंनाग
वट	करीर: ?	कोविदार
प्लक्ष		पाटल
मधूक		
उदुम्बर		

(१९३) विनोद, आनन्द का साधन (ग्राम जीवन के नाना अङ्ग ?) हृदय है तो सब वस्तुएँ आनन्द का साधन बनती हैं।

(१९४) मिल-मालिकों और साथियों, मजदूरों का व्यक्तित्व, किन्तु प्रभाव है हम परस्पर के सीख सकते हैं, और स्वयं दीक्षा भी नहीं लेंगे।

(१९५) एक सामान्य General Book. (सामान्य ज्ञान

(१९६) भिन्न आदि बात ही नहीं; या बिलकुल खाद, चाय और साथी, तमाखू, के कुप्रथ है!

(१९७) State की भूगोल पुस्तक। गङ्गा यमुना के दोआब उदाहरण।

(१९८) वनस्पति कृषि की बहुत संहिता॥

(१९९) शास्त्र स्वयं कह देते हैं, गोपाल, अजापाल, मेषपाल वनस्थ लोगों से पूछो।

(२००) अब तो गाँव वाले शहरों की नकल करते हैं, कोई ऐसा वक्त आता है शहर वाले गाँव वालों की नकल करें॥

(२०१) कितना अधिक हम परकियों से बीघे पागल हैं, अपना दिमाग खिन्न है, इसमें अंग्रेजी, युरोपियन, अमेरिकन, रशियन, चीनी विचार भरते हैं और दूसरों को भी मजबूर करना चाहते हैं, इस पतन से भगवान ही बचाए॥ मुसलमानों का तो हमने मुकाबला किया पर आज तो नाना विचार-दर्शन हमारा चोरी और सेवन करते हैं। कितने शासन और व्यवस्था और अच्छी शिक्षा की आवश्यकता है — मजदूर तो हाथ के काम, हैं किसान वाम करता है। शिकार-कोलं, केवल हैं॥ जीवन का ढाँचा ही बदल [illegible]

(202) जनता, भक्तियाँ (शक्तियाँ), विचारधाराएँ, संस्थाएँ, आन्तर-बाह्य-विशाल इतने अधिक हैं कि हमारे देश में समस्या और समाधान दोनों कठिन हैं — विशेषतः समाधान।

(203) समस्या को समझने के लिए उसमें गहरा पैठना चाहिए

(204) सबको दे दिलाकर, बाकी कर भोला जल सन्तु कहे कि "साईं लाज राखी, साईं पत राखी"

(205) जैसे आयुर्वेद में वात, पित्त, कफ की बीमारियों का इलाज बताया गया है, विदेशी विज्ञान सभी प्राणियों पर लागू है।

(206) हम पशुओं के रोगों के रोगों के बारे में कुछ नहीं जानते, ग्रामीण और वनचर लोग कुछ तो जानते हैं। उनके ज्ञान के साथ शास्त्रज्ञान और आधुनिक आयुर्वेद (modern) के साथ तुलना करनी चाहिए। गुरुकुल की शिक्षा इत्यादि बातें कितनी लाभदायक, नैतिक और स्वाभाविक सिद्ध हो सकती हैं। 'रसेल' बर्ट्रेंड ने भी अपनी पुस्तक में ऐसा ही कहा है॥

(207) 'बर्ट्रेंड' की अपनी जीवनी, प्रेम, दर्शन, राजनीति, शिक्षा, विवाह आदि पुस्तकें दर्शनीय हैं॥

(208) दीर्घ और पापी जीवन के जीवन दर्शन ही बदल जाता है, इसकी और अन्याय, बलात्कार, राजाओं का अत्याचार, परस्पर लूट-खसोट, घोर लोभ, अनुशासन-नियम का अभाव — ये जीवन का दर्शन ही बदल देते हैं। यूरोपियन जातियाँ इहलोक-इहलोक के जीवन के दर्शन को खूब परिष्कृत करके रखती हैं॥

(209) आर्य जाति को दुर्गरूप में रहना होगा। इस दुर्ग के स्थिर रहने, ग्रामीण जनता और ब्राह्मण हैं और सेना इसकी रक्षिका है॥ बाकी डावाँडोल, चल, चञ्चल भाग हैं — इन्हें जब तक स्थिर अङ्ग नहीं बनाया जाता तब तक — बहुत सावधान होने की जरूरत है

वैयक्तिक धर्म को धारी नहीं
सामुदायिक धर्म को अङ्गीकृत करो
किलो

(1) प्रधान हिन्दू जनता — (7) ईसाई
(2) सेना और स्त्रियाँ — (8) सिक्ख
(3) ग्रामीण — (9) नए जमाने के हिन्दू
(4) ब्राह्मण — (10) विदेशों में स्थित भारतवासी
(5) पिछड़ी जातियाँ
(6) मुसलमान

(२९०) यदि भारत भारतीय ग्रामीण जनता की जड़ें अपने राष्ट्रीय जीवन में मजबूत न होगईं तो देशी, अंग्रेज, रूस अमेरिकन, चीनी विचारों और तरीकों में फंसाव हो जावेंगे जैसे हमारे युवा और उनके राजनीतिज्ञ अपने अपने अखाड़ों में होरहे हैं ॥

(२९१) जीव प्राणीजगत में वात-पित्त-कफ के सिद्धान्तों का राज्य है - मनुष्य - पशु - वृक्षादि
ऋतुओं का प्रभाव और स्वभाव जीव भोजन मानुष्यों में।

(२९२) The Science and Art of Indian Medicine
by G. श्रीनिवासमूर्ति (Retd. Surgeon)
वैद्यरत्न Captain B.A. B.L. M.B. & C.M.

(२९३) भारतीय कला आध्यात्मिक तत्त्व।
(१) तत्त्वावलोकन (२) धर्मपुस्तकें (३) शिल्पशास्त्र (४) मालमुलाक ग्रंथों, अंगों, तारों, फलों, वृक्षों, तीर्थों के धर्मग्रन्थ, के नाम. (५) मानव का इतिहास (आत्मनिरूपण) वैधर्म्य, वर्ण-आश्रम-विभाग तर्क का।
. संस्कृत, हिन्दी, भाषाओं का पहिचान।

प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम। अन्त:साक्ष्य। सन्धि। परम्परागत ज्ञान।
सिद्धान्त-निर्णय। त्रिदोषविज्ञान। रस, गुण - वीर्य विपाक
प्रभाव सिद्धान्त। त्रिदोषजन्य विज्ञान का विनियोग। शा
सिद्धान्त।प्रयोग। कर्म-व्यवहार॥ ॥ आयुर्वेद-वैद्यक, तिब्ब-तिब्ब
विज्ञान और वैज्ञानिक परिभाषा है। सामान्य विशेष
Proposition. ॥ आर्ष मानव दर्शन (प्रभाव-दर्शन
उद्देश। लक्षण। परीक्षा॥ तन्त्रयुक्ति। साधर्म्य
साधर्म्य - वैधर्म्य॥ सामान्य नियम - सिद्धान्त - निष्कर्ष। प्रतिज्ञा
हेतु. उदाहरण - उपनय। निगमन। मूलादर्श। अतिदेश
अतिदेश दोष। अन्य विधि निरूपण - अन्वाख्यान।
Science is a criticised, systematised, and generalised knowledge.
Inductive Reasoning (Particular to general) Deductive process
General to particular। And then particular to particular.
आत्म - जीव प्रकृति॥

causally connection = अविनाभाव Invariable con-comittance
व्याप्ति ॥ पक्षिलक । प्रशस्तपाद ॥ उदयन - प्रतिबन्ध न्यायदर्शन ॥
causality कार्य-कारण भाव ॥ Positive Sciences of the Hindus
by Dr. ब्रजेन्द्र नाथ शील ॥ पञ्चतन्त्री ।

accurate observation (दर्शन - न्यायदर्शन)
Precise description.
Correct Classification
Patient experimentation.
rigid reasoning.
Careful verification.
Institution of crucial tests
युक्ति

द्रव्य - गुण कर्म
अर्थ
प्रत्यक्ष गम्य
} सामान्य
विशिलक्षण
अनुमान गम्य.

इन्द्रिय - जन्य जानकारी सीमा - सत्ता
अतिक्रान्त - सामीप्यात् ।
} द्रव्य - गम्य
अभाव
पदार्थ गम्य }

उदय - मध्य - अस्तमय में सूर्य के आकार में व्यवहित्य
Pragmatism. Truth is that works. ॥ व्याप्ति - ग्रह / पञ्चरूपी

कारण - कार्य नहीं दीखते
कारण - दर्शन
रीति. कार्य - दर्शन
कारण - का अदर्शन
कार्य - का अदर्शन
}
((अनुपालम्भ) (निर्विकल्पदर्शन / प्रतीति
एकनियम / इतरे नियम का विरोध न हो
विनिगमक
Hypothesis } कल्पना
कल्पनालाघव
कल्पनागौरव

रोग
रोग - हेतु - लिङ्ग । औषध

Science, Philosophy, religion.
अधिकारिभेद
प्रवृत्तिभेद
वर्णभेद
विकासभेद
पूर्वग्रह
} सूर्यकी किरण के सात अङ्ग - वस्तुतः एक.

Seven sisters - seven colours.

(१) हमारे साधारण जनता के जीवन का दर्शन
मूलभूत तत्त्व

(२) उनके विश्वास;
(३) उनकी पसन्दगी
(४) उनका पेशा
(५) उनके पेशों के साधन
(६) प्रकृति के नियमों के परम्परागत नियम.
(७) उनका धर्म में विश्वास.
(८) उनका सामाजिक जीवन
(९) उनकी स्वच्छता
(१०) उनके वेशभूषा की
(११) उनके मार्गदर्शक
(१२) इन सब का आधार उनकी ज्ञानराशि.
वेदशास्त्र, पूर्वपुरुष, सपना अनुभूत, विदेशियों के द्वारा
(१३) उनके विनोद के साधन
(१४) scientific क्या है, साधारण जीवन में वैज्ञानिक गलत
प्रकार का भोजन, सन्तानोत्पत्ति, भावात्मक-रागात्मक जीवन, सामा[illegible]
नैतिक नीतियाँ
(१५) उनके परम्परागत तरीके

(०) वह परिस्थितियों का दास
(१) उनके मन, तत्त्व का प्रकार होनी चाहिए
(२) आधुनिक प्रांत और प्रवाह बड़ा प्रबल है
(३) छिपी आशाएँ
(४) अवम अध्यापक, डॉक्टर, पुरोहित ब्राह्मणों की आवश्यकता
(५) Trade-union का आन्दोलन में मौलवी मोड़ता
(६) जनसाधारण [illegible] - वस्तुतः समझना [illegible]
(७) [illegible] के पास, साधन, अनुभव, शक्ति बहुत है
(८) उनकी विकलता [illegible]
(९) [illegible] और [illegible] लोगों द्वारा [illegible]
(१०) बहुत है
बड़े पुरुषार्थ [illegible]
(११) भगवान की कृपा है कि ऐसा होता - हमारी यह [illegible]
प्रजा और [illegible]

(१) भारतवर्ष की भौगोलिक एकता
(२) प्रमदाएँ
(३) लोकोक्तियाँ मुहावरे
(४) खाद्य
(५) कृषि और पशुपालन पर ज्योतिष प्रभाव
(६) प्राणिजगत के भेदोपभेद - प्रभेद और उनमें ओत प्रोत
समान निषेध
(७) ऋतु ज्ञान
(८) आयुर्वेद, धन्वन्तरि, ...वेद के उद्देश्य सिद्धान्त
(९) सरकारी ... - गाँव में प्रचलित अनेक तत्व
आधुनिक विज्ञान के अनुकूल हैं
(१०) कृषि की ओर प्रवृत्ति ... होगी
(११) ग्राम्य जीवन में विनोद, मेले, पर्व, त्यौहार लोक साहित्य
कला, गीत, नृत्य -
(१२) धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की दृष्टि से ग्राम्य जीवन के तत्व और
उनका ...
(१३) ... और ... जीवी पुस्तकें
(१४) Agriculture in Ancient India
(१५) पशुचिकित्सा
(१६) उनके रत्न, अभाव, मूर्खताएँ
(१७) कृषि - पशुपालन के अतिरिक्त उद्योग धन्धे
(१८) किसान ... प्रतिपादित करना
डॉ. दीन दयाल शास्त्री,
... पता करना,
(१९) इस विषय और कौन कौन सी पुस्तकें निकली हैं
(२०) क्या किसी महिला ने भी इस पर खोज की है
(२१) समाज शास्त्र के क्षेत्र में इस पर खोज
(२२) आधुनिक साधनों और प्रवृत्तियों का ग्राम्य जीवन में
प्रवेश

(२९४) किसान और छोटे ग्रामीण लोग प्रकृति दर्शन खूब करते हैं।
सामान्य नियम निकालते हैं (निकले) हैं तो वे बड़े पटु हैं।
शहर पैसेवाले या पठित ने विषय में रहें न रहें —
प्रगति के अवरोधक होते हैं॥

(२९५) अजमेर (संग्रहालय में हस्तलिखित ग्रन्थ हैं॥ उसमें भारतीय
शिलालेख। चित्र मूर्तियाँ आदि खूब संग्रहीत हैं॥

(२९६) Shri Sharada Mukerjie / 8-A. Mafatlal Park
Bhula Bhai Desai Road
Bombay (26)

{Deoband School and demand of Pakistan
Zia ul Hussain Faruki

Mr. Gokulchand 16/22 पंजाबी बाग.
East Avenue Market (Delhi 26)

श्री डा. सीताराम Sehgal W 43
हनुमान रोड, राजौरी गार्डन नई दिल्ली

पं. विष्णुदत्त भारद्वाज. एम. ए. ...
324/18 Block
Lodi Colony.

लोकनीतियाँ.

Important
(1) Men & Movements of last 2 centuries in India. (1707-19..)
✓ (2) Dictionary of Indian History (Calcutta University Publications)
(3) Cupro Argent (आँखों के लिए (ताम्र)
ताम्र पात्र में जल (गागर)
पर पट्टी बाँधकर)

देशवाल ब्राह्मण पं. शिवदत्तजी / 17/188 अलीगंज, ...

पं. दीनानाथ शास्त्री B.19 (लाजपतनगर (2)
पं. पुरोहित ... अलवर गेट, अजमेर (राजस्थान)
मकान नं. 4943
गली नं. 40
रैगरपुरा, देवनगर

मि. कुमार C 217. Defence Colony
Hugo's How to Speak Hindustani.
Mr. Jung Bahadur Nanda, Chief Engineer,
Public Works, G. A. Gandhi Nagar
Jammu

श्री ... 437 डबल स्टोरी
न्यू राजेन्द्र नगर
नई दिल्ली

आचार्य दीनबन्धु शास्त्री, आर्यसमाज कार्नवालिस रोड,
19 रोमेश लंमीन (?), कलकत्ता.

लो. विशनदास एम.ए (गणित प्राध्यापक) 7/3 पटेल नगर, जंगपुरा
नई दिल्ली.

श्री देशराज अहूजा C. 36.
I. A. R. I
Pusa Institute. नई दिल्ली

श्री देवव्रत वेदी A 2/126. राजौरी गार्डन नई दिल्ली

पं. धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड, आनन्द कुटीर, ज्वालापुर, हरिद्वार.

वैदिक व्याकरण भास्कर | आचार्य ब्रह्मदत्त शास्त्री,
भगवान् स्वरूप,
वैदिक यन्त्रालय. अजमेर.

वैदिक विद्यावतीजी 12/30 वेस्ट पटेलनगर, नई दिल्ली 11

श्री जीतसिंह (धोबी) गली न. 56, रेगड़पुरा.
मकान नं. 46-57

श्रीमद. भवानीलाल वकील D 132, Defence Colony, New Delhi.

डा. वीरेन्द्र. 11, आनन्दपुरी टेकरोड, गोविन्दगढ़,

ला. सूरजभान. 26/4 वेस्ट पटेलनगर, आनन्दपर्वत
नई दिल्ली.

ला. बोधराज नागपाल 17A/51 W. E. A. अजमलखाँ रोड, करोल
बाग
नई दिल्ली

निरुक्त इतिहास (स्वदेश रोशन, ग्रामोत्थान विद्यापीठ, हनुमानिया
जिला गङ्गानगर, राजस्थान.

श्री वीरेन्द्र वेदभूषी, वेदभवन, महाराणी रोड, इन्दौर

श्री - रामदत्त महाजन, एम.ए. C. 112, कीर्तिनगर, नई दिल्ली.

आर्ष - पाणिनीय (पं. हरिशंकर पाण्डेय, पटना.

श्रीमती प्रेमवती थापड़, 10, P ~~Haus~~ Hause Khas
Phone N. 70124.

Bibliography of वेदाङ्ग (Dr. सुब्रह्मण्य शास्त्री एम.ए
Tirupati
XIII (Vol 1) Jany to June (1952)
Supplement

श्रीमती पुष्पलता वर्मा D 147 Defence Colony, नई दिल्ली
Phone No: 74543

Food & Drink in Ancient India (Dr. Om Prakash
रजिस्ट. नकल निकाल. 24-3-1952
सही नकल निकाल 4-12-1955

Mr. Daspuri (42182) 10, Lytton Road, Curzon Road
New Delhi

Shri Harish Gupta (R.A. 101, Indrapuri, New Delhi
Mr. S. C. Puri Punjab National Bank Ltd
East Patel Nagar

Prof. J. H. Dastur
Scarsdale, Pandy Road, Colaba, Bombay
Near Colaba Bus Station
Opposite Pandy Sanitorium.

~~सेठ घनश्यामलालजी नांगिया 9/23 पंजाबी बाग. नई दिल्ली~~

The Indian Council for Cultural Relations

Indian Studies Abroad

Great Masters of Vedic Philosophy

by Renou

पं. विश्वमित्रजी वैद्य T (बी) 49,
राजौरीगार्डन (नई दिल्ली) 27

K. K. Datt Renaissance, ~~cha~~ Nationalism and social change in ~~India~~ modern India.

(पुस्तक राज की परिचायक पुस्तकें
" " " नवजागरण की पुस्तक) नेशनल लाइब्रेरी

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (चण्डीचरण बन्द्योपाध्याय
बंगला ?)

A History of Hindu civilization (during British rule)
प्रमथनाथ बोस (तीन खण्ड) 1894)

Dawn of Renaissant India (K. K. Datt.

स्वामी दयानन्द (देशबन्धु ?)

मुस्लिम लीग - (लाल बहादुर)

History of Political thought (Ram Mohan Ray to Dayanand

A Century of Social Reform (S. Natrajan.

Rise and growth of All-India-Muslim league
Mohd Hussain.

Memoirs of my life and times (बिपिनचन्द्र पाल

{ ~~R~~ Studies in ~~Reno~~ Renaissance in Bengal
B. C. Pal Centenary Volume
National Council of Indian Education.

Brahmo Samaj / Mohan Lal C. ~~Parikh~~ Parekh

(History of the Brahmo Samaj (शिवनाथ शास्त्री)

The Men I Knew

अब्दुल गफ्फार खाँ D. G. तेन्दुलकर

हिन्दी में उर्दू साहित्य (ह. २५) नागरी प्रचारिणी सभा.
गोपाल नारायण सिंह

{ नागरी प्रचारिणी सभा काशी
हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता }

Dr. M. L. Kapur, Flat No 40, Khan Market
New Delhi.

Shrimati ~~Raye~~ Ramka Luthra
181 - Golf Links
New Delhi.

Pathology of the aged
by Howtrese Mechraen

Education for Fullness (हिरण्मय बनर्जी)
एशिया Publishing House
1941 में रवि ठाकुर के पास श्री को गुरुकुल में आमन्त्रण
रवीन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ

ला. लाजपतराय नागर R. 31 - Greater Kailash
New Delhi (14)

मि. लाजपत 7/36 राजेन्द्रनगर.

Notes on Bengal Renaissance (अजित घोष)
Ram Mohan Roy Commemoration Volume
तत्त्व बोधिनी पत्रिका
तत्त्व बोधिनी सभा

स्वामी दयानन्द जी के बारे में ला. लाजपत राय लिखित
जीवन चरित्र के अन्त में
महत्त्वपूर्ण जानकारियां
पं. धर्मदेव जी की लिखी हुई पुस्तक

रवीन्द्रनाथ
देवेन्द्रनाथ
ईश्वरचन्द्र
राजनारायण बसु
प्रफुल्लचन्द्र राय
उपेन्द्रनाथ बनर्जी
शिवनाथ शास्त्री
राजेन्द्र प्रसाद
गान्धी जी
जवाहरलाल नेहरू
लाजपत राय जी
स्वामी दयानन्द जी Look Back. (M. C. Mahajan)

भूपेन्द्रनाथ दत्त आदि (विवेकानन्द)
गोपाल भट्टाचार्य
राजा राममोहन राय
शिवचन्द्र
हरिनारायण तीर्थ स्वामी
विजयकृष्ण गोस्वामी
केशव विद्यासागर
प्रथम रामानन्द
India & Indian Mission (Duff)
बंग दर्शन। बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
1880. कृष्णकान्त

Indian awakening in Bengal. N. S. Bose

Randhawa
राजसिंह
हरिसिंह
सीताराम बहुली
डा. हरिवंशराय
हिरण्मय
आदित्यनारायण
श्यामसिंह
डा. महादेव

India – A Historical Survey
by नीलकंठ शास्त्री
श्री निवासा
Allied Publications.

Destiny of Indian Muslims
S. Abid Hussain.

Thalidomide.

प्रो. लालचन्दजी (नपाल)
20. N. D. S. E
बनी नगर
मुकाबलेपुर दालबा,
Defence colony.

श्री शिवदानचन्दजी. डॉ. Park Area
करौलबाग, नईदिल्ली

कारी, गोपालदास. (पंचवटी. पटनगर.

Indian Institute of Technology.
हौज़ खास

Eminent Panjabis. { N. B. Sen दूर लाटोरा

कबीर की कविताओं का French अनुवाद —
पाण्डिचेरी.

आयुर्विज्ञान
बहुदेवता
बहुसंहिता
बहुभाषाकोष
मुकेश भारतीजी (वैदेशिक)
नित्य वार्ता

श्री - निरुपम विद्यालंकार, अध्यक्ष - संस्कृत विभाग
सनातन कालिज

438/2 जैन नगर
मेरठ
302 DC. पश्चिमी (कलिंगपाल
जगदेव शर्मा (फोन (264828)

डा. भगवान दास की पुस्तकें
Indian Book Depot
बंगालो Cult

अर्वाचीन संस्कृत साहित्य (श्री वर्णेकर
Modern Book Depot, नागपुर)

राष्ट्रीयता और समाजवाद (आचार्य नरेन्द्रदेव)

Parsis (P. A. Wadia)

Life and Work of सर सैय्यद अहमद खाँ

G. F. I. Graham

R. P. Masani (दादाभाई नौरोजी)

H. P. Mody (फिरोजशाह मेहता)

साहित्य (श्यामजी कृष्णवर्मा.

रतिलाल

चन्द्रशेखर

गुजरात का चरित्रकोश

महाराष्ट्र का चरित्रकोश

सर सैयद अहमद खाँ (नक़ल अली (उर्दू)

भारत का विश्वकोष (

आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ भवन)

Men of Science & Technology (प्रकाशन विभाग
In India पटियाला)

T. V. R. ताम्पाची 16/19 (W. E. A.) करोलबाग

प्रो. हनीफ़ नकी रिफ़ाई 37/A. (नई दिल्ली 14)

Sherwood Taylor (The world of science)

विश्व भारती, जैनेन्द्र अवतीर्ण, बनारसीदास चतुर्वेदी

Indian Sadhus (घुर्ये)

The modern Bengal (N. K. Bose)

भारतीय Bibliography प्रकाशन गोविन्द प्रसाद,
पुस्तकालय
हिन्दू विश्वविद्यालय

मधुमेह की बूटी जड़ी

श्री [illegible] 3/632)
[illegible]
नई दिल्ली (दिल्ली 6)

श्री विजयेन्द्र स्नातक:

A 5/3 राणा प्रताप बाग

रत्न परीक्षा (आनन्दनाथ

श्री. ज्ञानचन्द्र जी ज्योतिषी, रेलवे कॉलोनी, किशनगंज, दिल्ली

श्री भारतभूषण A. Block 69, राजौरी गार्डन
नई दिल्ली

चन्द्र प्रभा (कन्हैयालाल ऐंड. की) No 16/127।
(शक्तिलाल
ओपीलॉज़; करौलबाग

Armed struggle for freedom
बाल शास्त्री.
S. S. Apte
कालप्रकाशन पूना.

श्री. रघुवीरदासजी शास्त्री वैद्य
283/102 (पालचन्द्रकुल केमकलो) विष्णुवाटिका
जुनागढ़

The House of Tagore Rs 2/-
हिरण्मय मुकर्जी
विश्वभारती
Rs 12/8/-

आधुनिक हिन्दी में वात्सल्य रस.
डा श्रीनिवास शर्मा, अशोक प्रकाशन.

The History of the Indian Army
ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह
Army Education Press
Sardar Attar Singh

श्री बलदेवजी शास्त्री. 4/44 राजेन्द्रनगर

पं. गुरुदयालजी शास्त्री 61 रोड, नं. 2
बस नं. 40 / 54 का अन्तिम अड्डा.
पंजाबी बाग.

श्री रामकृष्ण शास्त्री
मकान 9/51
पंजाबी बाग नई दिल्ली 26

पं: बलदेवप्रसाद शास्त्री एम.ए.
664 सब्जीमंडी.

श्रीनिवास एम.ए.

Germany, the Second Home of Vedas

Indian writers in English
K. R. Shrinivas Iyengar
Asia Publishing House.

डी/81. सीताराम सहगल.
Kantcanni
C/o 56. (A.P.O)
Laos
New Delhi.

आधुनिक हिंदी काव्य में छन्दोयोजना
पुत्तन लाल शुक्ल

भारतवर्ष का विस्तृत भूगोल
वीरेन्द्र सिंह (मेरठ)

आधुनिक भारत का वृहद् भूगोल
गयाप्रसाद (आगरा)

Indian Book Depot
Theosophical society.
Kamacha, बनारस.

Russian Publication { A History of Pakistan 1947—1958

Office. 43171 श्याम बाबू (E 64)
43172 South Extension. Part (1)
Ring Road.

{ इ चैत्र (सोमवार
मीन मेष न ध्रुव 1896 — मार्च 16

4. पूर्णचन्द्र जी शास्त्री. (मकान. 3322
कूचा कासमारी
सीताराम बाजार. देहली

Basic Hindi Vocabulary
Kailash Chandra Bhatia
Hindi Vibhag
अलीगढ़ विश्वविद्यालय.

Life of Christ
Saint Paul publications
Allahabad (2)

वैद्य रघुवीरदास जी
283/402 विष्णु मार्केट.

हिन्दुस्तान विद्यालय (2 खण्ड)
4. विष्णुदत्त शर्मा.

श्री गोपाली लाल पंडित (कवि)
C/o श्री प्रकाशचन्द्र
आनन्द भवन
House No. 5230
शोरा कोठी
पहाड़गंज, दिल्ली

श्री सत्यव्रत सी गुरु वेदालंकार
E 5/4 कृष्णनगर

श्री मनोहरलाल चौधरी
H. 7. Green पार्क
Mr. Kapur
Phone. 42541
Mr Central Bank of India.
मद्रास होटल

श्री मनोहर जी विद्यालंकार
622 ईश्वर भवन
(224374) मोहल्ला
खारी बावली।

श्री. दीवानचन्द जी वकील
3 Hoch Square
(पुत्र) श्री विमन चन्द्र जी

Indra Kumar (Dr.)
14, Princes Park
Near Baroda House
New Delhi.

A Guide to Hindi
S. R. Sharma

व्यावहारिक हिन्दी अंग्रेजी शब्द कोश
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
भारत सरकार
पारिभाषिक शब्द संग्रह
Consolidated Dictionary
Technical Terms.

Mr. Max Lerner
C/o New York Post
New York
U.S.A.

Mr Schaffer
India Desk Office: I.N.C.
Department of State
Washington 25. D.C.

Mrs. Katherine H Bruner
105, Coolidge Hill
Cambridge,
Massachusetts
U.S.A.

Mr. John Knights
186 Johr Bagh

गान्धीजी की आवाज़ [illegible]

Shri H. S. Mathur
Bank of India Ltd.
54 Jan Path
New Delhi

Phone No: (45537)

महात्मा हंसराजजी
बैरागी
लगभग १०० वर्ष पहले
मामूली व्यापारी
दृढ़ संकल्प
और मजबूत
दृढ़ संकल्प
गरीबी
तपस्या
वृत्ति
क्रिश्चियन [illegible]
महर्षि
महर्षि उपकार [illegible] (मूलराज)
[illegible]
[illegible]
नायं [illegible] चैव [illegible]
(अमरकोश) [illegible]
[illegible] विभाजक नहीं
भारतीय इतिहास के [illegible]
बड़े बड़े [illegible]
[illegible], और, [illegible]

गांधीजी के [illegible] आने पर
उनके साथ मिलने [illegible]
वे मिलने आए थे।
[illegible]
किसी [illegible] नहीं रहते थे
[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] में [illegible]
१९२६ [illegible] [illegible]
में [illegible]
[illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible]
प्रि. दीवानचन्द जी.
[illegible] पहले [illegible], [illegible] के
[illegible], [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] में [illegible]
[illegible]
[illegible] में [illegible]
{कि [illegible] देव [illegible] } [illegible]
[illegible]
[illegible] उनके [illegible] में [illegible]
वाले हैं —
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

बिड़ला
वल्लभ
{ चन्द्रावन
{ अरहावन
दाघाखाना
अंग्रेजी
हैनरीमैं का लिखाई

(श्री) कृष्णचन्द्र विद्यालंकार
२५/२६ शक्तिनगर
Delhi

{ History of Orissa
{ हरेकृष्ण मेहताब का

{ प्राकृत भाषा की व्याख्या
{ राजकमल प्रकाशन
श्री शमशेर बहादुर सिंह
उर्दू विभाग
दिल्ली
(श्री) भारतभूषण अग्रवाल
साहित्य अकादमी
रवीन्द्र भवन
{ हमारा भारत निर्माता
{ राहुल सांकृत्यायन
भगवतशरण उपाध्याय
{ हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ
कृष्णाचार्य (राष्ट्रीय पुस्तकालय)
ज्ञानपीठ (हिन्दी विभाग)
{ पंजाब
{ M. S. रंधावा
पंजाब सरकार
{ जिज्ञासु भवन
बहालगढ़
सोनीपत की ओर
G. T. Road
श्री प्रेमचन्द्र राय
.48 नौरंगबाग
श्री मृणालसिंह शर्मा
{ हिन्दी-उर्दू कोश
{ रामचन्द्र वर्मा
{ नूर-उल-लुगात
{ फारसी-आलिफ़ा

भक्तिकाल के कवि
श्री ब्रजदास लनीया
बुद्धविलास
{ गङ्गा का विवाद
{ गङ्गा की पुरातत्व
पटना.
जैन पुस्तकालय
मारवाड़ी पुस्तकालय
{ चावड़ी बाजार
{ वैदिक पुस्तकालय
{ वानदेवी विश्व
{ डॉ. धर्मेन्द्रनाथ दरियागंज.
{ बाबा पुस्तकालय
{ North Block के पीछे
सैनिक ...
दीवानचन्द्र फिरोज शाह रोड
सप्रू हाउस
विज्ञान भवन
{ पुरातत्व विभाग
{ जनपथ
{ अमेरिकन U.S.I.S.
{ कर्जन रोड
{ कनाट प्लेस
{ Indian Information Centre)
जर्मन एम्बेसी
आस्ट्रेलियन एम्बेसी
अमेरिकन एम्बेसी
{ All India Arts
{ British council)
प्रेस क्लब की
{ दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी
{ व ज्योतिष पुस्तकालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
North Block (सैनिक पुस्तकालय)
{ भारत में कृषि और पशुपालन
{ I. C. A. R.
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
महेन्द्रसिंह रंधावा
ओम प्रकाश शर्मा
कृषि भवन नई दिल्ली
{ श्री देवराज पुरी
{ A-4. गङ्गाराम हॉस्पिटल के पास
श्री रमेश कुमार शुक्ल
32. N रविन्द्र नगर मार्केट

{ श्री दयारामजी शास्त्री
{ एम. ए.
{ Phone No 56.8924
देवनगर Block 9
गली. 3
मकान नं. 6590
{ श्री सेवाराम कपूर.
{ Model school
{ पुस्तकालय
{ Evolution of
{ Hindu morals
{ Sir शिवस्वामी अय्यर
Indian Review
Natesan & Co
"Hindu" मद्रास
Adyar
मद्रास विश्वविद्यालय
तिरुपति
V. Krishnaswami
Aiyangar
राजगोपालाचार्य
{ चिदम्बरम
{ सिन्धु
पुरुषार्थ
भारती
उत्तमूर वीर.
C. P. रामस्वामी
अय्यर
राधाकृष्णन
कुप्पु स्वामी
जोशी
लक्ष्मणाचार्य
मद्रास
मैत्रेयी
{ पुरुषार्थ
{ पत्र
{ १९६५ में
{ नागेश्वर
कर्नाटक

(भारत की जन जातियाँ

{ विजय कुमार लाल बनपाल
प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
विवाह विहार —
4 बलबीर राजपूत
देहरादून

{ हिन्दू-विवाह का पवित्रता
तथा महत्त्व
गीताप्रेस गोरखपुर.

{ Middle Classes
in Modern India
B. B. Mishra

उन्नत जीवन की ओर
प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण
मंत्रालय

{ १८६१- १९४६
प. मदनमोहन मालवीय

न त्वहं कामये राज्यम्
न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानाम्
प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा
लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति
धर्मेण पापमपनुदति
धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितम्
तस्माद् धर्मं परमं वदन्ति ॥

सारस्वताः कान्यकुब्जाः
गौड मैथिल उत्कलाः।
पञ्चगौडा इति ख्याताः
विन्ध्यस्योत्तर वासिनः ॥
कर्णाटाश्चैव तैलङ्गाः
गुर्जराः राष्ट्रवासिनः।
आन्ध्राश्च द्राविडाः पञ्च
विन्ध्य दक्षिण वासिनः ॥

{ शाङ्कर दशविध संन्यासी.
डॉ. सुरेशचन्द्र (मह
केन्द्रीय सचिवालय ग्रन्थागार
शिक्षा मंत्रालय

{ Dr. S. P. Sen
Director of Institute
Historical Studies.
1100 - 1200 | राष्ट्रीय जीवनियाँ
150 लेखक

{ Studies in Bengal
Renaissance
अतुलचन्द्र ~~गुप्त~~ गुप्त
The National Council of
Education
Bengal Jadavpur

{ Derozio
अक्षय कुमार दत्त.
तत्त्व बोधिनी पत्रिका
{ तत्त्व बोधिनी सभा
1843 - 1858.

हिन्दू Patriot
{ हिन्दू मेला
राजनारायण बसु
1867 हिन्दू मेला
{ 1864 ब्रह्म की आन्दोलन
स्त्रियों के विरुद्ध
पतन रोक
द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर
आनन्दमोहन बोस
प्रार्थना
काशीनाथ त्र्यम्बक तैलंग
शिशिर कुमार घोष
[illegible]
अमृत बाजार पत्रिका.

डाक्टर महेन्द्र लाल सरकार

दार्शनिक महेन्द्र लाल सरकार
लोकमान्य [illegible] 1887 में
सरोजनी [illegible] (सरोजिनी दत्त)
प्रमथनाथ बोस
अब्दुल [illegible]
{ बम्बई का [illegible]
पूना का [illegible]
1784 एशियाटिक सोसाइटी

{ महाराष्ट्र [illegible]
[illegible]
Charles' Standard History
of Bengal
{ पंजाबी [illegible]
राजाराम मोहन [illegible] }

मौलाना हालीउत्तलिखित
ले. सैयद अहमद

इशारत-ए-आमी जबीद
अंग्रेजी में इन्लिखालमुद्दाए
1909 जैयद महमूद

Beck
Morrison
Arnold

Aligarh
Institute
Gazette

मुस्लिम पलिटिक्स
लाल बहादुर
(आगरा)

हाली तहजीब उल-अखलाक

A. N. उपाध्ये (जैन)
कोल्हापुर
देखो
दर्शन ~~देखो~~ आहार की
परिनिर्वाण
व्याख्ये
गोविंद
जयसिंहदास
गुरु हरि कियावली
उद्धृत - पं. पंजाबकोलियाँ
पंजाबी ग्रन्थ
जपा गोविंद रचावली

{ हनुमन्त चोपड़ी
22-23 पृष्ठ } श्री जनकी-वल्लभ
गुरु हरगोविन्द - उपदेश
1270 - 1350 (नामदेव के गीत
गुरुग्रन्थ साहिब में)

भारत इतिहास संशोधक मण्डल
313 सदाशिव पेठ पूना (2)

गुरु हरगोविन्द - उपदेश
दीप चन्द — (उपदेश

भारतीय शताब्दी विशेषांक
नागरी प्रचारिणी सभा

S. N. Dasgupta
Indian Philosophy

Indian Muslims
A. Political History
(आगरा)
Muslim Politics 1904-1942

H. Kabir
Muslim League } लाल बहादुर
1954 आगरा

P. S. महालनवीस
Distribution of Muslims in
the population of India

I. A. Qureshi
Pakistan way of life

W. Smith
Modern Islam in India

Gardiner (Theory of
History

Study of History by Toynbee
2 Volumes

John Anderson
Australian Philosophy

श्री जयचन्द्र 39, T
कमुंदिनी अलवर

उपनिषद्
वैदिक संशोधन मण्डल
20)
अभय शास्त्री कांटे (नासिक)

4 खण्ड History of Dharma
Shastra

श्री काणे

भारतीय ~~x~~ विद्याभवन के
इतिहास-ग्रन्थों में
बहुत से सम्प्रदायों में मराठी
1800 - 1947

हिन्दू, मुसलमान, शैव, लिङ्गायत
सिक्ख, ख्रिश्चियन

प्राकृत भाषा और साहित्य का
आलोचनात्मक
इतिहास
डा. नेमिचन्द्र शास्त्री 20)
तारा पब्लिकेशन

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
प्रताप कुमार मुखोपाध्याय

श्री रवीन्द्रनाथ शर्मा के लेख
अनुवाद
गोडे के लिखाने कहें

History & culture of Bengal
A. K. Sur
Chakravarti Chatterjee

The creation of modern Bihar

S. Mishra { ~~Hist~~ History of Bihar

{ हिन्दी में आधुनिक बिहार [illegible]
S. Mishra

V. C. P. Chaudhri

{ [illegible] Graham
[illegible]

{ [illegible]
[illegible]
विद्यापीठ
[illegible]

ब्रिटिश म्यूज़ियम
राष्ट्रीय पुस्तकालय
नागरी प्रचारिणी सभा
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
India Office.

{ अखिल भारतीय [illegible]
[illegible].
[illegible]
[illegible]

{ Social welfare of India.
Durga Bai Deshmukha

{ [illegible] कोश
(बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्)
[illegible]

An outline of Religious literature

1. C. Dwarkanath
Philosophy of Indian medicine

2. Captain
[illegible]

3. [illegible]

4. बालकृष्ण [illegible]

5. [illegible]

6. [illegible]

7. [illegible]
[illegible]

(बड़ी) [illegible]
[illegible] ST-[illegible]
[illegible]

{ Britain in India
R. P. Masani }

Governor Generals & Viceroys of India.

{ New India
Directory of Libraries and Educational Institutions.
New Book Society of India.

The Heritage of Sikhs.
Harbans Singh.
Asia Publishing House.

विनायकराव अभिनन्दनग्रंथ (२०)

उषा-टाईप २२ रुपीमंत. २०३ E वाणीदेवी. महीनी मा. फुलनूरखान

कि. कवि
जीत गोस्वामी
भक्ति काव्य

(राजलोचन शाह. स्वीनगरी आस्थान बिहार)

बिहार के बारे में अनुनाम की नारायण राजाराम लाइब्रेरी
विद्यापति बिर्ज लक्ष्मीचन्द्र

दादाजी उदयदास
बाबा श्यामराम
पिताजी दयालदास आत्मानन्द
अर्जुनदीर देवदत्त
जगजीवन आदिक

शेखवृत्त पञ्चाशीति (अवधी)

विचार-नवनीत } गुरु गोलवलकर

राष्ट्रधर्म प्रकाशन प्रकाशन मन्दिर लखनऊ.

वैदिक सम्पत्ति.
रघुनन्दन.

स्वामी अखण्डानन्द जी
दयी
बालदूती
मंडियालीगली
पहाड़ीधीरज.
जटवाड़ा.

श्री नरेन्द्रलाल जी आर्य
C/o डा. चन्द्रप्रकाश.
Dentist
लुधियाना

दयानन्द जीवनी साहित्य
प्रो. विश्वनाथ शास्त्री
(१८-१९.

प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान.
श्री आदित्य मौद्गल

प. हरिहर स्वरूप शास्त्री
२६ दरियागंज
प्रभाष्याम.
दिल्ली धर्मार्थ
भागवत महाशर्मा
दीनदयालु व्याख्यान वाचस्पति
प. मौलियद शर्मा
प. निजबलराम
प. मदनमिश्र

मयारामदास
सिद्धानन्द २२६०

लोक साहित्य विज्ञान
डा. सत्येन्द्र (शिवलाल अग्रवाल २६० आगरा)

प. चन्द्रकान्त वाली
मेल्लानी लोकसाहित्य

मौलिचन्द्र जोशी
आनन्दवन्धु मौर्य
विश्वनाथ भट्ट
महाराज

(सत्यकेतु विद्यालंकार
तारेश्चन्द्र शास्त्री)

ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन
श्याम परमार
शिवलाल अग्रवाल
२६०

शरीर क्रिया विज्ञान
वैद्य बाबूलाल जी
जाट जी

लोकलभ्यपत्रिका
२०२० लोकसाहित्य

लाला लाजपतराय
Writings & Speeches
विजयचन्द्र जोशी

The Age of Nandas & Mauryas (नीलकण्ठ)
मन्दिरके बाहर आर्यानागार्जुन

T. V. Parvate.

श्रीमती चौप

ग्रामीणों की लड़की } चीन-लाल हिन्दीनेर अलीगढ़

प्राना साही / S. D. Dua
Dr. N. Bahl / 6/3B. रूपनगर

वेद में आयुर्वेद
वैद्य (गोपालजी शास्त्री)
भंडार चक्रपाणि
हरिनारायण शास्त्री
मदनमोहन धर्माधिकारी ऑफिसालय

विश्व ज्योति
मालवीय जी
बजरंग बाग
गढ़वाल

आर्य संस्कृति का इतिहास
आर्य जाति का इतिहास

डॉ. दीनदयाल गोयनका
श्री रामनिवास
घाटकोपर
कानपुर

The Panjab century
(प्रकाश टंडन)

The Making of Modern India.
1848 — S. R. Sharma
Orient Longmans
Ferguson College

Social welfare in India.
Publication Division
Rs. 6/-

वकील का दीवानचंद
3 Pitch oak Sugar
गोलमार्केट

प्राचीन भारत के कलाकार
विनोद
डॉ. हजारीप्रसाद

N. B. Sen 6A 53 / W.E.A.
52886 Ambient Punjabis. गोलमार्केट

Hindu achievement in Exact Science
विनय कुमार सरकार
Positive Science of Hindu
ब्रजेन्द्रनाथ शील

सत्यप्रकाश

पं. कृष्ण शंकर (उमरवेदी)
14-C. Market Road
शिवमंदिर
अशोक रोड

पदार्थ शास्त्र (आनन्द)

श्री चन्द्रप्रकाश नागर
Service Manager,
U. P. Govt. Roadways
Central Workshop
Lucknow

डॉ. द. शान्तिप्रकाश जी
Sesanod B
230/8
जैसलपुर
गुरुगाँव छावनी

हिन्दू का विज्ञान
हिन्दू शास्त्र
निर्णय सागर प्रेस

शिल्पकोष
कलाकोश

The Religion & Politics in Pakistan
The Making of Pakistan
Mr K. K. Aziz

The Emergence of Pakistan
Mr Chaudhari Mohammad Ali

Indian writing in English
K. R. श्रीनिवास आयंगर

श्री जगदीशचन्द्र विद्यार्थी
8 E कमलानगर
दिल्ली

श्री वेदव्रतजी रिसर्च प्रोफेसर
पंजाब यूनिवर्सिटी
[illegible]

{ श्री एस. एस. गोयल
अर्विन हॉस्पिटल)
फार्मेसी विभाग.

श्री कुन्दनलालजी
C 11/123
लाजपतनगर }

श्रीमती [illegible] जगदीशचन्द्र
32/25 ईस्ट पटेलनगर)

11. विधानचन्द्र राय (अभिनन्दन ग्रन्थ, [illegible])
जगदीशचन्द्र बोस.
चित्तरंजन दास.
सुभाषचन्द्र राय
S. R. Das.
नीलरतन सरकार
आशुतोषमुखर्जी
श्यामाप्रसादमुखर्जी.
{ [illegible] विज्ञान [illegible]
उनकी दो पुस्तकें ॥
घर का वैद्य

पञ्च
अभिधानविशेष.
प्रतिविशेष
कालविशेष.
हविःविशेष.

दीपनकारक, रोगनाशक, उपशमकारक, मिष्ट
{ दीपनकारक, मिष्ट, उपशमकारक, रोगनाशक
अन्न में भी पथ्य द्रव्य
अन्न की अपेक्षा औषध- तीक्ष्णवीर्य
अन्न अधिक, औषध थोड़ा।
जठराग्निहोम । बाह्यहोम
उपवास के लाभ. ([illegible] यादवजी त्रिकमजी [illegible])
दाल में - दाल अधिक, खिचड़ी, फिर [illegible], फिर पतली.

उपकार [illegible] - अपकार [illegible]
[illegible] भक्ति (शास्त्र - धर्म)
पथ्य - तिल - शर्करा.
{ जटामांसी
[illegible]
उन्मादचेष्टा } कर्मसाक्षी / यान्त्रिक.
मानि - देवदत्त
वैद्य रामगोपाल शास्त्री
वासुदेवजी आचार्य.

यजुर्वेद । यजुर्भिः यजन्ति ।

अग्नौप्रास्ताः हुतिः सम्यक् आदित्यमुपतिष्ठते

(मनु) आदित्याज्जायते वृष्टिः ततो ऽन्नं ——— ततः प्रजा

वाते स्था :

यज्ञ – स्वर्ग को
यज्ञ आगमी स्वर्ग को ।

उपनिषदों में ।

चिकित्सा पद्धतियों में ।

होमियोपैथी
धू म्रपान
अग्निका वैद्युत्व
वाष्पत्व ।
धूम्रीकरण
वातावहन ।

(वैद्युत अग्नि । magnetic currents विश्वविदित ...)

देवी के उपकार
वायु शुद्धि
वृष्टि जल शुद्धि
प्रसन्नता । सौमनस्य का

श्री - कुन्दन लालजी ।

{ श्री गुरु आचार्य जी
{ स्वामी विश्वानन्दजी

पं - धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड ।

पंडी स्वामी बुद्धानन्दजी ।
पं . रामेश्वर जी
पं - शिवकुमार जी

... ।

सहवायु ॥
{ ... के बाद — ... के पहले ।
{ सूर्य की किरणें - आहुति के उपरान्त
वेदमन्त्रों की शक्ति । ... की शक्ति
... ।

निटेटर }
निटेटेर }

सिनिहलांछवि

दुमन: फल (गायफल)

(१) ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषू पजायते।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते
क्रोधात् भवति संमोहः संमोहात् स्मृति विभ्रमः।
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशः बुद्धिनाशात् प्रणश्यति

भगवद्
गीता अध्याय २। श्लोक
६२, ६३.

(१) विषयों का ध्यान करते है पुरुष को (२) विषयों में संग
(३) संग से काम. (४) काम से क्रोध (५) क्रोध से संमोह
(६) संमोह से स्मृतिविभ्रम (७) स्मृतिभ्रंश से बुद्धिनाश
(८) बुद्धिनाश से नष्ट हो जाता है ॥

(२) काम का मूलार्थ इच्छा है - दर्शित अर्थ.

(३) अतः क्रम में इन क्रम से वृत्तियाँ उठती हैं
ज्ञानजन्या भवेदिच्छा, इच्छाजन्या भवेत् कृतिः
ज्ञान से इच्छा (काम), इच्छा से कृति (क्रिया - कर्म)

(४) महाभाष्यकार आचार्य पतञ्जलिजी ने भी १. ३. ४॥ य एव मनुष्य।
प्रेक्षापूर्वकारी, स बुद्ध्या कञ्चिदर्थम् सम्पश्यति, संदृष्टे प्रार्थना, प्रार्थिते
अध्यवसायः, अध्यवसाये आरम्भः, आरम्भे निर्वृत्तिः, निर्वृत्तौ फलावाप्तिः
आचार्य ने तीन के स्थान में ६ सोपान दण्ड कर दिए मूलतः संदर्शन, प्रार्थना
(इच्छा - काम) और अध्यवसाय (पुरुषार्थ - कृति) है।

(५) सांख्य प्रक्रिया में प्रकृते महान् (बुद्धिः) बुद्धेः अहंकारः, अहंकार से
मनः, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय, और सूक्ष्म पञ्च तन्मात्रा और
पञ्च तन्मात्रा से पञ्च स्थूल महाभूत।

प्रकृति
|
महान् (बुद्धि)
|
अहंकार

मनः — पञ्च ज्ञानेन्द्रिय — पञ्च कर्मेन्द्रिय — पञ्च तन्मात्रा
|
पञ्च महाभूत

(६) बुद्धि का कर्म अध्यवसाय
अहंकार का कर्म, अभिमान
मनः का कार्य संकल्प.

(७) सांख्यकारिका. २२
प्रकृतेर्महांस्ततोऽहंकारस्तस्माद्गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि।
From प्रकृति (Primordial Matter issues Mahat (बुद्धि) from Buddhi
issues अहंकार, from अहंकार proceed the set of sixteen and from
the five of these sixteen proceed the five elementary substances
(पञ्च महाभूत) आकाश - वायु - अग्नि, अप, पृथिवी) इन पञ्च महाभूतों के
मूल को अर्थात् शब्दतन्मात्रा, स्पर्शतन्मात्रा, रूपतन्मात्रा, रसतन्मात्रा और गन्ध तन्मात्रा
कहते हैं

कारिका 23.

अध्यवसायो बुद्धि धर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्

सात्विकमेतद्रूपं तामसमस्माद् विपर्यस्तम् ॥

बुद्धि is determination. Virtue, wisdom, dispassion and power (ईश्वरता, ऐश्वर्य not wealth) constitute its form when abounding in the sattva attribute and reverse of ~~it~~ these when and when abounding in तामस principle that is अधर्म, अज्ञान, अविराग, अनैश्वर्य, (vice, ignorance passion & weakness.

(८) अहंकार means I- अहम् principle I am the egotism just I-ness ॥

(९) अहंकार से { (१) मनः, पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय — (सात्विक है इसका दूसरा नाम वैकृत
(२) इसके तामस भाग का नाम भूतादि है और तैजस से

तैजस / राजस { सात्विक दोनों (a) मनः पञ्चज्ञानेन्द्रिय और पञ्चकर्मेन्द्रिय
तामस (b) पञ्च तन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध)

अहंकार का राजस रूप गति देता है सात्विक और तामस में गति
स्वतः नहीं होता

सात्विक अहंकार (वैकृत
राजस अहंकार (तैजस)
तामस अहंकार (भूतादि

(१०) इस प्रक्रिया में भी
बुद्धि (ज्ञान) अहंकार —— मनः (feeling) सिद्धांतिकरण
I-ness
my-ness
इच्छा

(११) Virtue | Positive ज्ञान - इच्छा - क्रिया
Vice | negative अविद्या - काम - कर्म

(१२) गीता में { दैवीसम्पद् (सात्विक
आसुरीसम्पद् (राजस - तामस)

सोलह श्लोक

दैवी सम्पद् { अभय, सत्वसंशुद्धि, ज्ञान योग व्यवस्थिति, दान, दम, यज्ञ, स्वाध्याय
तपः आर्जव, अहिंसा, सत्य, ~~अक्रोध~~ अक्रोध, त्याग, शान्ति
अपैशुन, दया, अलोलुप्त्वम्, मार्दव, ह्री, अचापल,
तेज: क्षमा धृति: शौच, नातिमानिता

आसुरी सम्पद् { दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, पारुष्य, अज्ञान
और इसी का विस्तार है ॥

(१३) आन्तर शत्रु
काम, क्रोध, लोभ, मोह(अज्ञान), मद, मत्सर

(१४) वेदान्ती लोग अन्तःकरण के चार रूप मानते हैं

बुद्धि,	अहंकार,	चित्त,	मनः	मनोबुद्धिरहंकारश्चित्तं करणमान्तरम्
अध्यवसाय	अभिमान	स्मृति	संकल्प	संशयो निश्चयो गर्वः स्मरणं विषया अमी.
		पूर्वानुभव अनुसन्धान		

प्राचीन सांख्य बुद्धि - अहंकार - मनः तीन ही मानते हैं

(१५) अलंकारशास्त्री
दश स्थायि-भाव / emotions { रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय
घृणा(जुगुप्सा) आश्चर्य, निर्वेद, वात्सल्य
इनके रस { शृङ्गार हास्य करुण, रौद्र, वीर, भयानक
बीभत्स, अद्भुत, शान्त, वत्सल

सात्त्विक रस	राजस रस	तामस रस
शान्त — करुण — वत्सल	वीर — शृङ्गार — हास्य	अद्भुत — बीभत्स — रौद्र (भयानक)

३३ संचारीभाव (व्यभिचारीभाव) निर्वेद, ग्लानि, शङ्का, असूया, मद, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिन्ता, मोह, स्मृति, धृति, व्रीडा, चपलता, हर्ष, आवेग, जडता, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार, सुप्त, प्रबोध, अमर्ष, अवहित्था, उग्रता, मति, व्याधि, उन्माद, मरण, त्रास, वितर्क ॥

(१६) वैशेषिकदर्शन का मन्थन कर वैशेषिक सिद्धान्त के ग्रन्थ पदार्थधर्मसंग्रह में श्रीप्रशस्तपादाचार्य, राजस (रागद्वेष) और तामस मोह के विभेद इस प्रकार करते हैं

राग	द्वेष	मोह
काम	क्रोध	विपर्यय
मत्सर	ईर्ष्या	संशय
स्पृहा	असूया	तर्क
तृष्णा	द्रोह	मान
लोभ	अमर्ष	प्रमाद
माया	अभिमान	भय
दम्भ		शोक

(२६.) चरक शारीरस्थान - पञ्चमाध्याय में यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे - वाली बात यथा लोके (ब्रह्माण्डे) तथा पुरुषे (पिण्डे) में दिखाते हैं

पृथिवी ———— पृथिवी
अप ———— अप
तेजस् ———— तेजस
वायु ———— वायु
आकाश ———— आकाश
अव्यक्त ब्रह्म ———— आत्मा

पृथिवी — धृति
आपः — क्लेद
तेजः — उष्णता
वायुः — प्राण
आकाश — सुषिर
ब्रह्म — अन्तरात्मा
ब्राह्मी विभूतिः — अन्तरात्मा की विभूति
प्रजापति — मनः
इन्द्र — अहंकार
सूर्य — आदान
रुद्र — रोष
चन्द्र — प्रसाद
वसु — सुख
अश्विनौ — कान्ति

मरुत् — उत्साह
विश्वेदेवाः — सर्वेन्द्रिय, सर्वेन्द्रियार्थ
तमः — मोह
ज्योतिः — ज्ञान
सर्गादि — गर्भाधान
कृतयुग — बाल्य
त्रेता — यौवन
द्वापर — स्थाविर्य
कलि — आतुरता
युगान्त — मरण.

(२४) कामः अष्टविधः } दर्शनं स्पर्शनं केलिः कीर्तनं गुह्यभाषणम्।
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च॥
एतन्मैथुनमष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः॥

१९) पृथिव्याम् यानि भूतानि जिह्वोपस्थनिमित्तकम्।
जिह्वोपस्थपरित्यागे पृथिव्याम् किं प्रयोजनम्॥

२०) वेदैर्विहीनाश्च पठन्ति शास्त्रम् शास्त्रेण हीनाश्च पुराणपाठाः।
पुराणहीनाः कृषिणो भवन्ति भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति॥

२१) (आप श्रोता हैं! श्रोता से वक्ता हैं!) न भवति धर्मः श्रोतुः सर्वस्यैकान्ततो हितश्रवणात्। जैन
ब्रुवतोऽनुग्रहबुद्ध्या ~~वक्तु~~ वक्तुस्त्वेकान्ततो भवति॥ (उमास्वाति आचार्य)

(२२) मद | तपोमद, विद्यामद, बलमद, धनमद, रूपमद, यौवनमद,
उच्चपदमद, यशोमद, लावण्यमद, चातुर्यमद, संघमद.
कुलञ्चैव धनञ्चैव रूपं यौवनमेव च। तथा राज्यं तपश्चैव इत्येते षड् बाह्यमदाः॥

(२३) चरक सुश्रुत आदि आयुर्वेद के ग्रन्थों में मनोवृत्तियों शरीर पर क्या प्रभाव है - अच्छी वृत्तियों का अच्छा और बुरी वृत्तियों का बुरा। आजकल Psychiatry तो यह स्थान स्थान पर चार्ज किये हुए है। एक चिकित्सा पद्धति एक पृथक् विज्ञान (Science) ही बन गया है

(२३) आजकल के मनोविज्ञान में

सहजभाव — भाव.
Instinct — emotion.
पलायन वृत्ति — भय
युद्ध — क्रोध
अपकर्षण — घृणा
मातृभावना — वात्सल्य
जिज्ञासा — औत्सुक्य
आत्मप्रतिष्ठा — गर्व
आत्महीनता — दासत्व
काम — रति
सामाजिकता — एकाकीपन ?
भोजनान्वेषण — क्षुधा
परिग्रह — अधिकारभावना
निर्माण — उत्तेजनात्मक
हास्य — हास.

मनुस्मृति और गीतामें तो यह काम - का विषय

(२३) इच्छा और रति आदिके अर्थमें है।

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।
कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहास्त्यकामता।
काम्यो हि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः॥

गीता { काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥ ३.३७।

(२४) पुरुषार्थ चतुष्टयमें
धर्म — अर्थ — काम — मोक्ष।

(२५) काम के दार्शनिक अर्थमें हैं लौकिक भी
अहंकार — दार्शनिक में "गर्व" भी है। और लौकिक —
नामांक व पुराणी॥

(२६) अमरकोशमें
गर्वः, अभिमानः, अहंकारः, दर्पः, मानः, चित्त समुन्नति

कामः { मदनः मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः।
कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः॥
शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः॥
ब्रह्मसूर्विश्वकेतुः स्यात् - — ।

पञ्चशरः। उन्मादनस्तापनश्च शोषणः स्तम्भनस्तथा।
सम्मोहनश्च कामस्य पञ्च बाणाः प्रकीर्तिताः॥

(काम) = इच्छा   इच्छा- काङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाञ्छा, लिप्सा, कामः
अभिलाषः, तर्षः॥

स्थायीभाव + विभाव + अनुभाव + संचारीभाव { रत्यादि स्थायिभावकः, कान्ताद्यालम्बनकः, सुहृच्चन्दनाद्यु-
द्दीपितः कटाक्षाद्यनुभावितः, व्रीडादि संचारितः शृङ्गारः।

दे. तत्त्व तो मूल आत्मज्ञानरूप हैं। इनके लौकिक रूप। इतिहास पुराण, गाथा, नाटकों आदि में ढूँढिये।

रावण — काम + अहंकार (—) रावण — उदाहरण:

द्विधा भज्येयमप्येवं न नमेयं तु कस्यचित्। एष मे सहजो दोषः स्वभावो ॥ रा. ६।३६॥

यावतः कुरुते जन्तुः सम्बन्धान् मनसः प्रियान्
तावन्तोऽस्य निखन्यन्ते हृदये शोकशङ्कवः॥ ६।३६/१२

अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका
नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः॥

रामायण महाभारत पुराण आदि में हैं। अच्छी बुरी मनोवृत्तियों के और आवेगों के उदाहरण ढूँढे जा सकते हैं।

दुर्योधन | कंस
दुःशासन | रावण — (काम + अहंकार)

[illegible]

1. Abanindranath Tagore - His life and arts by Dr. Rai Govind Chand 18-0
2. Abhinava Gupta by Dr. K. C. Pandey
3. Ajanta by G. Yazdani.
4. अभिनयदर्पण by नन्दिकेश्वर
5. रसगंगाधर
6. मानसार by Dr. Acharya
7. Art and thought (in memory of Dr. Anand. K. Kumaraswami) by K. B Iyer.
8. Dr. Anand. K. Kumaraswamy's books.
9. Art of India through the ages by Stella Kramrisch
10. Arts and & crafts of India & Pakistan.
11. Aspect of Indian Aesthetics by Maharaja of Mysore
12. Christian & oriental philosophy of Art by Anand. K. Kumaraswamy.
13. विष्णुधर्मोत्तर पुराण
14. Dance of Shiva by Dr. Anand Kumaraswamy

संस्कृत आयोग

संस्कृत की भारत में दशा।

(१) उत्साह देखा गया [illegible] (२) भारतीय संस्कृति संस्कृत भाषा में निहित है (३)

(२) शासकीय और निजी विद्यालय। (४) गवेषणा - अनुसन्धान (५) परम्परागत प्रणाली। परिपाटी ॥ (६) [illegible] - [illegible] - [illegible] (७) माध्यमिक विद्यालय - तीन वर्ष या ४ वर्ष या पांच वर्ष में तीन [illegible] [illegible] - [illegible]

अथवा गद्य-पद्य संग्रह ॥ (८) ~~[illegible]~~ आगम - [illegible], प्रवचन, व्यवहार (९) राष्ट्रीय जीवन में संस्कृत [illegible] का स्थान (१०) नानादृष्टियों से संस्कृत [illegible] (११)

उच्चारण - [illegible] पठन - शब्दकोश - भाषण - लोकोक्तियाँ - सुभाषित - सुभाषित स्पर्धा

अनुवाद, प्रस्ताव निबन्ध श्लोक रचना। गद्य रचना। [illegible]। [illegible] में

संस्कृत में लेख। अनुसन्धान। [illegible] विवाद। आध्यात्मिक जीवन। (१२) [illegible]।

[illegible]। वेदमन्त्र [illegible] ॥ काव्य-शिक्षा - शास्त्र शिक्षा। [illegible] (१३) साम वेद (१४)

[illegible] (१५) अलंकार शास्त्र की महत्तीय [illegible] ॥ (१६) तपः स्वाध्याय की भावना"

(१७) [illegible] नहीं (१८) [illegible] नहीं ॥ (१९) [illegible] — (२०)

[illegible] (२१) [illegible] (२२) [illegible] (२३) [illegible]

का [illegible] ॥ [illegible] (२४) [illegible] (२५)

[illegible] का महत्त्व (२६) संस्कृत वाङ्मय [illegible] उत्तम [illegible]

[illegible] है - [illegible] (२७) वैदिक - लौकिक संस्कृत - [illegible] (२८)

संस्कृत विश्वविद्यालय भी [illegible] हो रहे हैं — [illegible] संस्कृत विश्वविद्यालय (२९) [illegible]

[illegible] संस्कृत (३०) नवीन विचार (३१) [illegible] नहीं (३२) [illegible] - कल्पना का [illegible]

[illegible] और आनन्द आता है [illegible] (३३) [illegible]

[illegible] - [illegible] आशीर्वाद [illegible]"

[illegible]" ॥ (३४) पिछली शताब्दी में [illegible]

[illegible] - [illegible] - [illegible] संस्कृत [illegible]

प्रसार [illegible] (३५) महापण्डितों की [illegible] - [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]

[illegible] जानी चाहिए (३६) [illegible] में -

[illegible] वेद - शास्त्र में [illegible] है (३७) आयोजन - [illegible]

[illegible] संस्कृत [illegible] है [illegible] -

[illegible] और [illegible] नहीं - (३९) [illegible]

[illegible] है (४०) उच्चारण [illegible] (४१) [illegible] —

[illegible] (४१) [illegible] (४१) [illegible]

उच्चारण - स्थान - प्रयत्न [illegible] (४२) [illegible] में [illegible] माहात्म्य

का [illegible] है (४२) [illegible] में [illegible] (४३) पाणिनि -

है। (४३) [illegible] आचार्य [illegible] (४४) संस्कृत वाङ्मय

[illegible] (४५) [illegible] (४६) [illegible] में [illegible] (४७) [illegible] हैं (४८) इन्हीं [illegible] सैकड़ों -

[illegible] नाम सैकड़ों हैं (४९) [illegible] (४९)

संस्कृत शब्द [illegible] है (४८) [illegible] (५०) [illegible]

[illegible] वर्ग [illegible] (५१) [illegible]

[illegible] संस्कृत का बहुत [illegible] (५२) [illegible] (५३) [illegible]

के लोग संस्कृत के [illegible] (५४) [illegible] - [illegible] (५५) [illegible] - वेद - [illegible]

निष्णातः [illegible] (५६) [illegible] -

[illegible] (५७)

[illegible] (५८) [illegible]

[illegible] विद्वांसः [illegible] भवतीनां [illegible] संस्कृत [illegible]

[illegible]। [illegible]

इति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

यदि क्रियेत, तर्हि तत्र मयि भूयान् दोषो न पातनीयः। [illegible]

हि पुलायम् लोके। अपातनीयम् संस्कृत [illegible] इच्छा [illegible]

मम। तथापि आशाभङ्गोऽभवति। आशा हि परमबलम्बनम्

जनानाम् विशिष्टतोऽप्यत्र। अपत्यं हि प्रायशः जनं [illegible]

कर्मणः भूयसीनिन्दा, भक्तेन गर्हे च भूयते। किमेतादृशे व्यतिकरे

आत्मनिन्दापि महात्मिका प्रवर्तेत। [illegible]

अत्र तु तथा न मन्ये। येन केनापि प्रकारेण [illegible]

[illegible] तथा पतितव्यम्। अन्यथा युवकेषु, वर्षीयःसु, तु [illegible]

बालानां - बालिकेषु च उत्साहभङ्गो भविष्यति, उत्साहभङ्गोनाम

महती विनष्टिः। [illegible] भूयसि, [illegible] गर्हो न

शोभनः। निन्दया [illegible] जातेः क्रियेत। ४

स्वीडविचारः संस्कृतभाषितं प्रशंसनीयम्॥ तथापि [illegible]

इतोऽपि [illegible] पदं पदं [illegible] इच्छ [illegible] पूर्वं लेखनीयम्

[illegible] आपतनीयम्॥ [illegible] केनापि [illegible]

[illegible] न वाची। तथा ओदनः [illegible] न प्रत्यते।

[illegible] वा [illegible] उदेति वा [illegible]॥ इत्यादि प्रयत्ने लेखनेन

[illegible] प्रवाहः जनिष्यते प्रवाहेण [illegible]

प्रयोगविशेषाणि [illegible] - [illegible] भूयान् लाभो भविष्यत्येव॥

[illegible] यथापि [illegible]

[illegible] वर्तयति॥ [illegible] बहुना [illegible]

[illegible] प्रयोगेण [illegible] अत्र तेन [illegible]

नदोषम् अर्हति॥ [illegible] न स्खलति॥

[illegible] पालनीयम्॥

[illegible] विद्वांसम्। संस्कृतम् [illegible]

[illegible] भवतीनाम् [illegible]

[illegible] प्रयोगो [illegible]

[illegible] भूयसी प्रीतिः [illegible]

[illegible] यथा [illegible]

यदि [illegible] विशिष्टं [illegible] अतेषु [illegible]

[illegible] भूयान् [illegible]

[illegible] भवन्ति [illegible]

[illegible] धातूनाम् [illegible]

संस्कृतात् [illegible] प्रयुज्यन्ते - उपयुज्यन्ते वा॥ [illegible]

[illegible] - पतनः। [illegible]॥ निर्वाण -

[illegible] - [illegible] यदि उपलभ्यते प्रयुज्यते तत् [illegible]

[illegible] कविभ्यः न खलु [illegible]

[illegible] जलधाराभ्यः [illegible]॥ उर्वी - ए

[illegible] उर्वी, पृथु - पृथ्वी॥ को [illegible] नदी [illegible]

यदि नदीन नदी [illegible] नदी [illegible]

[illegible] विना [illegible]॥

नाचूनाम् रवानाम यदि चपने [illegible] मूर्चा हमा लाव ॥
नमोऽस्तु ते नाथ [illegible] है। जमनोरम [illegible]
मुच्यते ते भविजानाति। जविरिता मम था। ~~[illegible]~~
श्री तमजैसौमव वत्र [illegible] बहु: पीहाका न मरिष्यू। ~~[illegible]~~
आयेरानी न पञ्च होरा नाल धन्यानादे भवति। येन जैवी
जामीपुर पवे अयम पञ्च वादब काला ॥ नायम् [illegible]
पन्था। विचारोपाय। अर्थ: वक्ष्य ना मोमोऽन्वपणीयम्॥
अहो आश्चर्यम् श्री [illegible] बुध्यति हमति। [illegible] ॥
रम: क्रोध [illegible] इति विद्युति जिवमे ॥ आपात मनो हर
वचः। परिणामेन जटवकटम् ॥ अहो विपान भाति।
अमतनीमेव वालेन भवतीषु धाराज [illegible]
लव मारे वादु मे भवन: [illegible] भवत [illegible]
आशा [illegible] यदि नितान्तमेव [illegible] किल्बेव
तदैव यथा वर्धते अन्यथा वे जानाति अपर [illegible]
एव वर्धिते यह आपतितम् तेन हृपरे भवन।
परे वे नानाति [illegible] आविर्भा [illegible] । [illegible] ॥
अभावे [illegible] जातु [illegible] ॥ [illegible] चिन्त्यते
तत् संस्कृतभाषितपरिनानीयम् ॥ येन [illegible] एव विद्यार्थ: [illegible]
[illegible] गन्धेषु: पञ्चापेक्षा। अनुवाद रूपं न गच्छेत् ॥ विनीतवत
[illegible] जीवितम् [illegible] ॥ ~~[illegible]~~ ॥ [illegible] । [illegible] भावका:।
[illegible] जीवनम्। [illegible] अमतांगत ॥ [illegible] एव [illegible]
रोमविस्फारितेक्षणा। [illegible] गम्भनाय हलाय वा। [illegible] नथाऽस्मि तथाऽस्मि
वर्धितव्य। ॥ अत्र [illegible] देवविचित्र विद्यायाम आपदम् गच्छति।
आजन्म [illegible] रूपा देवबिंदु - अङ्गार - राहु - [illegible] आपदम् [illegible] चिन्तवीः।
महाचना। देवता:। पूर्व - [illegible] यावदेव मम चेतो न मुह्यति। दैव चिन्तवीः।
चला हि ग्राम नाम मति:। दर्शप्रच्छादशाविना। किन्तु चित्तं मनुष्याणाम्
मनस्त्वचेतीवमामा। दर्श - प्रच्छादशापिना। [illegible] अवतारयोमान।
अनिच्यमति मे मति:। पूजाफलनवर्त्मा। [illegible] कुमिता ॥
वंम द्वितीयं अन्तरात्मा। वदविदाम वर:। पृथुलोचनी। [illegible]
यदातिमं नड्ढ़ोऽयथा। विशालाक्षी। [illegible] ज्ञात्वा यौवन मो [illegible] राघवेन्द्र।
मम: [illegible] वाच: शृणाव जानती तत:। [illegible] विदेशमनोफलपूर्ण
राज्येऽस्मिन् स्थाति। यथा च भ्रातृभ [illegible] देवाकुरे
जानपदा: जना:। [illegible] नावधनपचो [illegible] किशोरीवा त्पष्प मता।
साव जानामि [illegible] मना: कथा:। [illegible] बिमना: बधून
[illegible] तेषु [illegible] कल्याणि! विधर्धिव। अध्यापनाध्ययनं / पठनपाठनं ॥
गतो दके सेतु बन्धो, पुष्पावत। [illegible] वा
[illegible] कोऽस्ति। [illegible] प्राचीनपठित पद्धति,
कि [illegible] शक्यन्ते ॥ [illegible]
मोहयितुं [illegible] लेवार पद्धति [illegible]
आचार्यै: पद्धति:।
वर्ष: कालान्तं [illegible]

The Problem of Sanskrit Reading { प्रो. गणेश-श्रीपाद बाल शास्त्री हुपरीकर.
of Raja Ram College · Kohlapur

[illegible]: [illegible]। मेदामेदौ
पुरातन वादा [illegible] अयमोवद्॥ उदीच्या: दाक्षिणात्या:। क्रियान् अर्थ:॥
सामान्य-वैशेष्ये॥ (किं पर्यायम्) (कितनी) [illegible]।
पठलालितं भव [illegible], तथा भाषायाम [illegible] सर्वत्रैव।
भाषामुखेन [illegible] [illegible]मुखेन भाषा वा। [illegible]मुखेन॥
[illegible] स्फोट। [illegible]। [illegible] [illegible]
[illegible]। [illegible]। आत्मभूप: किल दाक्षिणात्य।
[illegible]। दाक्षिणात्या:। [illegible]: उदीच्या:॥ [illegible] वर्तते [illegible]"
[illegible]। मूलग्रन्थ - टीकाग्रन्थ॥ संहति: [illegible]।
[illegible]॥ "पंक्ति [illegible] पुरुष:
पल्लवे-ग्राहि पाण्डित्यम् - मूलग्राहि पाण्डित्यम्।
[illegible]॥ [illegible] आधारात् [illegible]
मी [illegible] जाता आहेत॥ इदं [illegible]॥ [illegible]।
एवं अकाले [illegible] न विद्यते। [illegible]॥ [illegible]
[illegible] मुखेहि पाण्डित्यं वा॥

[illegible]: [illegible]। [illegible]: [illegible]: [illegible]।
[illegible]: [illegible]।
अहो [illegible]। [illegible]। मौनी [illegible]
[illegible] न भवति आत्मनः [illegible]। [illegible]
[illegible]। अनन्तरं: ~~[illegible]~~ [illegible]। किं [illegible]
[illegible]। [illegible]
मातर: गृहे स्थित्वा [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] गृहे [illegible] विद्यालयम् गता [illegible]
[illegible]। [illegible] [illegible]
[illegible]: [illegible] गृहे प्रविशति [illegible]
च [illegible] [illegible] माता न वा [illegible]
विलम्बम् [illegible] [illegible] माता [illegible]
[illegible] मात्रा [illegible] सा आस्वादयति
[illegible] भवति - [illegible] च [illegible]
अहो [illegible]! [illegible] लोके [illegible]!
[illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]। [illegible]। [illegible] न लभ्यते।
[illegible] च [illegible]। [illegible] [illegible]
[illegible] लभ्यते [illegible] [illegible]
[illegible] शाला [illegible] [illegible]!
[illegible] न [illegible] शाला [illegible]
[illegible] शाला [illegible]
सामान्य वैशेष्ये मेदामेदौ [illegible] ~~[illegible]~~ [illegible]

अथ शासन आपत्तिवर्षम् ॥ [illegible] हृदयं किम् न वेत्ति पुंजम् ।
दूरीलेख शिक्षापद्धतिमनुसन्धाय अभिनीय कार्यनाटक साहित्ये
महानुभागः प्रदर्श्यते तत अंशतः एव शोभनम् ॥
मङ्गल किंतु [illegible] दत्वा नाट्यवाङ्मयम् विरचयति सन्धानेन शास्त्रीय
विचारान् चित्तं [illegible] । [illegible] मनसि च हृदयं लभमानः ॥
नाट्य वाङ्मयस्य दिग्दर्शनम् । भूयो भूयो न जायते ।
शास्त्र वाङ्मयस्य अभ्यासेन पुनः पुनः जागर्ति । नवाः नवाः
विचाराः हृदये स्फुरन्ति । इतः उत्थितम् [illegible]
[illegible] । यदि शास्त्रवाङ्मयस्य स्वाध्यायेन [illegible]
आत्मनः [illegible] । शनैः शनैः मधुनीत [illegible]
[illegible] [illegible] क्षेपे पालयति ॥ हा हन्त हन्त [illegible]
गतः उड्डीयत ॥ हा हन्त ! यथा [illegible] लभेत [illegible]
तावद् वेला वर्तमाना येन ज्ञातुम् उपायः विचारणीयः
च [illegible] अर्थशास्त्रस्य महाध्यायनालयस्य [illegible]
नाट्याद् । यः भवतो ऽस्य जनवेता । तत् [illegible] आलोक्य
इच्छति चेतः [illegible] । अतः वयम् ये [illegible]
[illegible] अवलोकामहे । इतः [illegible] विधेः
आत्मा माया । [illegible] श्रूयते । जीवनं इदम् [illegible]
आत्मदेवी तपस्विनी [illegible] आत्मजनी [illegible] ॥
अहो विलक्षणम् संसारः । आत्महीनम् वयं चातुरम् न पश्यामः ॥
[illegible] विलीनम् । पदम् आत्मानं [illegible] । अहो दृश्यते
[illegible] मातापितृजातानां जनानाम् ।
[illegible] (इत्यादि) [illegible] लिख्यते [illegible]
[illegible] । [illegible] वर्तते [illegible] ,
[illegible] ॥ [illegible] विश्वासः ॥ अहो भावानाम् हृदयभावानाम् [illegible] ।
[illegible] प्रीतिः विश्वासः विश्वासः ॥ अहो भावानाम् हृदय भावानाम् [illegible]
[illegible] इमे भावाः [illegible] जायन्ते । नमो हृदयाय ।
नमः [illegible] ! नमः [illegible] , [illegible] ॥ ~~[illegible]~~ मयास्ते हेतोः
वन्दामहे [illegible] न तु [illegible] ॥ [illegible] जयतु ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ~~[illegible]~~ तपस्विनी [illegible] ॥ [illegible] ये
इमाम् [illegible] अनुपालते ॥ अहो ! बालः शोभितः महान् निधिः विशालः ॥
पातु । रक्षतु । भवतु । नव-शास्त्र-[illegible] । [illegible] ॥ [illegible]
सकल-कला-[illegible] । [illegible] । बहु [illegible], [illegible] अनन्तशक्तिमान् ।
[illegible] । यावज्जीवम् जडो देहते । [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] मैं रहूँ [illegible]
मद् [illegible] [illegible] ॥ [illegible] । [illegible]:
[illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible]
लापरवा [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] ।
आत्मा [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ।
[illegible] । [illegible] , [illegible] , [illegible] ।
[illegible] , [illegible] , [illegible] ॥ [illegible] हृदय [illegible] हृदय [illegible] हृदय ।
[illegible] ॥

प्रथमाङ्कः। आशाङ्कः। आचाराङ्कः। विश्वासाङ्कः॥ वीक्षिता विलसिताः॥ पुण्यमण्डलपरिवेष्टिता, हृदयस्थानीयाः प्रथममण्डलम्॥ किमनेन केवलम्॥
कथयेतत्। अत्र कोऽपि विश्रान्तिं केवलम्॥ ललित-मञ्जुलकुलजन उज्ज्वलम्।
आलोप्य॥ आपतन्ति।
(१) कीलोत्पाटिवानरकथा॥
राजाः शकुन्तदेपदा।
प्रयोगमूलमिमताः प्रमदाः लताश्च यः पार्श्वतो वर्तते तत् परिवेष्टयन्ति।
सदेहं - Fertilisations. तेजोन्नति पदी माला।
आकाशे टिट्टिभ गता वक्षसा भावयोर्तत्र नेत्र वक्रकावि कौशल लक्ष्यते न्तर्गतमन।
उत्तरोत्तरं वास्तं वदतां तन्मुञ्जायते। उत्तरोत्तरा हि राजानः। अधिष्ठित्वं भवता।
शिवालो पन्थानः सन्तु॥ स्त्रीत्वं पन्थानमनुसरेयः।
तन्त्रोक्तिता, इत्येक्षते। दुःखं भजते। सुखं भुजते।
प्रमदानां ऊर्मिः। लोकयात्रा। क्षुधा पीडिताः मनीषिणः।
प्राज्ञाः। कवयः। विद्वांसः। विज्ञाः। सन्तः। जज्ञानाः। विचाः।
शास्त्रः। कुशलाः। चतुराः। निपुणाः। प्रवीणः।
अहो! अद्भुतं तिरस्करणं पुष्पतल्पस्य। अश्यगन्धस्य रच्चो मन्ये
लक्ष्यं रुच्यः। बहुदर्शी बहुश्रुतः। नाना कविमयम् —
अद्भुतं जगत् अनेन पूर्णेभिः कथा इत्यम्। गृहाद् - ग्रामाद्
नगराद् बहिर्गमनेन प्रकृतिनिरीक्षणेन ~~सम्भूमि पर्यटनम्~~
गिरि - नदी - वनोपवन दर्शनेन पशु - पक्षि - कीट - पतङ्ग विषयक
ज्ञानं वर्धते। बुद्धेर्विकासः विकासतिच॥ अहो हर्षमहोदयः।
अनिमात् विरक्ता। पाठविस्मारं धैर्येण धारयति स्वयम्
लिनाति पश्य वनेषु स्थितं तानि च पठना। किं तेऽपि वन
प्रकृतेः पाठं वनात जनयति। एवमेव सत्यपि धैर्येण धत्ते
धैर्येण न मुञ्चति। मन्ये गहनत्वं गहने विचारं च ~~कथित~~ करिष्यति
यथापि तरुण एव वा नवनव तत्त्वं शिक्षितुमुद्यत:॥ पशूनाम्
पक्षिणाम् भिन्नाभिन्न प्रवृत्तिषु वर्तमानानाम् जनानाम् गुणदोष
भूयसी पर्यालोचना कृता येन एतादृशीः मनोहारिणी कथा
रचयितुम् समर्थो भवति - श्री लालाजयन्तीप्रसाद गुप्ताः॥
पर्जन्यवत् आत्म प्रवृत्तिः, यथेऽपि वर्धते अपात्रेऽपि वर्धते॥
सा तस्य कूपोऽभिनिर्दिष्टुवाणाः क्षारं जलं आपुजन्याः पिबन्ति॥
वचनं हृदयं ~~प्रविश्य~~ प्रविश्य सूक्ष्म दृष्ट्या सूक्ष्मेक्षिकया निरीक्ष
णीयम्॥ तेजो यत्र विराजते स बलवान् स्थूलेषु कः प्रत्ययः॥
अतिक्रान्तमात्मनोऽपि शीतलीभवति। तृप्तोऽपि क्षमते। गुरुम् भजति
प्रत्यक्षयोर्मिलनं॥ ~~अथ~~ आतपापाये | मनोऽभिलाष
अतिमात्रमयं देशः मनोरथः प्रतिभाति तत्र मे |
मनोनयनानन्दकारी
निर्विलोकनदर्शी
स वैकेतद् वनात्तत्र्यम् अनिराद् चातुर्यम्

कितना लालित्यपूर्ण वर्णन है - कितना सुन्दर निरीक्षण है - उसकी सूक्ष्मता अन्वेषण पर चित्त संलग्न में है॥ हर्षं विषाद अनुरूप भूमिका।

कर्णसुखानि वाक्यानि। श्रुतिमधुराणि वाक्यानि॥
यदन्नः पुरुषो भवति तदन्नास्तस्य देवताः॥ (अयोध्या. १०३ सर्ग ३० श्लोक)

सज्जन समागम। भारतीय जनता और शिक्षा आदि के लिए रामायण, महाभारत, तुलसीदास जी रामायण, पुराण आदि शुभ ग्रन्थ हैं॥ अहो ~~वचनं~~ वचनमाधुरी ~~रम्या~~ आत्मज भ्रमरीणाम् कर्णेषु वमति मधु स्रावम्॥

अयोध्या काण्ड का १०५ में बहुत उत्तम।

कुमारिकातरलमालागारे संगृहीताः ~~महा~~ महान्तम् आतंकं जनयन्ति।

अयोध्या ११२ सर्ग. श्लोक ~~१७~~ १८.

लक्ष्मीश्चन्द्रादपेयाद्वा हिमवान् वा हिमं त्यजेत्। अतीयात् सागरो वेलां न प्रतिज्ञामहं पितुः॥

कृतज्ञं लघु गुरुं पठत - वाल्मीकि रामायण (अयोध्या ११२—१८) जटलीका गुम्फन चित्ते कः प्रभावः कः उत्साहः समुत्पन्नः॥
अयोध्याकाण्ड ११४ में उपमाओं का कोश। आधुनिक उपन्यास।

शिरसा धारय पादुके राजा ... विरामः
दशसंवत्सर मुनि आश्रमों में रहे। अयोध्याकाण्ड ... वाक् बाधते॥